

कोड : SG- 021

प्रोफेशनल एक्जामिनेशन बोर्ड, भोपाल (म.प्र.)

MP-वर्ग-1,2

माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2018

संस्कृत

जय हो!

सर्वज्ञभूषण

प्रोफेशनल एक्जामिनेशन बोर्ड, भोपाल (म.प्र.)

MP-वर्ग-1,2

माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2018

संस्कृत

जय हो!

लेखक

सर्वज्ञभूषण

प्रकाशक

संस्कृतगङ्गा

59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज

मो. 8004545096, 7800138404

3. संस्कृत के प्रतिनिधि रूपकों का परिचय

महाकवि भास का परिचय

- **कवि का नाम-** भास (प्रामाणिक जीवनपरिचय अज्ञात)
- **उपाधि-** धावक
- **गोत्र-** अगस्त्य गोत्र की हैमोदक शाखा में 'भाष' गोत्र है।
- **जन्म समय-** 100ई0पू0- 200ई0 के मध्य
- **उपासक-** वैष्णवधर्म
- **रीति-** वैदर्भी
- **गुण-** प्रसाद,माधुर्य एवं ओज तीनों का प्रयोग
- **रस-** मुख्यतया शृङ्गार एवं वीररस का प्रयोग।
- **शैली-** सरल भाषा का प्रयोग,अकृत्रिम शैली।
- **प्रिय अलंकार-** अनुप्रास,उपमा,स्वभावोक्ति,उत्प्रेक्षा, रूपक आदि
- **भास की कृतियाँ**
- त्रिरुवांकुर नगर निवासी **टी0गणपति शास्त्री** ने सन् - 1910-12 में **'भासनाटकचक्रम्'** नाम से भास के 13नाटकों का संग्रह **अनन्तशयन ग्रन्थमाला (त्रिवेन्द्रम)** से प्रकाशित किया।
- कथावस्तु के आधार पर भास के 13 नाटकों को चार भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है-
- **कथावस्तु के आधार पर भास के नाटकों का वर्गीकरण**

रामायणमूलक	महाभारतमूलक	उदयनकथामूलक	कल्पनामूलक
1.अभिषेकनाटक	3.मध्यमव्यायोग	10.प्रतिज्ञायौगन्धरायण	12.अविमारक
2.प्रतिमानाटक	4.दूतवाक्यम्	11.स्वप्नवासवदत्तम्	13.दरिद्रचारुदत्त
	5.कर्णभार		
	6.दूतघटोत्कच		
	7.पञ्चरात्रम्		
	8.ऊरुभंग		
	9.बालचरित		

भास के रूपकों का संक्षिप्त-परिचय

1. **अभिषेकनाटक-** यह **छः अङ्कों** का नाटक है। इसमें किष्किन्धाकाण्ड से लेकर लङ्काकाण्ड तक की सम्पूर्ण कथा संक्षेप में दी गयी है। अंत में रावण वध के पश्चात् राम के राज्याभिषेक का वर्णन है।

2. **प्रतिमानाटक-** इस नाटक में **सात अङ्क** हैं। इसमें भी राम के जीवन का वर्णन है।

3. **मध्यमव्यायोग-** यह **एक अङ्क** का व्यायोग नामक रूपक है। इसमें मध्यम पाण्डव भीम के द्वारा घटोत्कच के हाथ से एक ब्राह्मण पुत्र को बचाने का वर्णन है। भीम अपने पुत्र घटोत्कच को देखकर आनन्दित होते हैं और हिडिम्बा से उनका पुनर्मिलन होता है।

4- **दूतवाक्यम्-** यह **एकाङ्की** रूपक है। इसमें कृष्ण के दूत बनकर पाण्डवों का सन्धि प्रस्ताव लेकर दुर्योधन के पास जाने का वर्णन है।

5. **कर्णभार-** यह भी **एकाङ्की** है। इसमें कर्ण का,ब्राह्मण वेशधारी इन्द्र को कवच और कुण्डल दान में देने का वर्णन है।

6. **दूतघटोत्कच-** यह **एकाङ्की** नाटक है। अभिमन्यु की मृत्यु के बाद श्रीकृष्ण का घटोत्कच को दूत बनाकर धृतराष्ट्र के पास भेजना और दुर्योधन द्वारा उसका अपमान।

7. **पञ्चरात्र-** इस रूपक में **तीन अङ्क** हैं। यज्ञ की समाप्ति पर द्रोण ने दुर्योधन से दक्षिणा माँगी की पाण्डवों को आधा राज्य दे दो। दुर्योधन शर्त लगाता है कि यदि पाँच रात के अन्दर पाण्डव मिल जाते हैं तो दे दूँगा। द्रोण के प्रयास से पाण्डव मिलते हैं और आधा राज्य प्राप्त करते हैं।

8. **ऊरुभङ्ग-** यह **एकाङ्की** नाटक है। द्रौपदी के अपमान के प्रतीकार स्वरूप भीम द्वारा दुर्योधन की जंघा को तोड़ करके उसको मारने का वर्णन है।

9. **बालचरित-** इस नाटक में **पाँच अङ्क** हैं। इसमें श्रीकृष्ण के जन्म से लेकर कंसवध तक की कथा वर्णित है।

10. **चारुदत्त-** इसमें **चार अङ्क** हैं। इसमें निर्धन ब्राह्मण चारुदत्त और वसन्तसेना नाम की वेश्या के प्रणय का वर्णन है। इसमें भरतवाक्य नहीं है और कथा अधूरी है।

11. **अविमारक-** इस नाटक में **छः अङ्क** हैं। इसमें राजकुमार अविमारक का राजा कुन्तिभोज की पुत्री कुरङ्गी के साथ प्रणय-विवाह का वर्णन है।

12. **प्रतिज्ञायौगन्धरायण-** इस नाटक में **चार अङ्क** हैं। उदयन के वासवदत्ता से प्रेम और विवाह का वर्णन है। यौगन्धरायण द्वारा उदयन को प्रद्योत के यहाँ से छुड़ाने और उसकी नीतिमत्ता का वर्णन है।

13. स्वप्नवासवदत्तम्- इसमें **छः अङ्क** हैं। यौगन्धरायण का वासवदत्ता के मरने के प्रवाद को फैलाकर उदयन का पद्मावती से विवाह कराना तथा उदयन के अपहृत राज्य को पुनः प्राप्त कराने का वर्णन है।

स्वप्नवासवदत्तम् का परिचय

- **लेखक-** महाकवि भास
- **काव्यविधा-** नाटक
- **विभाजन-** 6 अङ्कों में
- **उपजीव्य-** ऐतिहासिक (गुणाढ्यकृत बृहत्कथा)
- **श्लोक संख्या-** 57

अङ्क	श्लोक संख्या	अङ्क	श्लोक संख्या
प्रथम	16	द्वितीय	00
तृतीय	00	चतुर्थ	09
पञ्चम	13	षष्ठ	19
		योग-	**57**

- **नायक-** उदयन
- **नायिका-** वासवदत्ता
- **विदूषक-** वसन्तक
- **कञ्चुकी-** वादरायण (उदयन का), रभ्य (महासेन प्रद्योत का)
- **प्रतिनायक-** आरुणि
- **प्रधान/अङ्गी रस-** शृङ्गार रस
- **अन्य रस/गौण रस** वीर, करुण एवं अद्भुत रस
- **नायक कोटि-** धीरललित (दक्षिण नायक)
- **अलङ्कार-** उपमा के साथ-साथ रूपक और उत्प्रेक्षा।
- **गुण-** प्रसाद, माधुर्य और ओज का समन्वय।
- **रीति-** वैदर्भी
- **छन्द-** सर्वाधिक प्रयुक्त छन्दों में अनुष्टुप् (22) और वसन्ततिलका (11) मुख्य हैं।

स्वप्नवासवदत्तम् का संक्षिप्त कथानक

'स्वप्नवासवदत्तम्' उदयन और वासवदत्ता की प्रेम कहानी का उत्तरार्द्ध भाग है। पूर्वार्द्ध की घटना 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' नामक रूपक में वर्णित है। अतः पूर्व की घटना की जानकारी भी आवश्यक हो जाती है। पूर्व के घटना का सारांश इस प्रकार है- ''वत्सराज उदयन, प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता का अपहरण कर उससे प्रेम विवाह कर लेता है। उदयन, वासवदत्ता की सुन्दरता पर इस प्रकार आसक्त हो जाता है कि वह राज्य से सम्बन्धित प्रमुख कार्यों से भी विमुख हो जाता है। इसी का लाभ उठाकर आरुणि नामक उदयन का शत्रु उसके अधिकांश भूभाग को अधिकृत (कब्जा) कर लेता है। इसी भूभाग को प्राप्त करने के लिये यौगन्धरायण नामक उदयन का मन्त्री लावाणक ग्राम में अग्निकाण्ड का षड्यन्त्र रचता है।'' अब इसके बाद की घटना स्वप्नवासवदत्तम् में वर्णित है।

प्रथम अङ्क-

- मगध के राजा 'दर्शक' एवं उनकी बहन पद्मावती के सेवकों द्वारा तपोवन के लोगों को जबरदस्ती हटाया जाता है।
- उज्जयिनी की स्त्रियों के वेश में वासवदत्ता तथा मन्त्री यौगन्धरायण वहीं पर जाते हैं।
- कञ्चुकी, राजपुरुषों को रोकता है कि वे अनायास ही वन के निवासियों को परेशान न करें।
- कञ्चुकी द्वारा यौगन्धरायण को पता चलता है कि राजकुमारी पद्मावती, वन के आश्रम में निवास कर रही अपनी माता से मिलने आ रही हैं। इसीलिए वन प्रदेश खाली कराया जा रहा है।
- यौगन्धरायण मन में सोचता है कि यह वही राजकुमारी पद्मावती हैं जिनके बारे में 'पुष्पक और भद्र' ज्योतिषियों ने बताया था कि ''वह उदयन की महारानी बनेगी।''
- राजकुमारी पद्मावती आश्रम में प्रवेश करती हैं और तापसी को प्रणाम करती हैं।
- राजा प्रद्योत का एक सन्देशवाहक आता है।
- पद्मावती आश्रम के तपस्वियों को मनोनुकूल वस्तुओं को माँगने के लिए आमन्त्रित करती हैं।
- यौगन्धरायण, वासवदत्ता को अपनी बहन बताकर उसे पद्मावती के पास धरोहर रूप में रख देते हैं।
- वासवदत्ता सोचती है, मैं अभागिनी हूँ किन्तु आर्य यौगन्धरायण बिना किसी प्रयोजन के मुझे नहीं छोड़ेंगे।
- आश्रम में एक ब्रह्मचारी का प्रवेश होता है और यौगन्धरायण उससे उसका पता तथा उद्देश्य पूँछते हैं।
- ब्रह्मचारी बताता है कि वह वत्सदेश के लावाणक ग्राम में वेद का अध्ययन करता है लेकिन वत्सराज उदयन के शिकार खेलने के लिए जाने पर गाँव में आग लग जाने से उनकी पत्नी वासवदत्ता जलकर मर गयीं। अतः महाराज उदयन अत्यन्त शोकग्रस्त हैं।
- ब्रह्मचारी कहता है कि रुमण्वान् नामक मन्त्री शोक संतप्त होते हुए भी उदयन की दिन रात सेवा करता है।
- इसके बाद ब्रह्मचारी चला जाता है और यौगन्धरायण भी राजकुमारी पद्मावती के आदेश से चला जाता है।

।।प्रथम अङ्क समाप्त।।

द्वितीय अङ्क

- प्रवेशक के माध्यम से पता चलता है कि राजकुमारी पद्मावती

गेंद खेल रही हैं।

- वासवदत्ता द्वारा पद्मावती को 'महासेन की वधू' कहने पर दासी बताती है कि राजकुमारी, वत्सराज उदयन से विवाह करना चाहती हैं।
- धाय द्वारा सूचना मिलती है कि पद्मावती का विवाह वत्सराज उदयन के साथ सुनिश्चित हो गया है।

।।द्वितीय अङ्क समाप्त।।

तृतीय अङ्क

- राजप्रासाद का अन्तःपुर विवाहोल्लास से व्याप्त है तथा वासवदत्ता अत्यन्त चिन्ताग्रस्त रहती हैं।
- दासी, महारानी के आज्ञानुसार, उच्चकुल में उत्पन्न वासवदत्ता से वरमाला गूँथने के लिए कहती है।
- वासवदत्ता के पूँछने पर दासी कहती है कि दूल्हा धनुष-बाण से रहित साक्षात् कामदेव है।
- वासवदत्ता 'सपत्नीमर्दन' नामक ओषधि माले में नहीं गूँथती हैं।

।।तृतीय अङ्क समाप्त।।

चतुर्थ अङ्क

- विदूषक विवाह के शुभ-अवसर पर अत्यन्त खुश है।
- पद्मावती और वासवदत्ता प्रमदवन में जाकर आपस में वार्तालाप करतीं हैं।
- उदयन और विदूषक भी प्रमदवन में जाते हैं, उदयन कहते हैं कि ''जब उज्जयिनी में वासवदत्ता को देखा था तब कामदेव ने एक साथ पाँचों बाणों का प्रहार कर दिया था, अब पद्मावती को देखने पर कामदेव के पास छठा बाण कहाँ से आ गया।''
- पद्मावती और वासवदत्ता माधवीलताकुञ्ज में जाती हैं क्योंकि वे दोनो महाराज उदयन से छिपना चाहती हैं।
- विदूषक के हठपूर्वक पूँछने पर उदयन बताता है कि वासवदत्ता उसको अधिक प्यारी हैं।
- वासवदत्ता को याद करके राजा के नेत्र अश्रुपूरित हो जाते हैं लेकिन पद्मावती द्वारा पूँछने पर वे काशपुष्प का पराग (कण) पड़ने का बहाना करते हैं।
- विदूषक, राजा को लेकर मगधराजदर्शक' के पास चला जाता है।

।।चतुर्थ अङ्क समाप्त।।

पञ्चम अङ्क

- 'प्रवेशक' द्वारा पद्मावती के सिर में दर्द होने की सूचना मिलती है।
- उदयन, पद्मावती को देखने के लिए समुद्रगृह नामक भवन में जाते हैं किन्तु पद्मावती बिस्तर पर नहीं मिलती।
- पद्मावती का इन्तजार करते हुए उदयन उसी बिस्तर पर सो जाते हैं।
- पद्मावती के इच्छानुसार आवन्तिका वेशधारिणी वासवदत्ता भी समुद्रगृह में जाती हैं।
- वासवदत्ता, बिस्तर पर सोये हुए उदयन को पद्मावती समझकर बगल में लेट जाती है।
- उदयन स्वप्न में वासवदत्ता को बुलाता है तथा वासवदत्ता उदयन द्वारा देखे जाने के डर से उठकर भागती है जिससे उदयन जाग जाता है।
- उदयन विदूषक को बताता है कि उसने वासवदत्ता को साक्षात् देखा था किन्तु विदूषक द्वारा इसे भ्रान्ति बताकर इसका निराकरण किया जाता है। इसी घटना के कारण इस नाटक का नाम स्वप्नवासवदत्त पड़ा।
- इसके बाद सूचना मिलने पर उदयन अपने सेनापति रुमण्वान् के साथ 'आरुणि' से युद्ध के लिए निकल जाता है।

।।पञ्चम अङ्क समाप्त।।

षष्ठ अङ्क

- उदयन को सूचना देने के लिए कञ्चुकी, प्रतीहारी से कहता है कि ''उज्जयिनी के राजा महासेन प्रद्योत के कञ्चुकी 'रभ्य' तथा 'वसुन्धरा' नाम की धाय (जो माननीया अङ्गारवती द्वारा भेजी गयी है) पर उपस्थित हैं और आपसे मिलना चाहते हैं।
- प्रतीहारी बताती है कि यह महाराज उदयन से मिलने का उचित समय नहीं है क्योंकि **घोषवती वीणा** की आवाज सुनकर महाराज अत्यन्त दुःखित हैं।
- महाराज उदयन वीणावादक से घोषवती वीणा के बारे में पूँछते हैं तो वीणावादक घोषवती वीणा को नर्मदा नदी किनारे कुशों की झाड़ी मे पाया हुआ बताता है।
- सूर्यामुख भवन से उतरते हुए महाराज उदयन से प्रतीहारी सूचना देती है और विष्कम्भक समाप्त होता है।
- घोषवती वीणा को पाकर उदयन अत्यन्त क्षुब्ध हो जाते हैं क्योंकि वीणा वासवदत्ता का स्मरण कराती है।
- राजा की आज्ञा से विदूषक घोषवती वीणा की मरम्मत करवाने जाता है।
- प्रतीहारी से सूचना पाकर राजा शङ्का करता है कि कहीं महासेन प्रद्योत मेरे पद्मावती के विवाह से क्रोधित तो नहीं हैं क्योंकि मैंने उनकी पुत्री वासवदत्ता का अपहरण तो कर लिया था किन्तु उसकी रक्षा न कर सका।
- महाराज प्रद्योत का कञ्चुकी रभ्य कहता है कि उदयन द्वारा पुनः जीते गये वत्स राज्य में आकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ।
- रभ्य, उदयन को अभिवादन करके उज्जयिनी का समाचार सुनाता है।

- महारानी अङ्गारवती का सन्देश बताते हुए धात्री कहती है कि ''आपने पाणिग्रहण के बिना ही वासवदत्ता से विवाह सम्पन्न कर लिया। इसलिए हम दोनों (प्रद्योत+अङ्गारवती) ने तुम्हारा और वासवदत्ता का चित्र, चित्रपट पर बनवाकर उसी से विधिपूर्वक विवाह भी करा दिया और यह चित्रफलक तुम्हारे पास भेजा जा रहा है।''
- यह सुनकर उदयन कहते हैं कि अपराधी होने पर भी महाराज और माननीया का प्रेम मेरे प्रति कम नहीं हुआ है।
- पद्मावती, चित्रफलक को देखकर कहती है यह आर्या का चित्र तो आवन्तिका से मिलती है।
- उदयन, आवन्तिका को सामने बुलाना चाहते हैं कि पद्मावती बताती है कि वह न्यास रूप में रखी गयी किसी ब्राह्मण की बहन है जो पर पुरुष के सामने नहीं आती।
- प्रतीहारी सूचना देती है, कि ''उज्जयिनी के ब्राह्मण बाहर उपस्थित हैं जिनकी बहन महारानी पद्मावती के पास धरोहर रूप में रखी गयी है।''
- उदयन आवाज से पहचान जाते हैं कि यह ब्राह्मण उनका मन्त्री यौगन्धरायण है।
- धात्री,आवन्तिका वेशधारिणी वासवदत्ता को पहचान लेती है।
- यौगन्धरायण, वासवदत्ता को छिपाने जैसे कार्य के लिए महाराज उदयन से क्षमा माँगते हैं।
- उदयन द्वारा 'कारण' पूँछने पर यौगन्धरायण बताता है कि ऐसा यह सब भविष्यवाणी के अनुसार हुआ है।
- यौगन्धरायण, वासवदत्ता का कुशल समाचार बताने के लिए रैभ्य और वसुन्धरा को उसी समय उज्जयिनी वापस भेजना चाहता है किन्तु राजा, पद्मावती और वासवदत्ता के साथ उज्जयिनी जाने का निश्चय करते हैं।

भरतवाक्य के साथ नाटक समाप्त होता है।

स्वप्नवासवदत्तम् का मङ्गलाचरण

उदयनवेन्दुसवर्णावासवदत्ताबलौ बलस्य त्वाम्।
पद्मावतीर्णपूर्णौ वसन्तकम्रौ भुजौ पाताम्॥

अर्थ- उदय होते हुए नये चन्द्रमा के सदृश वर्ण वाली,मद्यपान से बलरहित अथवा अबला (अपनी पत्नी) को मद्य देने वाली,लक्ष्मी के प्रकट होने से सम्पन्न वसन्त जैसी सुन्दर,बलराम की भुजाएँ आपकी रक्षा करें।

- प्रस्तुत मंगलाचरण में बलराम की स्तुति की गयी है।
- उक्त पद्य में **आशीर्वादात्मक** तथा **अष्टपदा** नान्दी है।
- प्रस्तुत मंगलाचरण में मुद्रालंकार तथा श्लेष अलंकार का प्रयोग है।श्लेष के माध्यम से भावी सूचना मिलने के कारण **पत्रावली नान्दी** है।
- प्रस्तुत मंगलाचरण में **आर्या छंद** है।
- इस पद्य में पदों के विन्यास की चतुरता से नाटक के मुख्य पात्र उदयन,वासदत्ता,पद्मावती और वसन्तक की सूचना दी गयी है।

नाटक का भरतवाक्य

इमां सागरपर्यन्तां हिमवद्विन्ध्यकुण्डलाम्।
महीमेकातपत्राङ्कां राजसिंहः प्रशास्तु नः॥ (स्वप्र.6/19)।।

भावार्थ- हमारे राजसिंह (राजाओं में प्रधान) अर्थात् महाराज उदयन, समुद्ररूप सीमावाली,हिमालय और विन्ध्यपर्वत रूप दो कुण्डलों से युक्त और एक छत्र रूप चिह्न से संयुक्त इस पृथ्वी का पालन करें।

पात्रों का सामान्य परिचय - पुरुष पात्र

- **उदयन-** वत्सदेश का राजा नायक
- **यौगन्धरायण-** उदयन का मन्त्री
- **वसन्तक-** विदूषक,उदयन का मित्र (नर्मसचिव)
- **ब्रह्मचारी-** लावाणक ग्राम का छात्र
- **कञ्चुकी-** राजकुल का सेवक
- **संभषक,भट-** पद्मावती का सेवक
- **रुमण्वान्-** उदयन के अमात्य तथा सेनापति

स्त्री पात्र-

- **वासवदत्ता-** नायिका, उदयन की प्रथम पत्नी, (मगध देश में यही आवन्तिका रूप में निवास करती है।)
- **पद्मावती-** मगधराज दर्शक की बहन, उदयन की द्वितीय पत्नी
- **तापसी-** मगध के निकट तपोवन में रहने वाली एक स्त्री
- **मधुकरिका तथा पद्मिनिका-** पद्मावती की सखियाँ एवं परिचारिकाएँ
- **धात्री-** पद्मावती की उपमाता
- **विजया-** वत्सराज की प्रतीहारी
- **धात्री-** वासवदत्ता की उपमाता
- **महादेवी-** पद्मावती की माता
- **अङ्गारवती-** प्रद्योत की रानी, वासवदत्ता की माता
- **वसुन्धरा-** वासवदत्ता की धात्री
- **वैदेही-** उदयन की माता

स्वप्नवासवदत्तम् का नामकरण

- इस नाटक का नामकरण ग्रन्थ के एक घटना विशेष पर आधारित है।

- पञ्चम अङ्क में उदयन शिरोवेदना से पीड़ित पद्मावती को देखने जाता है तथा पद्मावती को न देखकर वह उसी की शय्या पर सो जाता है।
- वासवदत्ता भी पद्मावती को देखना चाहती है और बिस्तर पर सोयी हुई जानकर वहीं लेट जाती है।
- उदयन स्वप्न में कुछ बड़बड़ाता है तो वासवदत्ता वहाँ से जाने लगती है और उदयन भी जागकर उसके पीछे दौड़ता है।
- **उदयन इसी 5वें अङ्क में स्वप्न में वासवदत्ता को देखता है** इसलिए यह अङ्क नाटक का सबसे महत्त्वपूर्ण अंक है।
- इसी महत्त्वपूर्ण घटना को आधार मानकर महाकवि भास ने इसका नामकरण **'स्वप्नवासवदत्तम्'** किया है जो कि सर्वथा उचित है।

  'स्वप्ने वासवदत्ता इति स्वप्नवासवदत्ता'- सप्तमी तत्पुरुष समास ग्रन्थवाची होने के कारण नपुंसकलिङ्ग एकवचन में 'स्वप्नवासवदत्तम्' हुआ।
- **महत्वपूर्ण तथ्य-**
- अनेक विद्वानों के अनुसार भास 24 नाटकों के रचयिता हैं किन्तु वर्तमान में प्रामाणिक रूप से 13 रूपक ही उपलब्ध हैं।
- भास ने 'भूमिका' या प्रस्तावना के स्थान पर 'स्थापना' शब्द का प्रयोग किया है।
- भास ने अपने किसी भी रूपक में 'ग्रन्थ' और 'ग्रन्थकार' का नाम नहीं लिया है।
- भास ने अपने रूपकों में मुद्रालंकार का प्रयोग किया है।
- भास के 13 नाटकों को प्रकाशित कराने का श्रेय श्री टी. गणपतिशास्त्री को जाता है।
- स्वप्नवासवदत्तम् के द्वितीय एवं चतुर्थ अङ्क में 'प्रवेशक' तथा पञ्चम एवं षष्ठ अङ्क में 'विष्कम्भक' का प्रयोग किया गया है।
- वासवदत्ता की वीणा का नाम **'घोषवती'** है।
- उदयन और पद्मावती के विवाह की भविष्यवाणी 'भद्र' और 'पुष्पक' ने की थी।
- पद्मावती के घर में वासवदत्ता ही 'आवन्तिका' के रुप में रहती है।
- छठें अङ्क में मिश्रविष्कम्भक प्रयुक्त है।
- पद्मावती को शिरोवेदना पञ्चम अङ्क में होती है।
- वत्स देश की राजधानी कौशाम्बी है।
- 'महासेन', उज्जयिनी के राजा प्रद्योत का विशेषण है।
- पञ्चम अङ्क को **'स्वप्न अङ्क'** भी कहा जाता है।
- लावाणक ग्राम की घटना प्रथम अङ्क में वर्णित है।
- दूसरा और तीसरा अङ्क केवल गद्य के माध्यम से लिखा गया है।
- उदयन के भवन का नाम 'सूर्यामुख' तथा पद्मावती के आवास का नाम 'समुद्रगृह' है।

प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

1. उदयन

- उदयन इस **नाटक का नायक** है तथा **वत्सदेश का राजा** है।
- वह **धीरललित (दक्षिण)** कोटि का नायक है।
- वह दयालु, उदार तथा वीणा बजानें में निपुण है।
- उदयन, दयार्द्रचित्त तथा अपने से बड़ों का आदर करने वाला व्यक्ति है।
- उसकी धैर्यता, विद्वता, कुलीनता, आयु तथा रूप को देखकर ही राजा दर्शक अपनी बहन **पद्मावती का विवाह** करते हैं।
- उदयन, वासवदत्ता से बहुत ही प्रेम करते हैं इसीलिए राज्य की सुध-बुध खो बैठते हैं।
- सुन्दरता में उदयन की तुलना विना धनुष बाण के कामदेव से की गयी है।

2. वासवदत्ता

- वासवदत्ता, उज्जयिनी नरेश **प्रद्योत की पुत्री** तथा 'स्वप्नवासवदत्तम्' **नाटक की नायिका** है।
- वह दयालु स्वभाव की नारी तथा **अवन्तिराज्य की राजकुमारी** भी है।
- वासवदत्ता बुद्धिमती, तथा पतिपरायणा स्त्री है।
- वह उदयन की प्रेयसी, शिष्या तथा पत्नी भी है।
- अपने पति के हित के लिए वह यौगन्धरायण द्वारा स्वयं को मृत घोषित करवा लेती है।
- वासवदत्ता अपनी आँखों के समाने ही अपने पति का विवाह पद्मावती से करवा देती है।
- वासवदत्ता का चरित्र त्याग से भरा हुआ है।

3. पद्मावती

- पद्मावती, राजा **उदयन की द्वितीय पत्नी** तथा नाटक की प्रमुख पात्र हैं।
- वह मगध के राजा **दर्शक की बहन** है।
- पद्मावती अत्यन्त सुन्दरी तथा आकर्षण की केन्द्रबिन्दु है।
- वह धर्मपरायणा स्त्री है, इसीलिए वासवदत्ता को न्यासरूप में स्वीकार करती है।
- वह गुरुजनों के प्रति आदरभाव रखती है।
- पद्मावती, उदयन के रूप और गुणों से प्रभावित रहती है तथा भविष्यवाणी के अनुसार उसी से विवाह भी करती है।
- अतः एक आदर्श नारी का सम्पूर्ण गुण पद्मावती में है।

4. यौगन्धरायण

- यौगन्धरायण उदयन का प्रधान अमात्य है तथा इस नाटक में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला पात्र है।
- वह वर्ण से ब्राह्मण है तथा स्वामिभक्ति उसके अन्दर कूट-कूटकर भरी हुयी है।
- वह सभी परिस्थितियों में तथा सब प्रकार के उपायों से अपने स्वामी एवं राज्य का संरक्षण करता है।
- यौगन्धरायण, उदयन के पूर्वमन्त्री 'युगन्धर' का पुत्र है।
- यौगन्धरायण की योजना को सभी उच्चस्तरीय अधिकारी तथा राजा एवं वासवदत्ता भी मानते हैं।
- वासवदत्ता को अपनी बहन बताकर वह अपने योजना को सफल बनाता है।
- यौगन्धरायण के सम्पूर्ण चरित्र को भास ने एक वाक्य में लिखा है- **''यौगन्धरायणो भवान् ननु''**

5. वसन्तक

- वसन्तक इस **नाटक का विदूषक** और राजा उदयन का परम मित्र है।
- वह जाति से ब्राह्मण तथा हास्य का पात्र है।
- प्रत्येक परिस्थिति में वसन्तक, उदयन के साथ ही रहता है।
- वसन्तक खाने-पीने से अत्यन्त खुश रहता है, इसीलिए वासवदत्ता की बड़ाई भी करता है।
- राजा का अत्यन्त प्रिय होने के कारण ही वह, उदयन की अतिप्रिय रानी के बारे में पूछ पाता है।
- वसन्तक बीच-बीच में हँसी मजाक भी करता है।
- सरल स्वभाव होने के साथ-साथ वसन्तक मूर्ख भी है।

6. रुमण्वान्

- रुमण्वान् , उदयन का **प्रधान सेनापति** है।
- वह वीर, धीर एवं गम्भीर भी है।
- वासवदत्ता और यौगन्धरायण का सम्पूर्ण वृत्तान्त जानते हुए भी राजा तक को भनक नहीं लगने देता कि वासवदत्ता जिन्दा हैं।
- उसके गुणों से यौगन्धरायण भी प्रेम करते है।
- रुमण्वान् के सेनापति रहने से उदयन को आरुणि से अपना राज्य मिलता है।

स्वप्नवासवदत्तम् की अङ्कवार प्रमुख घटनाएं

प्रथम अङ्क-

- वेश बदलकर वासवदत्ता और यौगन्धरायण का मगध राज्य में प्रवेश।
- वासवदत्ता को न्यास रूप में पद्मावती के पास छोड़ना।
- लावाणक ग्राम से ब्रह्मचारी का आगमन तथा वासवदत्ता का अग्नि में जलकर मरने की सूचना।

द्वितीय अङ्क-

- वत्सराज उदयन से पद्मावती का विवाह सुनिश्चित होना।

तृतीय अङ्क-

- मगध राजप्रासाद में विवाह का हर्षोल्लास।
- वासवदत्ता द्वारा वरमाला का गूँथना।

चतुर्थ अङ्क-

- उदयन और पद्मावती का विवाह होना।
- विवाहोपरान्त उदयन और विदूषक का प्रमदवन भ्रमण।

पञ्चम अङ्क-

- पद्मावती को शिरोवेदना।
- उदयन द्वारा स्वप्न में वासवदत्ता को देखना
- आरुणि से उदयन का युद्ध।

षष्ठ अङ्क-

- घोषवती वीणा की प्राप्ति।
- रभ्य नामक प्रद्योत के कञ्चुकी का आगमन।
- चित्रफलक से वासवदत्ता की पहचान।
- यौगन्धरायण द्वारा समस्त घटनाओं को बताना

स्वप्नवासवदत्तम्- बिन्दुवार अध्ययन

- 'स्वप्नवासवदत्तम्' के लेखक हैं - **भास**
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक में कुल कितने अङ्क हैं? - **छः**
- स्वप्नवासवदत्ता नाटक का नायक उदयन किस कोटि का है - **धीरललित**
- उदयनः कस्य नाटकस्य नायकः? - **स्वप्नवासवदत्तम्**
- संस्कृते अतिप्राचीनरूपकस्य नाम किम्? - **स्वप्नवासवदत्तम्**
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' इति नाटकस्य आकरग्रन्थः - **बृहत्कथा**
- लावाणकग्राम की घटना कहाँ वर्णित है? - **स्वप्नवासवदत्तम् में**
- यौगन्धरायण किसका प्रमुख पात्र है? - **स्वप्नवासवदत्तम्**
- रुमण्वान् पात्र का वर्णन है - **स्वप्नवासवदत्तम् में**
- स्वप्नवासवदत्ते वर्णितपात्रेषु उदयनस्य सेनापतिः कः आसीत्? - **रुमण्वान्**
- उदयनस्य चरितं कस्मिन् ग्रन्थे अस्ति - **स्वप्नवासवदत्ते**
- वसन्तक (विदूषक)–युक्तरचना अस्ति - **स्वप्नवासवदत्तम्**
- स्वप्नवासवदत्त-नाटके विदूषकस्य नाम किम्? - **वसन्तकः**
- 'घोषवती वीणा' का सम्बन्ध किस नाटक से है? -**स्वप्नवासवदत्तम्**
- उदयनस्य वीणायाः नाम किम्? - **घोषवती**
- स्वप्नवासवदत्तम् का 'स्वप्न अङ्क' कौन-सा है? - **पञ्चमः**
- वासवदत्ता कस्य राज्यस्य राजकन्या आसीत्? - **अवन्तिकायाः**
- 'चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः' यह सूक्ति है - **स्वप्नवासवदत्तम्**
- ''स्वप्ने नाटके भर्तृस्नेहात् सा हि दग्धाऽप्यदग्धा'' कस्य वचनमिदम्?- **ब्रह्मचारिणः**
- 'दुःखं न्यासस्य रक्षणम्' एषा उक्तिः कस्य नाटकस्य? - **स्वप्नवासवदत्तस्य**

महाकवि कालिदास का परिचय

- **पत्नी** – विद्योत्तमा
- **श्वसुर** – शारदानन्द
- **मित्र** – लङ्का के राजा कुमारदास
- **समय** – ईसापूर्व प्रथम शताब्दी
- **जन्मस्थान** – उज्जयिनी (काश्मीरी/बंगाली)
- **आश्रयदाता** – चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
- **जाति/गोत्र** – ब्राह्मण
- **रचनायें कालक्रम की दृष्टि से**– 1. ऋतुसंहार (गीतिकाव्य), 2. कुमारसम्भवम् (महाकाव्य), 3. मालविकाग्निमित्रम् (नाटक), 4. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक), 5. मेघदूतम् (खण्डकाव्य), 6. रघुवंशम् (महाकाव्य), 7. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (नाटक)
- **उपासक** – शिव के
- **प्रिय छन्द** – उपजाति/अनुष्टुप्
- **प्रिय अलङ्कार** – उपमा
- **कालिदास की रीति एवं गुण** – वैदर्भी रीति एवं प्रसादगुण
- **कालिदास का प्रिय रस** – शृङ्गार रस
- **कालिदास की अन्य कृतियाँ**– (i) कालीस्तोत्र, (ii) गङ्गाष्टक, (iii) ज्योतिर्विदाभरण, (iv) राक्षसकाव्य, (v)श्रुतबोध

कालिदासीय जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

- काली देवी की उपासना से विद्या की प्राप्ति।
- विद्याप्राप्ति के बाद कालिदास का कथन–
  'अनावृतकपाटं द्वारं देहि' (दरवाजा खोलो)
- इसके उत्तर में पत्नी विद्योत्तमा का कथन–
  'अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः' (लगता है कोई विद्वान् है)
- **'अस्ति' से कुमारसम्भवम्** – "अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा...."
- **'कश्चित्' से मेघदूतम्** – "कश्चित् कान्ता विरहगुरुणा...."
- **'वाग्' से रघुवंशम्** – "वागर्थाविव सम्पृक्तौ....."
- **विक्रमादित्य की सभा में 9 रत्न** थे, जिसमें से एक कालिदास भी थे–

धन्वन्तरि-क्षपणकामरसिंह -शङ्कु-
वेतालभट्ट-घटकर्पर-कालिदासाः।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां
रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य॥

(ज्योतिर्विदाभरण 22-10)

- एक किंवदन्ती के अनुसार धारा के राजा भोज के प्रधानकवि कालिदास थे।
- एक किंवदन्ती के अनुसार कालिदास का अन्तिम समय लंका के महाराज कुमारदास के यहाँ बीता, वहाँ धन के लोभ में एक वेश्या ने उनकी **हत्या करा दी**।
- कालिदास ने वेद, दर्शन, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, सङ्गीतशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, छन्दःशास्त्र, काव्यशास्त्र आदि का गम्भीर अध्ययन किया था।
- बाद में राजकवियों को 'कालिदास' कहने की परम्परा चल पड़ी। **राजशेखर** ने ऐसे तीन कालिदासों का उल्लेख किया है–
  एकोऽपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्।
  शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु॥
- **कालिदास की उपाधियाँ**–(i) दीपशिखा कालिदास (ii) रघुकार (iii) कविकुलगुरु (iv) कविताकामिनीविलास (v) उपमासम्राट्
- महाकवि कालिदास ने मालविकाग्निमित्र की प्रस्तावना में **"प्रथितयशसां भाससौमिल्ल....."** के द्वारा भास, सौमिल्ल आदि अपने पूर्ववर्ती कवियों को सादर स्मरण किया है।

कालिदास की प्रशस्तियाँ

1. निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
   प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते।
   – बाणभट्ट-हर्षचरित
2. साकूतमधुरकोमलविलासिनीकण्ठकूजितप्राये।
   शिक्षासमयेऽपि मुदे रतलीला-कालिदासोक्ती।।
   – गोवर्धनाचार्य-आर्यासप्तशती–35
3. कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः **– जयदेव-प्रसन्नराघवम्**
4. लिप्ता मधुद्रवेणासन् यस्य निर्विषया गिरः।
   तेनेदं वर्त्म वैदर्भं कालिदासेन शोधितम्।।
   – दण्डी-अवन्तिसुन्दरीकथा
5. अस्पृष्टदोषा नलिनीव दृष्टा, हारावलीव ग्रथिता गुणौघैः।
   प्रियाङ्कपालीव प्रकामहृद्या, न कालिदासादपरस्य वाणी।।
   – श्रीकृष्ण
6. ख्यातः कृतीसोऽपि च कालिदासः, शुद्धा सुधा स्वादुमती च यस्य।
   वाणीमिषाच्चन्द्रमरीचिगोत्रसिन्धोः परं पारमवाप कीर्तिः।।
   – सोड्ढल (उदयसुन्दरी कथा)
   अमृतेनेव संसिक्ताश्चन्दनेनैव चर्चिताः।
   चन्द्रांशुभिरिवोद्घृष्टाः कालिदासस्य सूक्तयः।।
   – जयन्त-न्यायमञ्जरी
7. एकोऽपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्।
   शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु।।
   –राजशेखर-सूक्तिमुक्तावली

8. वैदर्भी कविता स्वयं वृतवती श्रीकालिदासं वरम्। **–अज्ञात**
9. पुष्पेषु चम्पा नगरीषु काञ्ची, नदीषु गङ्गा नृवरेषु रामः।
नारीषु रम्भा पुरुषेषु विष्णुः, काव्येषु माघः कविकालिदासः।। **– घटखर्पर**
10. महिषं दधि सशर्करं पयः कालिदासकविता नवं वयः।
शारदेन्दुरबला च कोमला स्वर्गशेषमुपभुञ्जते जनः।। **– आचार्य उद्भट**
11. काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या 'शकुन्तला'।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः तत्र श्लोकचतुष्टयम्।। **– अज्ञात**
12. Wouldst thou the young year
blossoms and the fruits of its decline
And all by which the soul is charmed
enraptured, fearted, fed.
Wouldst thou the earth and heaven
itseff in one sole name combine?
I name the, O' Shakuntala
And all atonce is said. – **(Goethe)**

(संस्कृत-अनुवाद)

13. वासन्तं कुसुमं फलञ्च युगपद्, ग्रीष्मस्य सर्वं च यद्
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयोः
ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्।।
–(जर्मन कवि गेटे का अनुवाद) **वी. वी. मिराशी**
14. अस्मिन्निति विचित्रकविपरम्परावाहिनि-संसारे–
कालिदासप्रभृतयो द्वित्राः पञ्चषा वा महाकवय इति गण्यन्ते।
– आचार्य आनन्दवर्धन
15. वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते। **– अज्ञात**
16. उपमा कालिदासस्य **– उद्भट**
17. कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः यत्र याति शकुन्तला।। **– अज्ञात**
18. श्रीकालिदासकविवर्य-सरस्वतीयं
किं वर्णयाम्यतितरां रसवाहिनीति।
यत् कालिका भगवती शुचिभावयोगाद्
यस्यामहो मुहुरनुग्रहमादधाति।। **– विठोबा अण्णा**
19. पुरा कवीनां गणना-प्रसङ्गे
कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावा-
दनामिका सार्थवती बभूव।। **– मल्लिनाथ**
20. रसभार-भारोद्भिन्नां भारतीममरादृते।
श्रीमतः कालिदासस्य विज्ञातुं कः क्षमः पुमान् **– स्थिरदेव**
21. स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रितकालिदासभारविकीर्तिः।।
– एहोल शिलालेख
22. कालिदासगिरां सारं कालिदासः सरस्वती।
चतुर्मुखोऽथवा साक्षाद् विदुर्नान्ये तु मादृशाः।। **– मल्लिनाथ**
23. सुवशा कालिदासस्य मन्दाक्रान्ता प्रवल्गति।
– क्षेमेन्द्र (सुवृत्ततिलक)
24. भासयत्यपि भासादौ कविवर्गे जगत्त्रयम्।
के न यान्ति निबन्धारः कालिदासस्य दासताम्।। **–अज्ञात**
25. ``Kalidas may be considered as the brightest star in the firmament of indian artificial poetry" **– Prof. Lassen**
26. कवयः कालिदासाद्याः कवयो वयमप्यमी।
पर्वते परमाणौ च पदार्थत्वं प्रतिष्ठितम्।। **– अज्ञात**
27. वाल्मीकिमिव सभासं यशःशरीरेण सर्वदा सन्तम्।
रसवद्वचनविकासं नमत कविं कालिदासं तम्।। **– अज्ञात**
28. कविरचलः कविरभिनन्दश्च कालिदासश्च।
अन्ये कवयः कपयश्चापलमात्रं परं दधाति।। **– अज्ञात**
29. कवयः कवयः कवयोऽपि च कालिदासाद्याः।
दृषदो भवन्ति दृषदाश्चिन्तामणयोऽपि हा दृषदः।। **– अज्ञात**
30. मेघे माघे गतं वयः। **– मल्लिनाथ**
31. कालिदासादीनामिव यशः। **– मम्मट**
32. धन्वन्तरिक्षपणकाऽमरसिंहशंकु-बेतालभट्ट घटकर्परकालिदासाः।
– ज्योतिर्विदाभरण
33. महाकविकालिदासं वन्दे वाग्देवतागुरुम्।
यज्ज्ञाने विश्वमाभाति दर्पणे प्रतिबिम्बितम्।। **– हलायुध**
34. क इह रघुकारे न रमते। **– आलोचक**

मालविकाग्निमित्रम्

☆ **लेखक का नाम-** कालिदास
☆ **काव्य विधा-** नाटक
☆ **विभाजन-** 5 अङ्कों में
☆ **श्लोक संख्या-** 96 पद्य
☆ **उपजीव्य/कथानक-** ऐतिहासिक
☆ **नायक-** अग्निमित्र
☆ **नायिका-** मालविका
☆ **विदूषक-** गौतम
☆ **कञ्चुकी-** मौद्गल्य
☆ **प्रतिनायक-**
☆ **प्रधान/अङ्गी रस-** शृङ्गार
☆ **नायक कोटि-** धीरोदात्त
☆ **अलङ्कार-** उपमा, स्वभावोक्ति, रूपक, अर्थान्तरन्यास, उत्प्रेक्षा आदि।

☆ **गुण-** प्रसाद गुण
☆ **रीति-** वैदर्भी
☆ **मुख्य छन्द-** अनुष्टुप् , पथ्यावक्त्र, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा वंशस्थ, आदि

➢ यह कालिदास का प्रथम नाटक है।

अङ्क	श्लोक संख्या
1	22
2	14
3	23
4	17
5	20
कुल 5 अङ्क	96 श्लोक

मालविकाग्निमित्र की संक्षिप्त कथावस्तु

➢ 5 अङ्कों में मालविका और अग्निमित्र के प्रणय (प्रेम) और विवाह का वर्णन है।

➢ मालविका विदर्भराजपुत्र माधवसेन की बहन है।

➢ मालविका राजा अग्निमित्र की महारानी धारिणी की दासी के रूप में उसके पास रहती है और राजा उस पर अनुरक्त हो जाता है।

➢ तृतीय अङ्क में राजा अग्निमित्र की छोटी रानी इरावती राजा और मालविका के प्रेम में विघ्न डालती है।

➢ चतुर्थ अङ्क में धारिणी मालविका और उसकी सखी को जेल में डाल देती है।

➢ पाँचवे अङ्क में रानी धारिणी की अनुमति से राजा अग्निमित्र और मालविका का विवाह हो जाता है।

विक्रमोर्वशीयम्

☆ **लेखक-** कालिदास
☆ **काव्यविधा-** त्रोटक नामक उपरूपक
☆ **विभाजन-** 5 अङ्क
☆ **श्लोक संख्या-** 165 पद्य
☆ **उपजीव्य/कथानक-** ऋग्वेद के 'पुरुरवा उर्वशी' आख्यान (मत्स्यपुराण से भी कथानक की समानता)
☆ **नायक-** पुरुरवा (विक्रम)
☆ **नायिका-** उर्वशी
☆ **विदूषक-** माणवक
☆ **कञ्चुकी-** लातव्य
☆ **प्रधान/अङ्गीरस-** शृङ्गार के दोनों पक्ष (सम्भोग और विप्रलम्भ)
☆ **नायक कोटि-** धीरोदात्त
☆ **अलङ्कार-** उपमा एवं अन्य अलङ्कार।
☆ **गुण-** प्रसाद गुण
☆ **रीति-** वैदर्भी
☆ **छन्द-** सर्वाधिक- आर्या तथा अनुष्टुप्

➢ कालिदास द्वारा रचित द्वितीय नाटक।

➢ चतुर्थ अङ्क में पुरुरवा विलाप में अपभ्रंश छन्दों का प्रयोग

अङ्क	श्लोक संख्या
1	20
2	22
3	22
4	76
5	25
कुल 5 अङ्क	165 श्लोक

विक्रमोर्वशीयम् की संक्षिप्त कथावस्तु

➢ राजा पुरुरवा (विक्रम) और उर्वशी नाम अप्सरा का प्रणय कथा का वर्णन है।

➢ पुरुरवा चन्द्रवंशी नरेश तथा प्रतिष्ठानपुर का राजा है।

➢ राजा पुरुरवा केशी राक्षस से सन्त्रस्त उर्वशी का उद्धार करता है।

➢ चौथे अङ्क में उर्वशी क्रुद्ध होकर कार्तिकेय के गन्धमादन उपवन चली जाती है, और श्रापवश लता के रूप में परिवर्तित हो जाती है।

➢ राजा अत्यन्त शोक करता है।

➢ संगमनीय मणि के साथ राजा लता रूपी उर्वशी का आलिंगन करता है तो वह उर्वशी रूप में पुनः परिवर्तित हो जाती है।

➢ पाँचवें अङ्क में उर्वशी अपने 'पुत्र' दर्शन प्राप्त कर भरतमुनि के शाप से मुक्ति पाती है और पुनः स्वर्ग जाने के आदेश से प्रेमी पुरुरवा के दूर होने का दुःख प्रकट करती है।

➢ पुरुरवा द्वारा युद्ध में इन्द्र की सहायता किये जाने से खुश इन्द्र की कृपा से उर्वशी सदा पुरुरवा के पास रहती है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

➤ **लेखक** – कालिदास
➤ **विधा** – नाटक
➤ **अङ्क** – 7 (सात)
➤ **प्रधानरस** – शृङ्गार (सम्भोगशृङ्गार)
➤ **कथानक** – राजा दुष्यन्त एवं शकुन्तला का परस्पर प्रेम, विरह एवं मिलन का वर्णन है।
➤ **प्रमुखपात्र** – दुष्यन्त (नायक), शकुन्तला (नायिका) कण्व, अनसूया, प्रियंवदा, माढव्य (विदूषक), गौतमी, शार्ङ्गरव, शारद्वत, हंसपदिका, वसुमती, मातलि, सानुमती, सर्वदमन (भरत), मारीच ऋषि, अदिति (दाक्षायणी), दुर्वासा, मेनका
➤ शाकुन्तलम् का उपजीव्य/आधारग्रन्थ है – **1. महाभारत के आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान (68-74 अध्यायों में), 2. पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में भी यह कथा मिलती है।**
➤ अभि0 शाकुन्तलम् नाटक की रीति – **वैदर्भी रीति**
➤ वैदर्भीरीतिसन्दर्भे विशिष्यते – **कालिदासः**
➤ कालिदास के काव्यों में किस वृत्ति का विशेष प्रयोग है–**कैशिकी**
➤ कालिदास का प्रिय अलङ्कार – **उपमा** (उपमा कालिदासस्य)।
➤ अभि0शाकु0 के प्रथम अङ्क का नाम – **आश्रम प्रवेश**
➤ द्वितीय अङ्क का नाम – **आश्रम निवेश**
➤ तृतीय अङ्क का नाम – **मिलन अङ्क**
➤ चतुर्थ अङ्क का नाम – **विदा अङ्क**
➤ पञ्चम अङ्क का नाम – **प्रत्याख्यान अङ्क**
➤ षष्ठ अङ्क का नाम – **पश्चात्ताप अङ्क।**
➤ सप्तम अङ्क का नाम – **पुनर्मिलन अङ्क।**
➤ शाकुन्तलम् के **चतुर्थ अङ्क** में करुणरस का प्रयोग है।
➤ शकुन्तला का हस्तिनापुर (पतिगृह) गमन **चतुर्थ अङ्क में** वर्णित है।
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक – **दुष्यन्त**
➤ दुष्यन्त **धीरोदात्त** कोटि का नायक है।
➤ राजा दुष्यन्त कहाँ का राजा है – **हस्तिनापुर**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका – **शकुन्तला**
➤ शकुन्तला किस कोटि की नायिका है – **मुग्धा**
➤ शकुन्तला है – **शकुन्तभिः पक्षिभिः लालिता पालिता इति शकुन्तला**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मङ्गलाचरण है – **आशीर्वादात्मक**
➤ अभि0 शाकुन्तलम् के मङ्गलाचरण में छन्द है – **स्रग्धरा**
➤ ''या सृष्टिः स्रष्टुराद्या....." इत्यादि श्लोक कहाँ का है – **अभि0शाकु0 नाटक का मङ्गलाचरण**
➤ अभि0शाकु0 के मङ्गलाचरण में किसकी स्तुति की गयी है – **अष्टमूर्ति शिव की**
➤ **''तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः''** से सम्बन्धित नाटक – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
➤ **''तत्र श्लोकश्चतुष्टयम्''** किससे सम्बन्धित है – **अभि0 शाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क से**
➤ ''काव्येषु नाटकं रम्यम्'' इस वाक्य में किस नाटक का संकेत है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् का**
➤ दुष्यन्त का विनोदप्रिय मित्र – **माढव्य**
➤ अभि0 शाकुन्तलम् का विदूषक – **माढव्य**
➤ शकुन्तला की दोनों सखियाँ – **1. अनसूया. 2. प्रियंवदा।**
➤ शकुन्तला के माता और पिता– **मेनका और ऋषि विश्वामित्र**
➤ शकुन्तला के पालक (धर्मपिता) पिता – **महर्षि कण्व**
➤ महर्षि कण्व के दो प्रमुख शिष्य – **शार्ङ्गरव और शारद्वत**
➤ दुष्यन्त और शकुन्तला का विवाह हुआ – **गान्धर्व विवाह**
➤ शकुन्तला को किसने शाप दिया – **ऋषि दुर्वासा ने**
➤ शकुन्तला को शाप का कारण – **अतिथि रूप में पधारे दुर्वासा ऋषि का तिरस्कार**
➤ शकुन्तला के शाप को जानने वाली – **प्रियंवदा और अनसूया**
➤ शकुन्तला को शाप मिला– **अभि0शाकु0 के चतुर्थ अङ्क में**
➤ अभि0शा0 में शाप की कल्पना का कारण – **प्रेम के आदर्शस्वरूप की स्थापना**
➤ शाप का प्रभाव किस अङ्क में दिखायी पड़ता है – **अभि0शा0 के पञ्चम अङ्क में**
➤ राजा दुष्यन्त के पश्चात्ताप का वर्णन – **षष्ठ अङ्क में**
➤ राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन होता है – **अभि0शा0 के सप्तम अङ्क में**
➤ हेमकूट पर्वत पर आश्रम है – **महर्षि मारीच का।**
➤ दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन – **हेमकूट पर्वत के मारीच आश्रम में।**
➤ शकुन्तला की मुद्रिका प्राप्त होती है– **धीवर मीनपालक को**
➤ दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र का नाम– **सर्वदमन (भरत)**
➤ अभि0 शा0 का प्रारम्भ होता है – **नान्दीपाठ से (या सृष्टिः स्रष्टुराद्या)**
➤ अभि0शा0 का समापन होता है – **भरत वाक्य से (प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः....)।**
➤ कालिदास का सर्वस्वभूतग्रन्थ है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्। ''कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।''**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के विषय में **पाश्चात्त्य विद्वान् गेटे** का कथन – Wouldst thou the young year's blossoms

and the fruits of its decline, and all by which the soul is charmed, enraptured adapted, fed wouldst thou the earth and heaven it self in one name combined? I name the o shakuntala? And all at once is said.

संस्कृतरूपान्तरण

वासन्तं कुसुमं फलञ्च युगपद् ग्रीष्मस्य सर्वं च यद्,
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयोः,
ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्॥

- कालिदास का विश्वप्रसिद्ध नाटक है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्।**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवादक – **विलियम जोन्स**
- विलियम जोन्स ने **The last things** की भूमिका में कालिदास को '**भारत का शेक्सपियर**' कहा।
- **महाकवि गेटे** ने अपने सुप्रसिद्ध नाट्यकाव्य '**फाडस्ट**' में कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् और नायिका शकुन्तला की भूरि-भूरि प्रशंसा की।
- कालिदास द्वारा विरचित तीन नाटक हैं – **1. मालविकाग्निमित्रम्** (प्रथमनाटक), **2. विक्रमोर्वशीयम्** (द्वितीय नाटक), **3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्** (अन्तिम तथा सर्वश्रेष्ठ नाटक)
- कण्व द्वारा पोषित, मेनका और विश्वामित्र की पुत्री – **शकुन्तला**
- कालिदास के सभी नाटक हैं – **सुखान्त।**
- कालिदास की नाट्यकला का सर्वश्रेष्ठ निदर्शन है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् कथाविन्यास, चरित्र चित्रण, संवाद योजना, भाषा – शैली, अलंकार–योजना, रसयोजना, प्रकृतिचित्रण, सभी दृष्टियों से **सर्वश्रेष्ठ नाटक** है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में लगभग **196 पद्य** हैं।
- महाकवि कालिदास **रसमयी शैली** के आचार्य हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में भारतीय संस्कृति की महत्त्वपूर्ण तीन विशेषताओं – **त्याग, तपस्या, और तपोवन** का अच्छा चित्रण किया गया है।
- भरतमुनि के अनुसार नाटक का लक्षण – **''त्रैलोकस्यास्य सर्वस्य नाट्यं भावानुकीर्तनम्।''**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क का प्रारम्भ होता है – **विष्कम्भक से।**
- अनसूया और प्रियंवदा के पुष्पावचयन से प्रारम्भ होता है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् का चतुर्थ अङ्क।**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में वर्णन है – **शकुन्तला की विदाई का।**
- अन्तः प्रकृति और बाह्य प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया गया है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में।**
- दुष्यन्त और शकुन्तला की प्रणयगाथा वर्णित है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् में।**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में लगभग **180 उपमाओं का प्रयोग** किया गया है।
- शकुन्तला **हेमकूट पर्वत पर महर्षि मारीच के आश्रम में** अपनी माता मेनका के साथ वियोग के दिन गुजारती है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दुष्यन्त और शकुन्तला के प्रेम, वियोग और पुनर्मिलन का वर्णन है।
- इस नाटक की कथावस्तु राजा दुष्यन्त के द्वारा शकुन्तला को दिये गये अभिज्ञान (अँगूठी) के आस पास चक्कर लगाती है।
- राजा दुष्यन्त मृग का पीछा करते हुए किस आश्रम में प्रवेश करता है – **महर्षि कण्व के।**
- तीर्थयात्रा पर गए हुए कण्व ऋषि की अनुपस्थिति में ही राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का गान्धर्व विवाह आश्रम में ही सम्पन्न हो जाता है।
- शकुन्तला को महर्षि कण्व किसके साथ पतिगृह (हस्तिनापुर) भेजते हैं – **शार्ङ्गरव, शारद्वत और गौतमी।**
- हस्तिनापुर जाते समय शकुन्तला की अगूँठी कहाँ गिर जाती है – **शचीतीर्थ में।**
- दुष्यन्त, शकुन्तला को पहचानने से क्यों इन्कार कर देता है – **दुर्वासा के शापवशात्।**
- शकुन्तला कण्व ऋषि के आश्रम के बाद किस आश्रम में निवास करती है – **ऋषि मारीच के आश्रम में।**
- बालक सर्वदमन (भरत) और शकुन्तला से दुष्यन्त की भेंट कहाँ होती है – **हेमकूटपर्वत स्थित ऋषि मारीच के आश्रम में।**
- महर्षि कण्व का आश्रम था – **मालिनी नदी के तट पर।**
- दुष्यन्त ने जब आश्रम में प्रवेश किया तब महर्षि कण्व कहाँ गए हुए थे – **सोमतीर्थ।**
- शकुन्तला को शाप देने वाले ऋषि थे – **दुर्वासा**
- मारीच ऋषि रहते थे – **हेमकूट पर स्थित आश्रम में**
- दुष्यन्त की कौन रानी संगीत का अभ्यास कर रही है – **हंसपदिका**
- राजा दुष्यन्त की दो रानियाँ – **वसुमती और हंसपदिका**
- राजा दुष्यन्त किस रानी को अधिक प्यार करता है– **वसुमती**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में किस गुण की प्रधानता है – **प्रसाद गुण**
- कालिदास के नाटकों का प्रतिपाद्य विषय है – **प्रसाद गुण**
- कालिदास के नाटकों का प्रतिपाद्य रस है – **शृङ्गार**
- नाट्यशास्त्र में नान्दी का अर्थ है – **मङ्गलाचरण**
- नाटकों में भरतवाक्य का प्रयोग होता है – **अन्त में**

➤ शकुन्तला का पालन पोषण हुआ था– **कण्व के आश्रम में**
➤ शकुन्तला पति के चिन्तन में कहाँ बैठी थी– **कुटिया में**
➤ राजा की मनःस्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था– **सानुमती**
➤ जर्मनविद्वान् गेटे द्वारा प्रशंसित नाटक है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
➤ शापनिवृत्ति के लिए ऋषि दुर्वासा से अनुनय विनय करने वाली सखी है– **प्रियंवदा**
➤ शकुन्तला की अमङ्गलशान्ति के लिए कण्व कहाँ गए थे – **सोमतीर्थ**
➤ शकुन्तला ने किस तीर्थ में जलवन्दना की थी – **शचीतीर्थ**
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् का सर्वश्रेष्ठ अङ्क है – **चतुर्थ**
➤ वह महिला तपस्विनी जिसके साथ शकुन्तला हस्तिनापुर जाती है – **गौतमी**
➤ अग्निगर्भा शमी के समान है – **शकुन्तला**
➤ दुष्यन्त शकुन्तला की वैवाहिक विधि है – **गान्धर्व**
➤ हस्तिनापुर से शकुन्तला को मारीच आश्रम ले जाने वाली है – **एक दिव्य ज्योति (मेनका)**
➤ दुष्यन्त को देवासुर संग्राम की सूचना देने वाला है – **इन्द्र का सारथि मातलि**
➤ वह स्थान जहाँ स्वर्ग से लौटते समय दुष्यन्त रुकता है – **मारीच ऋषि का आश्रम**
➤ **'अपराजिता रक्षाकरण्डक'** से सम्बद्ध है – **सर्वदमन (भरत)**
➤ कालिदास के तीनों नाटकों में प्रधानता है – **शृङ्गार रस की।**
➤ शाकुन्तलम् का प्रारम्भ तथा अन्त होता है – **सम्भोग शृङ्गार से**
➤ **'राजन् आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः'** किसने कहा – **तपस्वी वैखानस ने**
➤ भ्रमर से भयभीत शकुन्तला की रक्षा कौन करता है – **राजा दुष्यन्त**
➤ 'शकुन्तला ऋषि विश्वामित्र एवं मेनका की कन्या हैं' – यह बात राजा दुष्यन्त को किसने बताया **– अनसूया ने**
➤ हस्तिनापुर से महारानी का सन्देश लेकर कण्व के आश्रम राजा दुष्यन्त के पास कौन जाता है – **करभक नाम का एक सेवक**
➤ शाकुन्तलम् के किस अङ्क में राजा दुष्यन्त विदूषक माढव्य को आश्रम से हस्तिनापुर वापस भेज देता है– **द्वितीय अङ्क में**
➤ शकुन्तला को राजा दुष्यन्त के लिए एक प्रेमपत्र लिखने की सलाह कौन देती है – **प्रियंवदा**
➤ शकुन्तला, सखियों के आग्रह से नलिनी पत्र पर नाखूनों से राजा को प्रेमपत्र लिखती है।

तव न जाने हृदयं मम पुनः कामो दिवाऽपि रात्रावपि।
निर्घृण तपति बलीयस्त्वयि वृत्तमनोरथाया अङ्गानि॥

अभि०शा० 3-13।

➤ शकुन्तला की अस्वस्थता का समाचार पाकर शान्तिजल लिए हुए कौन आती है – **आर्या गौतमी**
➤ नाटक में दुर्वासा ऋषि का आगमन किस अङ्क में होता है – **चतुर्थ अङ्क में**
➤ ऋषि कण्व को आकाशवाणी द्वारा मालूम होता है कि शकुन्तला का दुष्यन्त के साथ गान्धर्व विवाह हो गया है, तथा वह आपन्नसत्त्वा (गर्भिणी) है।

दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।
अवेहि तनयां ब्रह्मन् अग्निगर्भां शमीमिव॥

अभि०शा० 4/4

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के मार्मिक प्रसङ्ग

प्रथम अङ्क – भ्रमर वृत्तान्त और शकुन्तला की सखियों से राजा का वार्तालाप।
द्वितीय अङ्क – शकुन्तला के सौन्दर्य का वर्णन।
तृतीय अङ्क – दुष्यन्त और शकुन्तला के विरह दुःख का वर्णन और दोनों के मिलन का वर्णन।
चतुर्थ अङ्क – शकुन्तला की विदाई।
पंचम अङ्क – राजा दुष्यन्त और शार्ङ्गरव का विवाद।
षष्ठ अङ्क – राजा के शोक का वर्णन।
सप्तम अङ्क – पुत्र सर्वदमन का दर्शन और शकुन्तला से मिलन का वर्णन।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मङ्गलाचरण

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या, वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री,
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुति विषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः,
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः॥ 1/1 ॥

भावार्थ- जो विधाता की सर्वप्रथम सृष्टि है अर्थात् जलरूप मूर्ति, जो विधिपूर्वक की गयी हवन के हवि को देवताओं के पास ले जाती है अर्थात् अग्निरूप मूर्ति, जो यज्ञकर्ता है अर्थात् यजमान रूपमूर्ति, जो दो समय का निर्माण करतीं हैं,अर्थात् सूर्य और चन्द्ररूप मूर्तियाँ, शब्द जिसका गुण है और जो विश्व में व्याप्त होकर विद्यमान है अर्थात् आकाश रूप मूर्ति, जिसको विद्वान् समस्त बीजों का कारण कहते हैं, अर्थात् पृथ्वीरूपमूर्ति और जिससे सभी प्राणी जीवित रहते हैं अर्थात् वायुरूप मूर्ति, उन प्रत्यक्ष आठ मूर्तियों से युक्त भगवान् शिव आप लोगों की रक्षा करें।

☆ प्रस्तुत पद्य में अष्टमूर्ति भगवान् शिव की स्तुति की गयी है।
☆ आशीर्वादात्मक मङ्गलाचरण का प्रयोग है।
☆ समासोक्ति के माध्यम से कथानक का सङ्केत होने से पत्रावली

नान्दी भी है।

☆ उपर्युक्त श्लोक में स्रग्धरा छन्द तथा अनुप्रास एवं समासोक्ति अलङ्कार है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का भरतवाक्य

प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः
सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्।
ममापि च क्षपयतु नीललोहितः
पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः॥ 7/35 ॥

भावार्थ- राजा लोग प्रजा के हित के कार्यों में लगे रहें। चारों वेदों से शोभायमान भगवती श्री सरस्वती जगत् में पूजा को प्राप्त हों, अर्थात् वैदिक साहित्य, वेदमार्ग तथा चक्र सहित स्वयंभू भगवान् शङ्कर मेरे पुनर्जन्म का नाश करें। अर्थात् भगवान् शाम्ब शिव की कृपा से मेरा जन्म-मरण रूप यह संसार बन्धन सदा के लिए छूट जाए।

☆ यह उत्तरार्धगत अन्तिम उक्ति महाकवि कालिदास की स्वयं अपनी प्रार्थना है।

☆ इस भरतवाक्य में लोक-कल्याण के लिए भगवान् शिव से प्रार्थना की गयी है।

☆ इस पद्य में रुचिरा या अतिरुचिरा छन्द है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाम का प्रयोजन

1. अभिज्ञायते अनेन इति अभिज्ञानम् अभि+ज्ञा+ल्युट् = अभिज्ञान अर्थात् जिसके द्वारा पहचाना जाता है।

यहाँ पर अभिज्ञान से भाव है- दुष्यन्त के द्वारा पहचान के लिए शकुन्तला को दी गयी अँगूठी।

शकुन्तलाम् अधिकृत्य कृतं नाटकं शाकुन्तलम्।

शकुन्तला+अण्, ('अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' सूत्र से अण् प्रत्यय) अर्थात् शकुन्तला विषयक नाटक।

अभिज्ञानप्रधानं शाकुन्तलम् इति अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(मध्यमपदलोपी समास)

शकुन्तला प्रधान नाटक, जिसमें अभिज्ञान (अँगूठी) मुख्य रूप से वर्णित है।

2. अभिज्ञानसहितं शाकुन्तलम् इति अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(मध्यमपदलोपी समास)

अभिज्ञान(अँगूठी) के वर्णन से युक्त शकुन्तला-विषयक नाटक।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के नाटकीय पात्रों का परिचय

पुरुष पात्र

क्र.	नाम	परिचय
1.	सूत्रधार	नाटक का आरम्भ करने वाला प्रधान नट और रंगमञ्च का अध्यक्ष।
2.	दुष्यन्त	नाटक का नायक, हस्तिनापुर का राजा।
3.	सूत	दुष्यन्त का सारथि।
4.	सेनापति भद्रसेन	दुष्यन्त का सेनापति।
5.	विदूषक माढव्य	दुष्यन्त का अन्तरङ्ग मित्र और हास्यकारी।
6.	महर्षिकण्व (काश्यप)	आश्रम के कुलपति, शकुन्तला के पालक और धर्मपिता।
7.	मारीच (कश्यप)	एक महर्षि, देवों और राक्षसों के पिता, एक प्रजापति।
8.	भरत (सर्वदमन)	राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुत्र।
9.	सोमरात	दुष्यन्त का पुरोहित।
10.	मातलि	इन्द्र का सारथि।
11.	वैखानस, हारीत, नारद, गौतम, शाङ्र्गरव, शारद्वत, शिष्य	सभी कण्व के शिष्य, आश्रम के तपस्वी।
12.	रैवतक (दौवारिक)	राजा का भृत्य, द्वारपाल।
13.	करभक	राजा के पास राजमाता का सन्देश पहुँचाने वाला सेवक।
14.	कञ्चुकी (वातायन)	रनिवास की देखभाल करने वाला एक वृद्ध ब्राह्मण।
15.	वैतालिक	स्तुतिपाठक (भाट, चारण)।
16.	श्याल	राजा का साला, नगर रक्षाधिकारी (कोतवाल)।
17.	धीवर (मीनपालक)	मछली पकड़ने वाला।
18.	सूचक	पुलिस के दो सिपाही।
19.	जानुक	
20.	गालव	ऋषि मारीच का शिष्य।
21.	पिशुन	दुष्यन्त का मन्त्री

स्त्रीपात्र

क्र.	नाम	परिचय
22.	नटी	सूत्रधार की पत्नी।
23.	शकुन्तला	नाटक की नायिका, कण्व की धर्मपुत्री, दुष्यन्त की पत्नी, मेनका और विश्वामित्र से उत्पन्न एक क्षत्रिय कन्या।
24.	अनसूया	शकुन्तला की अत्यन्त प्रिय और अंतरंग सखी।
25.	प्रियंवदा	
26.	गौतमी	कण्व के आश्रम की अध्यक्षा, एक वृद्धा तापसी।
27.	अदिति (दाक्षायणी)	महर्षि मारीच की पत्नी।
28.	सानुमती	मेनका की सखी, एक अप्सरा।
29.	परभृतिका	राजा की सेविका, उद्यानपालिका।
30.	मधुकरिका	
31.	चतुरिका	राजा की सेविका।
32.	वेत्रवती (प्रतीहारी)	राजा की द्वारपालिका।
33.	यवनी	राजा की एक सेविका।
34.	तापसी (सुव्रता)	मारीच के आश्रम की एक तपस्विनी।

अन्य पात्र

- **मघवा (इन्द्र)** – देवताओं के राजा, दुष्यन्त के मित्र।
- **इन्द्राणी** – इन्द्र की पत्नी।
- **जयन्त** – इन्द्र का पुत्र।
- **कौशिक (विश्वामित्र)** – शकुन्तला के जन्मदाता पिता।
- **मेनका** – शकुन्तला की माता, एक अप्सरा।
- **दुर्वासा** – एक ऋषि, शकुन्तला को शाप देने वाले।
  नोट – नाटक में इन पात्रों का केवल नामोल्लेख मात्र हुआ है।
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में पुरुवंशी (चन्द्रवंशी) राजा दुष्यन्त तथा विश्वामित्र और मेनका की पुत्री शकुन्तला का प्रेम, वियोग, पुनर्मिलन वर्णित है।
- शाकुन्तलम् की कथा महाभारत के आदिपर्व तथा पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में वर्णित है।
- शाकुन्तलम् का **नायक 'दुष्यन्त'** 'हस्तिनापुर' का राजा है और धीरोदात्त नायक के गुणों से युक्त है।
- 'शाकुन्तलम्' की **नायिका शकुन्तला** महर्षि कण्व (काश्यप) के आश्रम में पली है। 'मुग्धा' नायिका है।
- 'शाकुन्तलम्' का **प्रमुख 'रस' शृंगार है।** चतुर्थ अङ्क में **करुण** रस है।
- शाकुन्तल में **24 छन्दों** का प्रयोग हुआ है। सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द आर्या (39) है। तत्पश्चात् वसन्ततिलका (30) है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कुल **196 श्लोक** है। सर्वाधिक (35) श्लोक सप्तम अङ्क में हैं।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में **वैदर्भी रीति** और **माधुर्य गुण** प्रयुक्त है।
- शाकुन्तलम् में साधारणतया **गद्य के लिए शौरसेनी** और पद्यों के लिए **महाराष्ट्री प्राकृत** का प्रयोग हुआ है।
- षष्ठ अङ्क में दोनों सिपाही और धीवर मागधी बोलते हैं।
- शाकुन्तलम् में सर्वाधिक उपमा और 'अर्थान्तरन्यास' अलङ्कारों का प्रयोग है।
- दुष्यन्त की शकुन्तला से पूर्व अन्य दो रानियाँ हंसपदिका और वसुमती हैं।
- शकुन्तला की अनसूया और प्रियंवदा नामक दो सखियाँ हैं।
- दुष्यन्त और शकुन्तला का **पुत्र सर्वदमन (भरत)** है।
- शाकुन्तलम् का **विदूषक 'माढव्य'** दुष्यन्त का मित्र है। पहली बार द्वितीय अङ्क में मंच पर आता है।
- दुष्यन्त का **सेनापति 'भद्रसेन'** और **पुरोहित 'सोमरात'** है।
- इन्द्र का सारथी **'मातलि'** और दुष्यन्त का सारथी **'सूत'** है।
- **'करभक'** नामक दूत द्वितीय अङ्क में दुष्यन्त की माता का सन्देश लेकर आता है।
- शकुन्तला, परित्याग के बाद देवों और राक्षसों के पिता, प्रजापति **'मारीच' (कश्यप)** के आश्रम में रहती है।
- वैखानस, शार्ङ्गरव, शारद्वत, गौतम, नारद, हारीत आदि महर्षि कण्व के शिष्य हैं।
- ऋषि मारीच का एकमात्र शिष्य जो शकुन्तला-दुष्यन्त के मिलन की सूचना कण्व को देने हेतु सातवें अङ्क में भेजा जाता है उसका नाम **'गालव'** है।
- षष्ठ अङ्क में धीवर को पकड़ने वाले **दो सिपाही सूचक व जानुक** हैं और राजा का साला एवं नगर रक्षाधिकारी **श्याल** है।
- राजा का **कञ्चुकी 'वातायन'** है वह षष्ठ अङ्क में 'वसन्तोत्सव' की तैयारी में लगी दो उद्यानपालिकाओं **'परभृतिका'** व **'मधुकरिका'** को ऐसा करने से रोकता है।
- **वेत्रवती** राजा की द्वारपालिका है। यवनी है, एक अन्य सेविका है।
- **अदिति** (दाक्षायणी) मारीच की पत्नी तथा **गौतमी** कण्व के आश्रम की 'एक वृद्धा तापसी' है। गौतमी भी शार्ङ्गरव और शारद्वत के साथ शकुन्तला को छोड़ने हस्तिनापुर जाती है।
- मारीच के आश्रम में सर्वदमन (भरत) के साथ रहने वाली तापसी **'सुव्रता'** थी।
- **'सानुमती'** शकुन्तला की माता मेनका की सखी है जो षष्ठ अङ्क में राजा और विदूषक की बात अदृश्य रूप से सुनती है।
- इन्द्र का पुत्र **जयन्त** तथा पत्नी **इन्द्राणी** (पौलोमी/शची) है।
- सुलभकोप ऋषि दुर्वासा, अत्रि और अनसूया के पुत्र हैं वे चतुर्थ अङ्क के आरम्भ में शकुन्तला को शाप देते हैं।
- महर्षि कण्व का आश्रम **'मालिनी नदी'** के तट पर विश्वामित्र का आश्रम गौतमी नदी के तट पर तथा 'मारीच' का आश्रम **'हेमकूट पर्वत'** पर था।
- दुर्वासा के शाप का असर पञ्चम अङ्क में दिखाई पड़ता है। यह नाटकीयता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ अङ्क है।
- शकुन्तला ने **'शचीतीर्थ'** जो गङ्गा के तट पर स्थित है, में जलवन्दना की, जहाँ उसकी अँगूठी गिरती है।

- ➢ तृतीय अङ्क में 'प्रियंवदा' कमल-पत्र पर 'नाखून' से प्रेम-पत्र लिखने की सलाह शकुन्तला को देती है जिसे वह फूलों में छिपाकर देवता के प्रसाद के बहाने राजा के पास पहुँचाने को कहती है।
- ➢ नाटक का आरम्भ **'ग्रीष्म ऋतु'** वर्णन तथा राजा दुष्यन्त द्वारा आश्रम मृग का पीछा करते हुए होता है।
- ➢ राजा पञ्चम अङ्क में हंसपदिका के सङ्गीत की प्रशंसा करता है तथा षष्ठ अङ्क में शकुन्तला तथा उसकी सखियों का चित्र बनाता है।
- ➢ दुष्यन्त षष्ठ अङ्क में **'धनमित्र'** नामक व्यापारी की मृत्यु पर उसकी सारी सम्पत्ति उसके गर्भस्थ पुत्र को दे देता है।
- ➢ दुष्यन्त के लिए इन्द्र अपना आधा सिंहासन छोड़ देते हैं तथा **राजा को मन्दारमाला** पहनाते हैं।
- ➢ राजा द्वारा तिरस्कृत शकुन्तला को प्रसव तक अपने घर में रखने को **'सोमरात'** तैयार होते हैं।
- ➢ अष्टमूर्ति शिव की उपासना शाकुन्तलम् के नान्दी में की गई है, यह **मङ्गलाचरण आशीर्वादात्मक** है।
- ➢ शाकुन्तल के मङ्गलाचरण में **स्रग्धरा छन्द** है, जिसके प्रत्येक चरण में **21 वर्ण** होते हैं। यह **पत्रावली नान्दी** है।
- ➢ जब तक विद्वान् सन्तुष्ट न हो जाय सूत्रधार अभिनय-कौशल को सफल नहीं समझता। वह ग्रीष्म ऋतु पर नटी से गीत सुनाने को कहता है।
- ➢ नटी आरम्भ में दो छन्द गाती है एक आर्या –> **(सुभगसलिल.......)** दूसरा उद्‌गाथा –> **(ईषदीषच्चुम्बितानि.....)**
- ➢ सूत प्रथम अङ्क के आरम्भ में धनुष पर बाण चढ़ाये राजा की उपमा 'शिव' से देता है।
- ➢ प्रथम अङ्क में वैखानस राजा को चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करने का आशीर्वाद देता है।
- ➢ समिधा लाने जाता हुआ 'वैखानस' राजा को बताता है कि शकुन्तला के 'प्रतिकूल भाग्य की शान्ति' के लिए कण्व शकुन्तला पर अतिथि सत्कार का भार सौंप कर **'सोमतीर्थ'** गये हुए हैं।
- ➢ आश्रम से सरोवर का मार्ग वल्कलों के अग्रभाग से टपकते जल से रेखांकित है।
- ➢ राजा आश्रम में प्रवेश से पूर्व अपने आभूषण और धनुष सारथि (सूत) को देकर सादे वेष में प्रवेश करता है।
- ➢ आश्रम-प्रवेश के समय राजा की **'दाहिनी' भुजा फड़कती** है जो सुन्दर स्त्री की प्राप्ति का सूचक है।
- ➢ आश्रम-प्रवेश पर राजा वाटिका की दाहिनी ओर वृक्षों का सेंचन कर रही (प्रियंवदा आदि) बालिकाओं को देखता है।
- ➢ प्रियंवदा कहती है कि शकुन्तला के समीप रहने पर 'बकुल' (मौलश्री) का वृक्ष लता से युक्त लगता है।
- ➢ नवमालिका लता आम के वृक्ष से लिपटी है जिसका **'वनज्योत्स्ना'** नाम शकुन्तला ने रखा है।
- ➢ प्रियंवदा 'सप्तपर्ण वृक्ष' की वेदी पर राजा को बैठने हेतु कहती है।
- ➢ अनसूया द्वारा परिचय पूँछने पर राजा अपने को पुरुवंशी राजा द्वारा नियुक्त धर्माधिकारी बताता है।
- ➢ शकुन्तला के जन्म का वृत्तान्त अनसूया राजा को बताती है।
- ➢ कौशिक (विश्वामित्र) गौतमी नदी के किनारे तपस्या कर रहे थे।
- ➢ प्रियंवदा दो वृक्षों के सेंचन का ऋण बताकर शकुन्तला को रोकती है राजा अपनी अङ्गूठी देकर शकुन्तला को ऋण मुक्त करना चाहता है।
- ➢ द्वितीय अङ्क का आरम्भ खिन्न विदूषक के प्रवेश के साथ होता है जो राजा के 'मृगया' के व्यसन से दुःखी है।
- ➢ द्वितीय अङ्क में सेनापति और विदूषक 'मृगया' (शिकार) के गुण-दोष की चर्चा करते हैं।
- ➢ दुष्यन्त, शकुन्तला के प्रति अपने प्रेम को विदूषक से कहता है और कहीं यह अन्तःपुर में न बता दे इसलिए उस बात को हँसी में कही 'बात' कहता है।
- ➢ करभक सन्देश लाता है कि चौथे दिन महारानी (दुष्यन्त की माता) के व्रत (जीवित्पुत्रिका/जिउतियाव्रत) का 'पारण' है।
- ➢ राजा अपने स्थान पर 'विदूषक' को भेज देता है।
- ➢ तृतीय अङ्क का आरम्भ 'शिष्य' के प्रवेश से होती है जो शकुन्तला के अस्वस्थ होने की खबर प्रियंवदा से प्राप्त होने का अभिनय करता है।
- ➢ तृतीय अङ्क का आरम्भ 'विष्कम्भक' से होता है।
- ➢ तृतीय अङ्क में दुष्यन्त के शकुन्तला के समीप उपस्थित होने पर दोनों सखियाँ मृग-शावक को उसकी माँ से मिलाने के बहाने से हट जाती हैं।
- ➢ दुष्यन्त तृतीय अङ्क में **शकुन्तला से गान्धर्व विवाह** करता है। यह विवाह केवल क्षत्रियों के लिए ही स्वीकृत था।
- ➢ गौतमी दोनों सखियों के साथ शकुन्तला का स्वास्थ्य जानने आती है।
- ➢ चतुर्थ अङ्क का आरम्भ पुष्प चुनती हुई दो सखियों (प्रियंवदा, अनसूया) के प्रवेश के साथ होता है।
- ➢ अनसूया, शकुन्तला के 'भाग्यदेवता' के पूजन के लिए अधिक फूल तोड़ने को कहती है।
- ➢ शाप देकर जाते हुए **दुर्वासा को मनाने प्रियंवदा** जाती है।
- ➢ शकुन्तला कुटिया के द्वार पर बाएँ हाथ पर मुँह रखे चित्रलिखित सी बैठी है।
- ➢ शाप का वृत्तान्त केवल अनसूया और प्रियंवदा को ज्ञात रहता है।
- ➢ चौथे अङ्क का आरम्भ भी **शुद्ध विष्कम्भक** के साथ होता है।
- ➢ विष्कम्भक के पश्चात् सोकर उठे 'शिष्य' का प्रवेश मंच पर होता है। जो काश्यप के आदेशानुसार 'कितनी रात शेष है' यह जानने के लिए बाहर आता है।
- ➢ 'शकुन्तला सुखपूर्वक सोई कि नहीं' यह जानने के लिए गयी हुई प्रियंवदा यह समाचार लाती है कि 'कण्व' ने शकुन्तला के विवाह को अनुमति दे दी है।
- ➢ शकुन्तला 'गर्भिणी' है यह समाचार कण्व को **'अशरीरधारी छन्दोमयी'** वाणी ने यज्ञशाला में प्रविष्ट होने पर दिया।
- ➢ इस घटना को प्रियंवदा, अनसूया से बताती है।

- अनसूया शकुन्तला की विदाई हेतु नारियल के डिब्बे में बकुल (मौलश्री) की माला, केसर आदि आम की डाल पर लटका कर रखती है।
- अनसूया शकुन्तला की विदाई के अवसर पर गोरोचन, तीर्थों की मिट्‌टी, दूब के अग्रभाग आदि वस्तुएँ इकट्‌ठा करती है।
- स्वस्तिवाचन के समय तीन तापसियाँ शकुन्तला को आशीर्वाद देती हैं।
- पहली तापसी **'महादेवी'** शब्द प्राप्त करने, दूसरी **'वीर पुत्र'** को प्राप्त करने का और तीसरी **'पति से अधिक सम्मान'** प्राप्त करने का आशीर्वाद देती है।
- दो ऋषि कुमार जिनके नाम **नारद** व **गौतम** हैं, वे वृक्षों द्वारा प्रदत्त वस्त्र-आभूषण आदि शकुन्तला के लिए लाते हैं।
- दोनों सखियाँ चित्रकारी से प्राप्त ज्ञान के आधार पर शकुन्तला का शृङ्गार करती हैं।
- पूरे नाटक में **महर्षि कण्व केवल चौथे अङ्क** में दिखाई पड़ते हैं। वे स्नान के उपरान्त **'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति'**...... श्लोक के साथ मंच पर प्रविष्ट होते हैं।
- चतुर्थ अङ्क के **22 श्लोकों में 14 श्लोक महर्षि कण्व** ने कहे हैं। चौथे अङ्क के प्रसिद्ध चार श्लोक भी महर्षि कण्व द्वारा कहे गये हैं।
- **ययाति** चंद्रवंश के संस्थापक राजाओं में थे जिनकी **देवयानी** और **शर्मिष्ठा** नाम की दो पत्नियाँ थीं।
- **देवयानी** दानवों के गुरु **शुक्राचार्य की पुत्री** और ययाति की विवाहिता पत्नी थी।
- दानवों के राजा **'वृषपर्वा' की पुत्री शर्मिष्ठा** देवयानी की सेविका के रूप में आयी थी। ययाति ने उससे गान्धर्व विवाह कर लिया।
- ययाति के 5 पुत्रों में **शर्मिष्ठा का पुत्र 'पुरु'** भी था जिसने शुक्राचार्य के शाप से वृद्ध हुए ययाति की वृद्धावस्था अपने ऊपर ले लिया था।
- अग्निवेदी की परिक्रमा करते हुए कण्व ने ऋग्वैदिक छन्द 'त्रिष्टुप्' में शकुन्तला को आशीर्वाद दिया।
- 'त्रिष्टुप्' के प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं, 4 या 5 वर्ण पर यति होती है।
- वृक्षों के प्रथम 'पुष्पोद्‌गम' के समय शकुन्तला आश्रम में उत्सव मनाया करती थी।
- 'वृक्षों से' कण्व द्वारा शकुन्तला के जाने हेतु आज्ञा माँगने पर वे 'कोयल' की आवाज में आज्ञा प्रदान करते हैं।
- वृक्षों ने शकुन्तला को कोयल की आवाज में जाने की आज्ञा दे दी है। इस बात की कण्व अपरवक्त्र छन्द में पुष्टि करते हैं।
- आकाशवाणी के द्वारा शकुन्तला यात्रा की जो मङ्गल कामना की गई है वह **शाकुन्तलम् का 'मध्यनान्दी'** है।
- जाती हुई शकुन्तला अपनी **लता-बहिन 'वनज्योत्स्ना'** से गले मिलकर विदाई लेती है। जो 'आम्रवृक्ष' से लिपटी है। और इसे धरोहर के रूप में सखियों के हाथ में देती है।
- शकुन्तला कण्व से गर्भ के कारण शिथिल हरिणी के कुशलपूर्वक सन्तानोत्पत्ति का समाचार अपने पास भेजने को कहती है।
- कुशाग्रों से विंधे मुखवाले जिस मृग के मुख पर शकुन्तला ने इंगुदी (हिंगोट) का तेल लगाया था तथा साँवा के चावल से पाला था वह शकुन्तला के जाते समय उसका वस्त्र खींचता है। वह उसे पिता कण्व को सौंपती है।
- शकुन्तला के साथ सरोवर के तट तक आये कण्व क्षीरवृक्ष (पीपल) के नीचे बैठ कर दुष्यंत को भेजने हेतु संदेश देते हैं।
- कमल के पत्ते की ओट में बैठे सहचर (चकवा) को न देख पाने के कारण चकवी रोती (चिल्लाती) है।
- शकुन्तला द्वारा पहले पूजा के रूप में डाले गये 'नीवार' अब कुटी के द्वार पर उगे हैं जो कण्व को उसकी याद दिलायेंगे।
- **''अपराजिता रक्षाकरण्डक''** सिंह शावक के साथ खेलते सर्वदमन के हाथ पर बंधा है जो बालक के माता-पिता के अतिरिक्त अन्य के छूने पर सर्प बनकर डस लेता है।
- षष्ठ अङ्क में इन्द्र-सारथि मातलि राजा में क्रोध या वीरता को जगाने के लिए विदूषक पर आक्रमण करता है।
- मातलि विदूषक पर आक्रमण करके उसे **'मेघप्रतिच्छन्द'** नामक महल के ऊपरी मंजिल पर ले जाता है।
- राजा उस पर आक्रमण हेतु 'यवनी' नामक परिचारिका से धनुष माँगता है।
- मातलि राजा के समक्ष प्रकट होकर राजा को देवासुर संग्राम में इन्द्र के सहायतार्थ चलने हेतु निवेदन करता है।
- **कालनेमि का वंशज 'दुर्जेय'** ने इन्द्र पर आक्रमण किया जिसे केवल दुष्यन्त मार सकता है।
- राजा दुष्यन्त के **मंत्री 'पिशुन'** हैं जिन पर वह देवासुर संग्राम में जाते हुए राज्यभार सौंपता है। विदूषक से यह बात उन्हें बताने के लिए कहता है।
- **हेमकूट किन्नरों का पर्वत** है जहाँ प्रजापति 'मारीच' रहते हैं।
- जब मातलि 'राजा' के आगमन की सूचना (मारीच को) देने जाता है तब राजा अशोक वृक्ष के नीचे बैठता है।
- 'जातकर्म' 16 संस्कारों में चौथा है। जिस अवसर पर सर्वदमन के हाथ पर **'अपराजिता'** नामक रक्षासूत्र बाँधा गया था।
- मारीच **'वत्स, चिरंजीव पृथिवीं पालय'** आशीर्वाद राजा को देते हैं तथा दुर्वासा - शाप का वृत्तान्त दोनों को बताते हैं।
- अदृश्य तेजोमयी मूर्ति के रूप में मेनका 'अप्सरास्तीर्थ' से शकुन्तला को लेकर दाक्षायणी (मारीच-पत्नी) के पास गयी।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का भरतवाक्य (अन्तिम श्लोक) (प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय) **'रुचिरा' छन्द** में है। जिसके प्रत्येक चरण में 13 वर्ण, 4, 9 पर यति होती है।
- जीवों को बलात् वश में कर लेने के कारण भरत का नाम 'सर्वदमन' था।
- पञ्चम अङ्क में अङ्गूठी के शचीतीर्थ में जलतर्पण के समय गिरने की बात का पता सर्वप्रथम 'गौतमी' के मुख से पता चलता है।

राजा दुष्यन्त

परिचयः –

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का धीरोदात्त नायक
  महासत्त्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः।
  स्थिरो निगूढाहङ्कारो धीरोदात्तो दृढव्रतः॥
  (दशरूपक – द्वितीयप्रकाश)
  अर्थात् वह (राजा दुष्यन्त) स्थिर स्वभाववाला, क्षमाशील, अतिगम्भीर, महाबली, अहङ्कारशून्य, दृढनिश्चयी, स्वयं प्रशंसा न करने वाला, मधुरभाषी, एवं ललित कलाओं का मर्मज्ञ है।
- शकुन्तला का प्रेमी/पति।
- पुरुवंशी (चन्द्रवंशी) एक क्षत्रिय राजा (राजर्षि)।
- हस्तिनापुर के सम्राट्।
- विदूषक (माधव्य) के मित्र।
- हंसपदिका और वसुमती नामक रानियों के आदर्शपति।
- सर्वदमन (भरत) के पिता।

चारित्रिक विशेषतायें

- आदर्श प्रेमी।
- सुन्दर एवं गम्भीर आकृति।
- आदर्श राजा/उत्तम शासक
- विनयशील नैतिक एवं धर्मपरायण।
- आखेट (मृगया) प्रेमी।
- कलाप्रेमी/कुशलचित्रकार/संगीतप्रेमी
- आकर्षक व्यक्तित्व एवं सौन्दर्यशाली।
- वीरयोद्धा/पराक्रमी/शूरवीर।
- वात्सल्यप्रेमी एवं गुणग्राही।
- मधुरभाषी एवं उदार।
- सहृदय तथा संयमी।
- आदर्श पिता।
- मातृभक्त तथा आज्ञाकारीपुत्र।
- चरित्रवान् नायक।
- लोकोत्तर आदर्शचरित्र

दुष्यन्त के महत्त्वपूर्ण गुण एवं कार्य

- दानवों के वधार्थ इन्द्र उसे स्वर्ग में बुलाता है। **(अङ्क-6)**
- उसके शारीरिक गठन एवं सौन्दर्य से सभी प्रभावित होते हैं, वह सुन्दर एवं युवा है।
- धनुष की टंकार से ही यज्ञ में विघ्न करने वाले राक्षसों को भगा देता है।
- प्रियंवदा उसके मधुरभाषण की प्रशंसा करती है। **(अङ्क-1)**
- जब तक यह निश्चित नहीं हो जाता है कि शकुन्तला क्षत्रिय कन्या है, तब तक वह अपने विवाह का विचार प्रकट नहीं करता है।
- शकुन्तला की प्रेमावस्था देखकर वह उसके पाणिग्रहण और रक्षा की स्वीकृति देता है। **(अङ्क-3)**
- वह रुग्ण शकुन्तला को धूप में जाने से रोकता है, और उसकी सेवा-शुश्रूषा करता है।
- माता की आज्ञा पाते ही ऋषियों के यज्ञरक्षा रूपी कार्य की विवशता के कारण मित्र विदूषक को तत्काल माता के पास भेजता है। **(अङ्क-2)**
- रानी हंसपदिका के संगीत को सुनकर मन्त्रमुग्ध हो जाता है। **(अङ्क-5)**
- शकुन्तला तथा उसकी सखियों का चित्र बनाता है। **(अङ्क-6)**
- ऋषियों के प्रति बहुत आदरभाव है, उनके कहनें से वह मृग पर बाण नहीं चलाता है।
- विनीत वेष में आश्रम में प्रवेश करता है। **(अङ्क-1)**
- यज्ञरक्षा हेतु ऋषियों की प्रार्थना सादर स्वीकार करता है।
- शार्ङ्गरव के आक्षेपों का उत्तर शान्तिपूर्वक देता है। **(अङ्क-5)**
- मारीच ऋषि के दर्शनार्थ उनके आश्रम जाता है। **(अङ्क-7)**
- वह धनमित्र नामक व्यापारी की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है। उसके गर्भस्थ पुत्र को उसका धन दिलाता है। **(अङ्क-6)**
- प्रजा की रक्षा को परमधर्म समझता है।
- दुःखियों का दुःख दूर करने को सदा उद्यत रहता है।
- परस्त्री की ओर देखना पाप समझता है – **''अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्''** **(अङ्क-5)**
- सन्तानहीनता का उसे बहुत दुःख है।
- प्रजा के लिए घोषणा करता है कि बन्धुहीनों का वह बन्धु है। **''येन येन वियुज्यन्ते प्रजाः स्निग्धेन बन्धुना''**
- शाप के कारण शकुन्तला को न पहचानने पर वह अपने पूर्णसंयम का परिचय देता है। **(अङ्क-5)**
- सर्वदमन (भरत) को देखकर वात्सल्य का भाव जाग उठता है। **(अङ्क-7)**
- वह शिकार खेलता हुआ कण्व ऋषि के आश्रम में प्रवेश करता है। **(अङ्क-1)**
- राजा, मृगया को व्यसन नही अपितु शारीरिक स्वास्थ्य एवं मनोविनोद का साधन मानता है, इससे शरीर हल्का फुल्का एवं फुर्तीला रहता है। **(अङ्क-2)**
- राजाद्वारा निर्मित शकुन्तला के चित्रको देखकर विदूषक और सानुमती मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं। **(अङ्क 6)**
- राजा दुष्यन्त के सौन्दर्य एवं व्यक्तित्त्व से सखियों सहित शकुन्तला प्रभावित होती है।
- दाक्षायणी (अदिति) भी दुष्यन्त के व्यक्तित्त्व की प्रशंसा करती हैं। **(अङ्क-7)**
- दुष्यन्त की वीरता से प्रभावित होकर इन्द्र अपना आधा इन्द्रासन छोड़ देते हैं, तथा उन्हें मन्दारमाला पहनाते हैं।
- इस प्रकार राजा दुष्यन्त कर्तव्यपरायण, प्रजाप्रेमी, पराक्रमी, विनीत और अविकत्थन है।

शकुन्तला

परिचय –

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका।
- विश्वामित्र और अप्सरा मेनका की पुत्री।
- महर्षिकण्व की धर्मपुत्री, (पालिता पुत्री)।
- नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से मुग्धा नायिका।
- **''शकुन्तैः परिवारिता परिपालिता वा।''** पक्षियों से आवृत या कुछ समय तक पक्षियों द्वारा परिपालित होनें के कारण 'शकुन्तला' यह सार्थक नाम पड़ा।
- मालिनी नदी के तट पर स्थित कण्वाश्रम में निवास।
- राजा द्वारा परित्यक्ता होनें के बाद मारीच आश्रम में निवास।
- राजादुष्यन्त की प्रेमिका/तृतीयपत्नी।
- सर्वदमन (भरत) की माँ।
- अनसूया एवं प्रियंवदा की प्रियसखी।

चारित्रिक विशेषतायें

1. अपूर्वसुन्दरी	7. स्वाभिमानिनी
2. प्रकृतिप्रिया	8. कार्यकुशला
3. आदर्शप्रेमिका	9. आदर्शपुत्री
4. आश्रमप्रेमी	10. मधुरभाषिणी
5. पतिव्रता पत्नी/आदर्शनारी	11. सच्ची सखी
6. सुशीला एवं लज्जावती	12. अन्तर्मन की सहजता

शकुन्तला के चारित्रिक गुण एवं कार्य

- शकुन्तला नैसर्गिक सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति है –
  - **इदं किलाव्याजमनोहरं वपुः...... (1-18)**
  - **इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी.... (1-17)**
  - **सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्.... (1-20)**
  - **अधरः किसलयरागः...... (1-21)**
  - **मानुषीषु कथं वा स्यात्...... (1-26)**
  - **अनाघ्रातं पुष्पं......... (2-10)**
  - **चित्रे निवेश्य...... (2-9)**
- शकुन्तला का पालन पोषण कण्व आश्रम में हुआ है, अतः उसमें स्वाभाविक सरलता, सुशीलता एवं मुग्धता है।
- राजा दुष्यन्त को देखते ही उसके हृदय में कामभाव जागृत होता है, परन्तु वह उसे व्यक्त नहीं करती – **किं नु खलु इमं जनं प्रेक्ष्य....। (अङ्क-1)**
- जब राजा दुष्यन्त उसकी प्रशंसा करता है, तो वह लज्जा से सिर नीचा कर लेती है। **'शकुन्तला अधोमुखी तिष्ठति'**। (अङ्क-1)
- प्रकृति से घनिष्ट प्रेम है। वह वृक्षों, वनस्पतियों और मृगादि से सहोदरों जैसा स्नेह करती है – **''अस्ति मे सोदरस्नेहोऽयेतेषु'' (अङ्क-1)**
- आश्रम के वृक्षों को जल देकर ही वह जलपान करती है, प्रियमण्डना होने पर भी वृक्षों के फूल, पत्तें नहीं तोड़ती – **''पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्.....।'' (अङ्क-4/9)**
- वह पतिव्रता है, विवाहोपरान्त पति के चिन्तन में ही व्याकुल और अन्यमनस्क है – **विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा।(4/1)**
- आश्रम से विदाई के समय वृक्षों और मृगादि से भी विदा लेती है। वनज्योत्स्ना से गले मिलती है, आश्रमीय मृगों को स्नेह करती है। **''सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्।'' (अङ्क-4/9)।**
- राम द्वारा परित्यक्त सीता यथा वाल्मीकि आश्रम में निवास करती हैं, वैसे ही राजा दुष्यन्त द्वारा परित्याग कर दिये जाने पर मारीच ऋषि के आश्रम में वह तपस्विनी के समान जीवन यापन करती रही, वह अपने आपको ही दोष देती है, राजा को नहीं।
- अपने पूज्यजनों का विशेष आदर करती है, राजा से अपने पैर नही दबवाती है। **(अङ्क-3)**
- शार्ङ्गरव के डॉटने पर उसे प्रत्युत्तर नहीं देती है। **(अङ्क-5)**
- ऋषि कण्व एवं आश्रमीय ऋषियों के प्रति उसकी अगाध श्रद्धा है, सखियों के प्रति उसका **निश्छल प्रेम है।**
- राजा के प्रति आसक्ति के कारण उसकी मनःस्थिति उद्विग्न हो जाती है, परन्तु अपनी मुँहबोली-सखियों से भी बताने में उसे **संकोच** होता है।
- वह अपनी सखियों के कहने पर राजा को एक प्रेमपत्र लिखती है – **तव न जाने हृदयं......... (अङ्क-3/13)**
- आश्रम के बाहर जाने पर कण्व शकुन्तला के ऊपर ही **अतिथिसत्कार का भार** सौंपते हैं।
- आश्रम से उसका विशेष लगाव है, आश्रमीय चोटिल मृग को वह इङ्गुदी का तेल लगाती है, उसे श्यामाक चावल की मुठ्ठियाँ भर-भर कर खिलाती है।
  यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्.......(अङ्क 4-14)
- शकुन्तला गर्भमन्थरा मृगवधू के सुखप्रसव का समाचार भेजने के लिए पिता कण्व से कहती है। **(अङ्क-4)।**

महर्षि कण्व

परिचय –

- आश्रम के कुलपति।
- शार्ङ्गरव, शारद्वत, नारद, हारीत, वैखानस आदि के गुरु।
- शकुन्तला के पालक पिता।
- 'काश्यप' नाम से नाटक में वर्णित।
- श्रौतविधि से अग्निहोत्र करने वाले एक ऋषि/साधक/तपस्वी।

चारित्रिक विशेषतायें

1. त्रिकालज्ञ नैष्ठिक ब्रह्मचारी।
2. तपस्वी एवं साधक
3. अत्यन्त दयालु, स्नेही एवं धार्मिक।
4. लौकिकव्यवहार में निपुण/लोकाचारज्ञाता/लौकिकज्ञ।
5. आध्यात्मिक प्रभावशाली व्यक्तित्त्व/सिद्धपुरुष।
6. वात्सल्यपूर्ण आदर्श पिता।
7. भविष्यवक्ता।
8. सहृदयता।

महर्षिकण्व के चारित्रिक गुण एवं कार्य

➤ कण्व का तपोबल असाधारण है, वे वर्तमान, भूत और भविष्य को जानने वाले हैं। **''तपःप्रभावात् प्रत्यक्षं सर्वमेव तत्रभवतः'' (अङ्क-7)**
➤ कण्व को ज्ञात है कि शकुन्तला पर विपत्ति आएगी, अतः उसके निवारणार्थ वे सोमतीर्थ जाते हैं। **''दैवमस्या प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थं गतः'' (अङ्क-1)**
➤ आकाशवाणी द्वारा कण्व को ज्ञात होता है कि दुष्यन्त का तेज (वीर्य) शकुन्तला के गर्भ में पल रहा है, वे इन दोनों के इस गान्धर्वविवाह से सहर्ष सहमत होते हैं। **''दुष्यन्तेनाहितं तेजो......'' (अङ्क-4/4)**
➤ उनके तपःप्रभाव के कारण शकुन्तला की विदाई के समय वृक्ष आभूषण और रेशमी वस्त्र आदि देते हैं – **''क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरुणा....।'' (अङ्क-4/5)**
➤ शकुन्तला के प्रति उनका प्रेम निःस्वार्थ है, उसकी विदाई के समय वे सगे माता-पिता के समान व्याकुल होते हैं– **''यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं......।'' (अङ्क 4/6) ''शममेष्यति मम शोकः......।'' (अङ्क 4-21)**
➤ ऋषि होते हुए भी लौकिकव्यवहार को अच्छी तरह जानते हैं। **''वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्।''** (अङ्क-4)
➤ ससुराल जाती हुई पुत्री शकुन्तला को सुन्दर उपदेश देते हैं– **''शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने।'' (अङ्क 4-18)**
➤ कण्व द्वारा शार्ङ्गरव के माध्यम से राजा दुष्यन्त को दिया गया सन्देश उनके लौकिकज्ञान की पराकाष्ठा को सूचित करता है – **''अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्।'' (अङ्क 4-17)**
➤ वे शकुन्तला के साथ अनसूया और प्रियंवदा को हस्तिनापुर नहीं भेजते, क्योंकि उन दोनों का भी विवाह करना है। विवाहिता के साथ कुमारी कन्याओं को भेजना अनुचित समझते हैं।
➤ कण्व शकुन्तला से कहते हैं कि राजा दुष्यन्त के पास पहुँचने पर वहाँ के कार्यों में व्यस्त होकर तुम मेरे विरह दुःख को भूल जाओगी – **''मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि'' (अङ्क 4-19)**
➤ वे कन्या को विदा करके तनावमुक्त जीवन का अनुभव करते हैं – **''अर्थो हि कन्या परकीय एव।'' (अङ्क 4-22)**
➤ कण्व अपने धर्म, तपस्या, यज्ञ आदि के अनुष्ठान में लगे रहते हैं, और विभिन्न तीर्थस्थानों की यात्रा करते हैं।
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में ही कण्व का प्रवेश होता है, किन्तु सम्पूर्ण नाटक में उनका प्रभाव परिलक्षित होता है।
➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अङ्क के कुल 22 श्लोकों में से 14 प्रसिद्ध श्लोक महर्षि कण्व (काश्यप) के द्वारा कहे गए हैं –

- यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं............... **(4-6)**
  (चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)
- ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव...... **(4-7)**
- अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः। **(4-8)**
- पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्। **(4-9)**
  (चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)
- अनुमतगमना शकुन्तला। **(4-10)**
- सङ्कल्पितं प्रथममेव मया तवार्थे। **(4-13)**
- यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्। **(4-14)**
- उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरूपरुद्धवृत्तिम्। **(4-15)**
- अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्। **(4-17)**
  (चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)
- शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं....। **(4-18)**
  (चार प्रसिद्ध श्लोकों में से एक)
- अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे। **(4-19)**
- भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी। **(4-20)**
- शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से.....। **(4-21)**
- अर्थो हि कन्या परकीय एव। **(4-22)**

➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अङ्क के **प्रसिद्ध चारों श्लोक महर्षि कण्व** (काश्यप) द्वारा कहे गये हैं।
➤ अनसूया, प्रियंवदा एवं शकुन्तला तीनों कण्व को **तात** (पिता) कहकर पुकारती हैं।

अनसूया एवं प्रियंवदा

परिचय –
➤ अनसूया और प्रियंवदा दोनों शकुन्तला की प्रिय सखियाँ।
➤ कण्वाश्रम में शकुन्तला के साथ निवास।

दोनों सखियों की चारित्रिक विशेषतायें

- सुन्दररूप एवं समान आयु।
- तपोवन-निवासिनी।
- सामान्य व्यवहारज्ञान से परिचित।
- कामशास्त्र से परिचित।
- आदर्श–सखियाँ।
- शकुन्तला की हितैषिणी।
- सौन्दर्यशालिनी।
- लोकव्यवहारज्ञाता।
- अतिथिसत्कार-निपुणा।
- परिहास/विनोदप्रिया।
- तर्कशीला।
- प्रकृतिप्रेमिका।
- आश्रमप्रिया।
- पारस्परिक स्नेह एवं आत्मीयता।

चारित्रिक गुण एवं कार्य

➤ दोनों सखियाँ शकुन्तला की समवयस्का हैं, और सौन्दर्य में लगभग उसके समान ही हैं – **''अहो समवयोरूपरमणीयं भवतीनां सौहार्दम्।''** (अङ्क-1)
➤ राजा दुष्यन्त तीनों सखियों के परस्पर सौहार्दभाव, समान अवस्था एवं सौन्दर्य की प्रशंसा करता है – **''अहो मधुरमासां दर्शनम्''** (अङ्क-1)
➤ दोनों सखियाँ शकुन्तला के व्यक्तित्त्व की प्रतिच्छाया सी प्रतीत होती हैं, इनको पृथक् कर शकुन्तला के अस्तित्व एवं व्यक्तित्व की कल्पना कठिन है।
➤ यदि शकुन्तला आश्रमाकाश की चन्द्रलेखा है, तो सखीद्वय तदनुगामी विशाखानक्षत्र **''किमत्र चित्रं यदि विशाखे शशाङ्करेखामनुवर्तेते।''** (अङ्क-3)

➤ प्रथम अङ्क से लेकर चतुर्थ अङ्क तक शकुन्तला के साथ दोनों सखियाँ उपस्थित रहती हैं।

➤ अनसूया एवं प्रियंवदा – ये दोनों पात्र महाकवि कालिदास की नाट्यप्रतिभा की निजी कल्पना से प्रादुर्भूत हैं।

➤ सौन्दर्य में शकुन्तला सबसे अधिक सुन्दर है, परन्तु आयु में अनसूया सबसे बड़ी ज्ञात होती है।

➤ सखियों में परस्पर घनिष्ट प्रेम है, तीनों ही एक दूसरे को सदा सुखी देखना चाहती हैं।

➤ दोनों सखियों का नाम सार्थक है। अनसूया **(न असूया इति अनसूया)** सभी के प्रति ईर्ष्या द्वेषादि से सर्वथा रहित है, तथा प्रियंवदा **(प्रियं वदति इति प्रियंवदा)** सदा प्रिय मधुर बोलने वाली है।

➤ सुख दुःख–दोनों में सदा शकुन्तला के साथ रहती हैं, और सर्वदा उसका हितचिन्तन करती हैं।

➤ तृतीय अङ्क में शकुन्तला को अस्वस्थ देखकर राजा दुष्यन्त से मिलाने का प्रयास करती हैं।

➤ दोनों सखियाँ कर्मठ, कार्यदक्ष और बुद्धिमती हैं, दोनों आश्रम के वृक्षों को उत्साहपूर्वक सींचती हैं।

➤ चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई के समय दोनों उसका श्रृङ्गार करती हैं।

➤ तृतीय अङ्क में अपनी बुद्धिमत्ता से राजा दुष्यन्त से यह वचन लेती हैं कि वह शकुन्तला को सदा सुखी रखेगा – **''परिग्रहबहुत्वेऽपि......सखी च युवयोरियम्।''** (अङ्क 3/17)

➤ दोनों सखियाँ शिष्ट, विनीत, मधुरभाषिणी और वाक्चतुर हैं, प्रथम अङ्क में राजा से मिलने पर अनसूया उनका परिचय पूछती है – **''कतम आर्येण राजर्षिवंशोऽलंक्रियते।''** (अङ्क-1)

➤ शकुन्तला के प्रति दुर्वासा के भीषण शाप को सुनकर दोनों का हृदय विदीर्ण हो जाता है, शापनिवृत्ति के लिए पूरा प्रयास करती हैं, तथा अपनी प्रियसखी शकुन्तला को कुछ भी नही बताती हैं।

➤ दोनों सखियाँ शकुन्तला से निःस्वार्थ प्रेम करती हैं, उसे सब प्रकार से सुखी और प्रसन्न रखना चाहती हैं। शकुन्तला जब कामज्वर से ग्रस्त होती है, तब कमलनाल, कमलपत्र और चन्दनादि के लेप से उसका उपचार करतीं हैं।

➤ दोनों सखियों के लिए शकुन्तला का संयोग जितना मधुर है, उतना ही वियोग दुःखदायी।

➤ राजा दुष्यन्त उनके आतिथ्यसत्कार, लोकव्यवहार, एवं मधुरभाषण से प्रसन्न होता है – **''भवतीनां सुनृतयैव गिरा कृतमातिथ्यम्।''** (अङ्क-1)

➤ अनसूया स्वभाव से वाग्विदग्ध, व्यवहारकुशल एवं प्रौढ है, राजा दुष्यन्त जब आश्रम में प्रवेश करता है, तो अनसूया ही उससे वार्तालाप प्रारम्भ करती है – **''आर्य, न खलु किमप्यत्याहितम् इयं नौ प्रियसखी मधुकरेणाभिभूयमाना कातरीभूता।''** (अङ्क-1)

➤ अनसूया राजा दुष्यन्त से उनका परिचय पूछती है, और अपनी सखी शकुन्तला के जन्म एवं माता-पिता के विषय में राजा से बताती है – **''श्रृणोत्वार्य अस्ति कोऽपि कौशिक इति गोत्रनामधेयो महाप्रभावो राजर्षिः।''** (अङ्क-1)

➤ प्रियंवदा, अनसूया की अपेक्षा अधिक विनोदप्रिया एवं चपल है। शकुन्तला जब अनसूया से अपने वल्कलों को ढीला करने को कहती है तो प्रियंवदा परिहास करती है कि मुझे उलाहना न देकर पयोधरविस्तारी अपने यौवन को उलाहना दो – **''अत्र पयोधरविस्तारयितृ आत्मनो यौवनमुपालभस्व।''** (अङ्क-1)

➤ शकुन्तला द्वारा वनज्योत्सना और आम्रवृक्ष की युगलजोड़ी को स्नेहदृष्टि से देखने पर प्रियंवदा मजाक करती है कि तुम भी इसी तरह अपने अनुकूल वर को प्राप्त करने की सोच रही हो – **''यथा वनज्योत्स्नाऽनुरूपेण पादपेन सङ्गता..... अहमप्यात्मनोऽनुरूपं वरं लभेयेति।''** (अङ्क-1)

➤ अनसूया में प्रियंवदा की अपेक्षा धैर्य तथा गाम्भीर्य अधिक है। दुर्वासा के शाप को सुनकर जब प्रियंवदा सहसा घबड़ा जाती है – **''हा धिक्, हा धिक् अप्रियमेव संवृत्तम्''** किन्तु अनसूया उसे धैर्यपूर्वक दुर्वासा को मनाने के लिए कहती है – **''गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम्।''** (अङ्क-4)

➤ प्रियंवदा चपलतावश इस दारुण शापवृत्तान्त को शकुन्तला से कहीं बता न दें इसके लिए अनसूया उसको मना करती है – **''प्रियंवदे! द्वयोरेव नौ मुख एष वृत्तान्तस्तिष्ठतु''**।

➤ प्रियंवदा के मन में यह शंका उठती है कि पिता कण्व गान्धर्वविवाह के वृत्तान्त को सुनकर न जाने क्या सोचेगें – **''तात इदानीमिमं वृत्तान्तं श्रुत्वा न जाने किं प्रतिपत्स्यत इति''** (अङ्क-4) तो अनसूया अपने विवेक बुद्धि का परिचय देती हुई कहती है कि – **''यथाऽहं पश्यामि तथा तस्यानुमतं भवेत्। गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया इत्ययं तावत् प्रथमः संकल्पः।''**

➤ अनसूया शकुन्तला के भविष्य के प्रति चिन्तित रहती है, वह किसी भी विषय पर सम्यक् उहापोह और विचार-विमर्श करती है। वह चिन्तित है कि राजा दुष्यन्त अपने नगर हस्तिनापुर पहुँचने के बाद शकुन्तला के साथ किये गये गान्धर्व विवाह को स्मरण करेगा या नहीं – **''अद्य स राजर्षिः इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।''** (अङ्क-4)

➤ प्रियंवदा निःशङ्क और निश्चिन्त स्वभाव वाली है। उसे पूरा विश्वास है कि सुन्दर आकृति वाला दुष्यन्त गुणरहित नहीं हो सकता – **''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति''** (अङ्क-4)

➤ अनसूया भविष्य के प्रति सचेष्ट और व्यावहारिक बुद्धिवाली है। तृतीय अङ्क में वह राजा से यह वचन लेती है कि अनेक रानियों के बीच शकुन्तला की उपेक्षा न करें। **''वयस्य बहुवल्लभाः राजानः श्रूयन्ते''**। राजा उनकी प्रियसखी शकुन्तला को गौरवपूर्ण स्थान देने का आश्वासन देता है।

➤ शकुन्तला की विदाई के अवसर पर उसे सजाने के लिए अनसूया आम की डाल पर नारियल के डिब्बे में केसरमालिका को रखे रहती है।

➤ अनसूया, प्रियंवदा की अपेक्षा तात कण्व के अधिक निकट है,

वह पिता के स्वभाव तथा विचारों को ठीक से जानती है, तात कण्व भी शकुन्तला की विदाई के अवसर पर अनसूया को ही बारम्बार सम्बोधित करते हैं।

- प्रियंवदा प्रणयव्यापार के स्वरूप को अच्छी प्रकार जानती है। शकुन्तला और दुष्यन्त के प्रेम में वह सूत्रधार का कार्य करती है। तृतीय अङ्क में शकुन्तला की अस्वस्थता के मूल कारण को प्रियंवदा ठीक से समझती है और उसके उपाय के रूप में शकुन्तला को मदनलेख (प्रेमपत्र) लिखने की प्रेरणा भी प्रियंवदा देती है, और उस प्रेमपत्र को फूलों में छिपाकर देवता के प्रसाद के बहाने राजा तक पहुँचाने का कार्य भी उसी के द्वारा सम्पन्न होता है।
- अनसूया अतिथि सत्कार करने में निपुण है, राजा दुष्यन्त के आश्रम आने पर वह शकुन्तला से कहती है– **''हला शकुन्तले, गच्छोटजम्। फलमिश्रमर्घमुपहर।''**
- श्राप को सुनकर प्रियंवदा दुर्वासा के समीप जाकर शकुन्तला की मङ्गलकामना हेतु क्षमायाचना करती है। (अङ्क-4)
- अनसूया विचारशील और मितभाषिणी है, वह हँसी, मजाक की बातों में विशेष भाग नहीं लेती। वह सशङ्कवृत्ति की है, सहसा किसी बात पर विश्वास नहीं करती। जबकि प्रियंवदा शीघ्र विश्वास करने वाली, परिहासप्रिया एवं वाक्पटु है।
- अनसूया भविष्य के सुख की विशेष चिन्ता करती है, प्रियंवदा वर्तमान को विशेष महत्त्व देती है।
- अनसूया अधिक व्यवहारिक, धीर और परिपक्व बुद्धि की है जबकि प्रियंवदा भावुक एवं चञ्चल है।

विदूषक (माधव्य)

परिचय –

- राजा दुष्यन्त का अन्तरङ्ग मित्र।
- हास्यरस का एक पात्र।
- 'माधव्य' नामक एक ब्राह्मण।

चारित्रिक विशेषतायें

- भोजनपटु।
- डरपोक एवं अकर्मण्य।
- राजा का परमप्रिय मित्र एवं परामर्शदाता।
- भीरु एवं सरल स्वभाव।

विदूषक का लक्षण

कुसुमवसन्ताद्यभिधः कर्मवपुर्वेषभाषाद्यैः।
हास्यकरः कलहरतिर्विदूषकः स्यात् स्वकर्मज्ञः।

विदूषक स्वामिभक्त, मनोविनोद में निपुण, कुपित नायिकाओं को मनाने वाला, एवं सच्चरित्र होता है। वह अपने ऊँटपटाँग कार्यों, विकृत अङ्गों तथा वेषभूषादि के द्वारा हास्य का वातावरण प्रस्तुत करता है। वह नायक का विश्वासपात्र तथा उसके प्रणय सम्बन्धी क्रियाकलापों में सहायता पहुँचाता है।

विदूषक (माधव्य) के गुण एवं कार्य

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के विदूषक (माढव्य) का सर्वप्रथम दर्शन द्वितीय अङ्क में होता है।
- विदूषक माधव्य भोजनप्रिय एवं पेटू है। राजा दुष्यन्त शकुन्तला के प्रणयव्यापार में उनसे सहायता करने के लिए कहता है तो वह **''किं मोदकखण्डिकायाम्''** कहकर अपनी पेटपूजा पटुता का परिचय देता है।
- इसी प्रकार षष्ठ अङ्क में राजादुष्यन्त शकुन्तला के वियोग में अँगूठी से उपालम्भ देते हैं किन्तु विदूषक को वहाँ भी बुभुक्षा पीड़ित करती है– **''कथं बुभुक्षया खादितव्योऽस्मि''** (अङ्क-6)
- वह स्वभाव से अत्यन्त भीरु एवं डरपोक है। शकुन्तला के दर्शन हेतु वह भी उत्सुक था, पर जब वह राक्षसों का वृत्तान्त सुनता है, तब डर जाता है। (अङ्क-2)
- राजा के मृगयाव्यसन के कारण उसको विश्राम का तनिक भी अवसर प्राप्त नहीं होता है, इससे वह अत्यन्त दुःखी है– **'एतस्य मृगयाशीलस्य राज्ञो वयस्यभावेन निर्विण्णोऽस्मि।''** (अङ्क-2)
- विदूषक अपने प्रत्येक क्रियाकलाप एवं भावभङ्गिमा से सभी को हँसाता है। जब राजा दुष्यन्त के सामने एक ही साथ ऋषियों की यज्ञरक्षा तथा माता की आज्ञा से राजधानी लौटने के दो कार्य उपस्थित होते हैं, तो विदूषक राजा से कहता है कि – **''त्रिशङ्कुरिवान्तरा तिष्ठ।''** (अङ्क-2)
- विदूषक यत्र तत्र अपनी मन्दबुद्धिता का भी परिचय देता है, परन्तु वैसे बहुत चतुर है। षष्ठ अङ्क में राजा के द्वारा आम्रमञ्जरी को मदनबाण कहने पर वह काष्ठदण्ड लेकर मारने दौड़ता है। उसकी मूर्खता पर खिन्न राजा भी हँस पड़ता है।
- विदूषक सरलहृदय का व्यक्ति है, राजा को सन्देह हुआ कि यह राजधानी में जाकर कहीं हमारे प्रणयप्रसङ्ग की चर्चा हमारी रानियों से न कर दे, अतः राजा दुष्यन्त ने उससे कहा कि वे सब मजाक की बातें हैं।
  ''परिहासविजल्पितं सखे न परमार्थेन गृह्यतां वचः'' (अङ्क-2)
- विदूषक राजा की इस बात को सच मान लेता है और रानियों से इसकी कोई चर्चा नहीं करता है।
- रानी वसुमती के आने पर वह शकुन्तला का चित्र लेकर भाग जाता है, और राजा को वसुमती के क्रोध से बचाता है।
- पञ्चम अङ्क के प्रारम्भ में रूठी रानी हंसपदिका को मनाने के लिए राजा विदूषक को ही भेजता है।
- षष्ठ अङ्क में इन्द्र का सारथि मातलि विदूषक को पीटता है जिससे राजा का क्रोध प्रस्फुटित होता है। तभी राजा दानवों के वधार्थ स्वर्ग को जाता है।
- वह राजा को समय-समय पर सान्त्वना देता है, उसका मनोरञ्जन करता है, और उचित परामर्श भी देता है। (अङ्क-6)

गौतमी

- **परिचय** – ऋषि कण्व की धर्मभगिनी
- कण्वाश्रम की सर्वाधिक वृद्धा तपस्विनी/वरिष्ठ महिला
- आश्रम की व्यवस्थापिका/अध्यक्षा

चारित्रिक विशेषताएँ

- सम्मानित महिला
- वरिष्ठ तपस्विनी
- बुद्धिमती
- व्यवहारकुशल एवं लोकव्यवहार की ज्ञाता
- अभिभाविका
- अतीव सरल एवं निच्छल व्यक्तित्त्व
- ममतामयी एवं वात्सल्य की प्रतिमूर्ति

चारित्रिक गुण एवं कार्य

- महर्षि कण्व का गौतमी के प्रति सम्मानभाव है, इसीलिए शकुन्तला के साथ उसे हस्तिनापुर तक भेजा जाता है।
- गौतमी में अवस्थानुरूप गाम्भीर्य, सहिष्णुता एवं विवेकशीलता दृष्टिगोचर होती है, राजदरबार में दुष्यन्त जब शकुन्तला के साथ अपने सम्बन्ध को अस्वीकार कर देता है, तब वह शकुन्तला का घूँघट हटाकर स्वयं उसे अपने सम्बन्ध को प्रमाणित करने का आदेश देती है।
- गुरुजनों तथा बन्धु-बान्धवों से पूछे बिना दुष्यन्त एवं शकुन्तला के प्रेम सम्बन्धों को वह अनुचित मानती है।
- शकुन्तला के प्रति उसका हृदय माँ की वात्सल्यमयी ममता से ओतप्रोत है। वह उसे पुत्रीवत् स्नेह करती है। राजा दुष्यन्त द्वारा अस्वीकार कर दिये जाने पर शकुन्तला जब शार्ङ्गरव आदि के पीछे-पीछे आने लगती है तो उस समय गौतमी का वात्सल्यभाव जाग उठता है – **वत्स शार्ङ्गरव, अनुगच्छतीयं खलु नः करुणपरिदेविनी शकुन्तला........किं वा मे पुत्रिका करोतु।'' (अङ्क 5)**
- कण्व के आश्रम में गौतमी अभिभावक की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है, तापसकन्याओं की देखरेख का उत्तरदायित्व उसी का है।
- प्रथम अङ्क में प्रियंवदा के परिहास से परेशान हुई शकुन्तला गौतमी से शिकायत करने को कहती है –
  इयम् असम्बद्धप्रलापिनी....गौतम्यै निवेदयिष्यामि (अङ्क-1)
- शकुन्तला की अस्वस्थता का समाचार सुनकर गौतमी शान्तिजल लेकर उसके ऊपर छिड़कती है और वात्सल्यभाव से पूछती है–
  'जाते, लघुसन्तापानि तेऽङ्गानि' (अङ्क-3)
- शकुन्तला की विदाई में विलम्ब होता देख गौतमी महर्षिकण्व से भी वापस लौट जाने का निवेदन करती है –
  जाते, परिहीयते गमनवेला....निवर्ततां भवान्। (अङ्क-4)
- कण्व द्वारा शकुन्तला को उपदेश दिये जाने पर गौतमी उसे ठीक से स्मरण करने को कहती है –
  जाते, एतत् खलु सर्वमवधारय। (अङ्क-4)
- गौतमी शकुन्तला को सर्वदा, **'वत्से', 'जाते', 'पुत्रि'** आदि यही सम्बोधन करती है इससे शकुन्तला के प्रति उसका अगाध स्नेह स्वयं व्यक्त होता है।
- शकुन्तला को छोटी-छोटी व्यवहार और शिष्टाचार की बातें भी गौतमी बताती हैं, विदाई के समय कण्व ऋषि के आने पर शकुन्तला को प्रणाम करने को कहती है।
  ''आचारं तावत् प्रतिपद्यस्व'' (अङ्क-4)
- कण्व द्वारा पुत्री शकुन्तला के लिए चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करने का आशीर्वाद सुनकर गौतमी अत्यन्त प्रसन्न होकर कहती है – यह तो केवल आशीर्वाद नहीं, अपितु वरदान है।
  भगवन्, वरः खल्वेषः, नाशीः (अङ्क-4)
- आश्रम की संरक्षिका, व्यवस्थापिका, अध्यक्षा या वरिष्ठ तपस्विनी के रूप में गौतमी का सम्मान सभी आश्रमवासी करते हैं। शकुन्तला को हस्तिनापुर ले जाने के लिए शार्ङ्गरव आदि को गौतमी ही आदेश देती है –
  'गौतमि, आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः शकुन्तलानयनाय' (अङ्क-4)

शार्ङ्गरव और शारद्वत

- **परिचय** – शार्ङ्गरव और शारद्वत दोनों कण्व ऋषि के शिष्य।

चारित्रिक गुण एवं कार्य

- कण्व ऋषि इनके नाम के साथ आदरसूचक 'मिश्र' शब्द का प्रयोग करते हैं –
  'आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः' (अङ्क-4)
  'क्व ते शार्ङ्गरवमिश्राः' (अङ्क-4)
- दोनों परिपक्व आयु वाले तथा विद्यानिष्णात हैं।
- गुरु कण्व का इन दोनों के ऊपर अटूट विश्वास है, तभी तो उनकी देखरेख में शकुन्तला को पतिगृह (हस्तिनापुर) भेजते हैं।
- राजा दुष्यन्त इन दोनों के गरिमामय व्यक्तित्व को देखकर उन्हें गुरु समान कहता है –
  ''गुरुशिष्ये गुरुसमे'' – (अङ्क-6)
- शास्त्रज्ञान के साथ ही साथ इन दोनों ऋषियों में लौकिकज्ञान भी विद्यमान है।
- शकुन्तला की विदाई के समय मार्ग में सरोवर को देखकर शार्ङ्गरव महर्षि कण्व से लौट जाने को कहता है –
  ''भगवन् ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते। तदिदं सरस्तीरम्.......।'' (अङ्क-4)
- दोनों ऋषियों को आश्रम के जीवन से प्रेम है और नगर जीवन से घृणा।
- हस्तिनापुर नगर में प्रवेश करते समय एक ओर जहाँ शार्ङ्गरव राजभवन को अग्नि की लपटों से घिरा हुआ समझता है –
  'जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव' (अङ्क-5)
- वहीं दूसरी ओर शारद्वत नगर के भोगासक्त लोगों को उसी प्रकार समझता है, जिस प्रकार स्नात व्यक्ति तैलासिक्त को,

पवित्र व्यक्ति अपवित्र को, प्रबुद्ध व्यक्ति सोये हुए को, और स्वच्छन्दचारी व्यक्ति बन्धनयुक्त को समझता है –
''अभ्यक्तमिव स्नातः शुचिरशुचिमिव'' (अङ्क-5/11)

- इन दोनों में शार्ङ्गरव अधिक आयु का है, ऋषि कण्व को उस पर अधिक विश्वास है, अतः राजा दुष्यन्त के लिए **(अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनान्----अङ्क-4.17)** रूपी संदेश उसी को देते हैं। शार्ङ्गरव ही शकुन्तला के साथ हस्तिनापुर जाने वाले दल का नेता है, जबकि ऋषि शारद्वत उससे छोटा और शान्तस्वभाव का है।
- शार्ङ्गरव, शारद्वत की अपेक्षा अधिक वाक्पटु एवं लौकिक व्यवहार का ज्ञाता है, जबकि शारद्वत मितभाषी है। उसके विचार दार्शनिक हैं, उसमें दूसरों के प्रति सहानुभूति है।
- शार्ङ्गरव बहुत बोलने वाला, क्रोधी, असहिष्णु, कठोर और अशान्त प्रकृति का है। वह अपने नाम को चरितार्थ करता है, क्योंकि शार्ङ्गरव का शाब्दिक अर्थ है – **'धनुष के समान शब्द करने वाला।'** राजा दुष्यन्त जब शकुन्तला को नहीं पहचानता और विवाह को अस्वीकार कर देता है, तो वह उसे शठ, अधार्मिक और ऐश्वर्योन्मत्त आदि कहकर फटकारता है –
''मूर्च्छन्त्यमी विकाराः प्रायेणैश्वर्यप्रमत्तेषु।'' (अङ्क-5/18)
- शार्ङ्गरव अत्यन्त निर्भय एवं स्पष्टवादी है। दुष्यन्त जब अपने आपको शकुन्तला का पति नहीं मानता, तो शार्ङ्गरव उसे चोर तक कहता है – **''पात्रीकृतो दस्युरिवासि येन'' अङ्क-(5/20)**
- शारद्वत मितभाषी, अक्रोधी, सहिष्णु तथा शान्त प्रकृति का है, जब राजा दुष्यन्त और शार्ङ्गरव का विवाद उग्र रूप धारण करता है, तब वही उसे शान्त करता है –
''शार्ङ्गरव, विरम त्वमिदानीम्'' (अङ्क-5)
- शारद्वत राजा दुष्यन्त से अन्ततः कहता है कि शकुन्तला तुम्हारी पत्नी है, तुम इसे रखो या छोड़ो, हम लोग जाते हैं –
''तदेषा भवतः कान्ता, त्यज वैनां गृहाण वा'' (अङ्क-5)
- शार्ङ्गरव व्यवहारकुशल नहीं है, वह राजा से झगड़े को बढ़ाता है, जबकि शारद्वत अत्यन्त व्यवहारिक है वह झगड़े को निपटाता है। शारद्वत के कारण ही विवाद शान्त हुआ।
- दुष्यन्त के अपमानजनक व्यवहार से दुखी शकुन्तला जब रोने लगती है, तब शार्ङ्गरव उसे डाँटता है –
''अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः'' (अङ्क-5/24)
- जब दरबार में शकुन्तला को छोड़कर गौतमी सहित दोनों शिष्य आश्रम लौटने लगते हैं, तब शकुन्तला भी उनके पीछे-पीछे लौटने लगती है, तभी शार्ङ्गरव पुनः शकुन्तला को कठोर शब्दों में डाँटता है– **''किं पुरोभागे, स्वातन्त्र्यमवलम्बसे'' (अङ्क-5)**

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में प्रयुक्त छन्द एवं अलङ्कार

क्र.	श्लोक (वक्ता)	छन्दः	अलङ्कारः
1.	**विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा.......।** (ऋषि दुर्वासा) (4-1) नेपथ्य से	**वंशस्थ** (प्रत्येक चरण में 12 वर्ण)	● काव्यलिङ्ग, उपमा, और श्लेष अलङ्कार।
2.	**यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीनाम्.......। (4-2)** (कण्व का शिष्य)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● समासोक्ति, तुल्ययोगिता, यथासंख्य और उत्प्रेक्षा अलंकार।
3.	**अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती मे।** (4-3) (कण्व का शिष्य)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● समासोक्ति काव्यलिङ्ग, और अर्थान्तरन्यास अलङ्कार ● नाटक में ये तीसरा **पताकास्थानक** है।
	कर्कन्धूनामुपरि तुहिनं रञ्जयत्यग्रसन्ध्या.......। (बँगला संस्करण में प्राप्त प्रक्षिप्त श्लोक)	**मन्दाक्रान्ता** (प्रत्येक पाद में 17 वर्ण)	● स्वभावोक्ति अलङ्कार।
	पादन्यासं क्षितिधरगुरोर्मूर्ध्नि कृत्वा सुमेरोः......। (बँगला संस्करण में प्राप्त प्रक्षिप्त श्लोक)	**मन्दाक्रान्ता** (प्रत्येक पाद में 17 वर्ण)	● समासोक्ति, अर्थान्तरन्यास और श्लेष अलङ्कार।
4.	**दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः.....।** (4-4) (छन्दोमयी आकाशवाणी)	**अनुष्टुप् या श्लोकवृत्त** (प्रत्येक पाद में 8 वर्ण)	● उपमा अलंकार ● इस श्लोक में मार्ग नामक गर्भसन्धि का अङ्ग है।

5.	**क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डु तरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतम्......।** (4-5) (कण्व का शिष्य)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	उपमालङ्कार।
6.	**यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया......।** (4-6) (महर्षि कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	● व्यतिरेक अलङ्कार। ● **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
7.	**ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।** (4-7) (महर्षि कण्व)	**अनुष्टुप्** (प्रत्येक पाद में 8 वर्ण)	● उपमा अलङ्कार। ● इस श्लोक में क्रम नामक गर्भसन्धि का अङ्ग तथा आशीः नामक नाटकीय अलङ्कार है।
8.	**अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः।** (4-8) (महर्षि कण्व)	**त्रिष्टुप् (वैदिक छन्द)** (प्रत्येक पाद में 11 वर्ण)	● परिकर अलङ्कार।
9.	**पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या......। (4-9)** (महर्षि कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	● समासोक्ति, और काव्यलिङ्ग अलङ्कार। ● **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
10.	**अनुमतगमना शकुन्तला......।** (4-10) (महर्षि कण्व)	**अपरवक्त्रछन्दः** (प्रथम और तृतीय चरण में 11 वर्ण द्वितीय और चतुर्थचरण में 12 वर्ण)	● परिणाम अलङ्कार।
11.	**रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभिः।** (4-11) (देवताओं की आकाशवाणी)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● परिकर, तुल्योगिता, काव्यलिङ्ग और हेतु अलङ्कार।
12.	**उद्गलितदर्भकवला मृग्यः......।** (प्रियंवदा) (4-12)	**आर्या** (प्रथम पाद में 12 वर्ण)	● उत्प्रेक्षा और समासोक्ति अलङ्कार।
13.	**सङ्कल्पितं प्रथममेव मया तवार्थे....।** (4-13) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● समासोक्ति, तुल्ययोगिता सम और काव्यलिङ्ग, अलङ्कार।
14.	**यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनाम्** (4-14) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● स्वभावोक्ति अलङ्कार।
15.	**उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरूपरुद्धवृत्तिम्....।** (4-15) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका।** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● काव्यलिङ्ग अलङ्कार।
16.	**एषापि प्रियेण विना गमयति....।** (4-16) **(अनसूया)**	**आर्या** (प्रथम पाद में 12 वर्ण)	● अर्थान्तरन्यास अलङ्कार।
17.	**अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मनः....।** (4-17) (काश्यप/कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	● अप्रस्तुतप्रशंसा अलङ्कार। ● **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
18.	**शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने....।** (4-18) (काश्यप/कण्व)	**शार्दूलविक्रीडितम्।** (प्रत्येक पाद में 19 वर्ण)	● रूपक, हेतु, और अर्थान्तरन्यास अलङ्कार। ● इस श्लोकों में 'उपदिष्ट' नामक नाटकीय लक्षण है। **प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक।**
19.	**अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे......।** (4-19) (काश्यप/कण्व)	**हरिणी** (प्रत्येक पाद में 17 वर्ण)	● उपमा, समुच्चय और काव्यलिङ्ग अलङ्कार। ● कुछ लोग ''अस्मान् साधु...." के स्थान पर इसे प्रसिद्ध चार श्लोकों में गिनते हैं।
20.	**भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी।** (4-20) (काश्यप/कण्व)	**वसन्ततिलका** (प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)	● मालादीपक अलङ्कार। ● कुछ लोग ''पातुं न प्रथमं....."

			के स्थान पर इसे भी चार प्रसिद्ध श्लोकों में गिनते हैं।
21.	**शममेष्यति मम शोकः कथं नु.....।** (4-21) (काश्यप/कण्व)	**आर्या जातिः**	काव्यलिङ्ग अलङ्कार।
22.	**अर्थो हि कन्या परकीय एव....।** (4-22) (काश्यप/कण्व)	**इन्द्रवज्रा** (प्रत्येक पाद में 11 वर्ण)	उत्प्रेक्षा अलङ्कार।

➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चारों प्रसिद्ध श्लोक महर्षि कण्व ने कहे हैं।
➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में कुल 22 श्लोक हैं, जिसमें 14 श्लोक महर्षि कण्व के द्वारा बोले गए हैं।
➢ चतुर्थ अङ्क में ''**उद्गलितदर्भकवला मृग्यः**'' (4.12) इस श्लोक को प्रियंवदा तथा ''**एषापि प्रियेण विना गमयति रजनी**'' (4.16) इस एक श्लोक को अनसूया बोलती है।
➢ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के केवल चतुर्थ अङ्क में महर्षि कण्व का दर्शन होता है।
➢ चतुर्थ अङ्क के बाद अनसूया और प्रियंवदा का वर्णन नहीं मिलता है।

महाकवि शूद्रक का परिचय

➢ **वास्तविक नाम-** शिमुक या सिमुक।
➢ **समय-** प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व।
➢ **आयु-** 100 वर्ष 10 दिन।
➢ शूद्रक ने स्वेच्छा से आत्मदाह किया था।
➢ महापराक्रमी, सुन्दर आकृति वाले एवं ब्राह्मणों में श्रेष्ठ थे।

''द्विजमुख्यतमः कविर्बभूव प्रथितः शूद्रक इत्यगाधसत्त्वः।''

➢ शूद्रक ऋग्वेद, सामवेद आदि वेदों के ज्ञाता, गणित, संगीत तथा हस्तिविद्या में निपुण थे।
➢ महाकवि शूद्रक शिव-पार्वती के भक्त थे।
➢ शूद्रक ने शिव के प्रताप से दिव्य दृष्टि पाकर, पुत्र को राजसिंहासन देकर, महामहिमशाली अश्वमेघ यज्ञ भी किया था।
➢ 'मृच्छकटिकम्' शूद्रक की एक मात्र रचना है।
➢ शूद्रक प्रथम नाटककार हैं, जिन्होंने तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था को ही अपनी लेखनी का आधार बनाया।
➢ **रीति-** वैदर्भी

मृच्छकटिकम् का परिचय

➢ **लेखक-** शूद्रक
➢ **विधा-** प्रकरण
➢ **अङ्क-** 10(दस)
➢ **प्रधान/अङ्गी रस-** शृङ्गार
➢ **गौण/अङ्ग रस-** हास्य, करुण, भय तथा अद्भुत।
➢ **उपजीव्य-** भासकृत दरिद्रचारुदत्त
➢ डॉ. कान्तानाथ शास्त्री तेलंग के अनुसार 'गुणाढ्य' की बृहत्कथा में वर्णित 'गोपालदारक तथा आर्यक के विद्रोह की कथा।'
➢ **कुल श्लोक संख्या-** 380 (तीन सौ अस्सी)
➢ **नायक-** चारुदत्त (धीरप्रशान्त)
➢ **नायिका-** 1. कुलजा- धूता
2. वेश्या (गणिका)- वसन्तसेना (प्रगल्भा नायिका)
➢ **प्रतिनायक-** शकार (संस्थानक)
➢ **अन्य पात्र-** आर्यक, शर्विलक, विट, सूत्रधार, नटी, रदनिका, मदनिका, धूता, चन्दनक, संवाहक, रोहसेन आदि।
➢ **पात्र संख्या-** 24 पुरुष और 8 स्त्रीपात्र हैं। सूत्रधार और नटी को छोड़ने पर 30 पात्र स्वीकृत हैं।
➢ मञ्च पर न आने वाले पात्र- जूर्णवृद्ध, पालक,रेभिल,सिद्ध।

मृच्छकटिकम् में अङ्कवार श्लोक

अङ्क	नाम	श्लोक
प्रथम	अलङ्कारन्यास	58
द्वितीय	द्यूतकर संवाहक	20
तृतीय	सन्धिच्छेद	30
चतुर्थ	मदनिका शर्विलक	33
पञ्चम	दुर्दिन	52
षष्ठ	प्रवहण विपर्यय	27
सप्तम	आर्यकापहरण	9
अष्टम	वसन्तसेना मोटन	47
नवम	न्यायालय (व्यवहार)	43
दशम	संहार (उपसंहार)	61
	योग-	**380**

मृच्छकटिक- एक तथ्यात्मक अध्ययन

➢ चारुदत्त धीरप्रशान्त कोटि का नायक है।
➢ चारुदत्त उज्जयिनी का गरीब ब्राह्मण है।
➢ वह जन्मना ब्राह्मण और कर्मणा सार्थवाह (व्यापारी) है।
➢ वसन्तसेना उज्जयिनी की ही एक प्रसिद्ध गणिका है।
➢ मृच्छकटिकम् नामक प्रकरण में चारुदत्त और वसन्तसेना के पारस्परिक प्रेम का वर्णन है।
➢ धूता, चारुदत्त की विवाहिता पत्नी है।

- चारुदत्त और धूता के बच्चे का नाम रोहसेन है।
- मैत्रेय इस प्रकरण का विदूषक है। वह जाति से ब्राह्मण तथा चारुदत्त का परम मित्र है।
- शकार, राजा पालक का साला है तथा वसन्तसेना से एकतरफा प्रेम करता है।
- शर्विलक, चौर्यकर्म में निपुण एक ब्राह्मण है, जो वसन्तसेना की क्रीतदासी 'मदनिका' का प्रेमी है।
- चारुदत्त का पूर्वभृत्य संवाहक है जो जुए में सब कुछ हारकर बौद्धभिक्षु बन जाता है।
- सूत्रधार के साग्रह अनुरोध, सिद्धान्न भोजन और प्रचुर दक्षिणा के प्रलोभन पर भी मैत्रेय (विदूषक) उसके घर भोजन करने से इनकार कर देता है।
- चारुदत्त के मित्र जूर्णवृद्ध द्वारा भेजा हुआ शाल मैत्रेय लेकर आता है।
- मैत्रेय अत्यन्त डरपोक है इसलिए मातृबलि देने चौराहे पर रदनिका (चारुदत्त की दासी) के साथ जाता है।
- विट और चेट के साथ शकार द्वारा पीछा किये जाने पर वसन्तसेना, चारुदत्त के घर में छिपती है।
- रात के अँधेरे में शकार, रदनिका को वसन्तसेना समझकर पकड़ लेता है, इस पर मैत्रेय शकार को मारने दौड़ता है।
- वसन्तसेना अपना आभूषण चारुदत्त के घर में रख देती है और बताती है कि वह **'कामदेवायतन उद्यान'** में चारुदत्त को देखकर उसके प्रति अनुरक्त हो गयी थी।
- संवाहक पाटलिपुत्र से आकर उज्जयिनी में चारुदत्त का सेवक बन जाता है।
- चारुदत्त के दरिद्र हो जाने पर संवाहक जुआरी हो जाता है।
- जुए में सर्वस्व हारने पर, चारुदत्त का पुराना नौकर जानकर वसन्तसेना, संवाहक को छुड़ा लेती है।
- वसन्तसेना के हाथी का नाम **'खुण्डमोटक'** है।
  यः सः आर्यायाः खुण्डमोटको नाम दुष्टहस्ती।
- चारुदत्त को रेभिल का संगीत अत्यन्त पसन्द है।
- शर्विलक, चारुदत्त के घर में सेंध काटकर वसन्तसेना के रखे हुए गहने चुरा लेता है और अपनी प्रेयसी मदनिका को गुलामी की जंजीर से छुड़ाता है।
- धूता अपने पति चारुदत्त को चोरी के कलङ्क से बचाने के लिए अपना 'रत्नावली' नामक आभूषण वसन्तसेना के पास भेजती है।
- वसन्तसेना अपनी माँ के कहने पर भी शकार के पास जाने से मना करती है।
- राजा पालक द्वारा आर्यक को बंदी बनाया जाता है।
- अपने मित्र के बंदी बनाए जाने पर शर्विलक मदनिका को रेभिल के घर पहुँचाकर स्वयं आर्यक को छुड़ाने जाता है।
- वसन्तसेना, धूता के आभूषण को मैत्रेय द्वारा वापस कर देती है।
- वसन्तसेना शाम को चारुदत्त के घर जाती है और वर्षा के कारण रात वहीं बिताती है।
- चारुदत्त **'पुष्पकरण्डक'** नामक बगीचे में जाता है और वसन्तसेना को वहीं बुलवाता है।
- चारुदत्त का पुत्र 'रोहसेन' सोने की गाड़ी के लिए रोता है, इस पर वसन्तसेना अपना आभूषण गाड़ी बनवाने के लिए दे देती है।
- आर्यक, राजा पालक के कैद से भाग जाता है।
- भूलवश वसन्तसेना शकार की गाड़ी में बैठ जाती है।
- बैलगाड़ी उद्यान में पहुँचने पर वसन्तसेना शकार के प्रणय प्रार्थना को ठुकरा देती है, जिससे क्रुद्ध होकर शकार उसका गला दबा देता है।
- वसन्तसेना के मूर्च्छित होने से मृत समझकर शकार भाग जाता है और चारुदत्त के विरुद्ध हत्या का आरोप लगाकर न्यायालय में मुकदमा करता है।
- बौद्धभिक्षु संवाहक वसन्तसेना की रक्षा करता है।
- चारुदत्त पर अभियोग चलता है और विदूषक के बगल से वसन्तसेना का आभूषण मिलने पर चारुदत्त को फाँसी का दण्ड मिलता है।
- फाँसी के वक्त ही भिक्षु वसन्तसेना के साथ वध्यस्थल पर जाता है, शकार भाग खड़ा होता है।
- पालक को मारकर आर्यक राजा बनता है और झूठे अभियोग चलाने के कारण शकार को फाँसी होती है किन्तु चारुदत्त उसे माँफ कर देता है।
- चारुदत्त को राज्य मिलता है और वसन्तसेना को वधू का सम्मानित पद।
- भरतवाक्य के साथ प्रकरण समाप्त होता है।
- मृच्छकटिकम् का अर्थ है - 'मिट्टी की गाड़ी।'
- मृच्छकटिकम् में सात प्राकृतों (शौरसेनी, अवन्तिका, प्राच्या, मागधी, शकारी, चाण्डाली, और ढक्की) का प्रयोग है।
- मृच्छकटिकम् के 30 पात्रों में केवल 6 पात्र ही संस्कृत बोलते हैं।
- संस्कृत बोलने वाले पात्र-चारुदत्त, आर्यक, शर्विलक, विट, सूत्रधार, अधिकरणिक।
- यह प्रगतिवादी एवं समाजवादी रूपक है। इसमें शोषित, दलित एवं उपेक्षित वर्ग का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण है।
- जुआ खेलने वालों का प्रमुख- सभिक।
- इसमें वैदर्भी रीति अपनायी गयी है, कहीं-कहीं गौडी रीति का भी आश्रय लिया गया है।
- निम्न कोटि के पात्रों की संख्या अधिक है।
- शकार की बहन राजा पालक की रखैल है।
- मृच्छकटिकम् की कथा आदर्शवादी न होकर यथार्थवादी है।
- प्राकृतों में देशी शब्दों की प्रधानता है।
- **चोरों के देवता**- कार्तिकेय- (**नमो वरदाय कुमार कार्तिकेयाय**)
- **चोरों के गुरु**- कनकशक्ति, ब्रह्मण्यदेव, देवव्रत तथा भास्करनन्दी। (**नमः कनकशक्तये ब्रह्मणदेवाय देवव्रताय नमो भास्करनन्दिने**)
- शर्विलक के गुरु- योगाचार्य। (**नमो योगाचार्याय यस्याहं प्रथमः शिष्यः**)

- योगरोचना- ऐसा द्रव्य जिसको लगाने से चोर आदि को कोई देख नहीं सकता।

मृच्छकटिकम्- अङ्कवार प्रमुख घटनाएँ

प्रथम अङ्क

- चारुदत्त की दरिद्रता का मार्मिक चित्रण।
- विट और चेट सहित शकार के द्वारा वसन्तसेना का पीछा करना।
- अन्धकार का लाभ उठाकर वसन्तसेना का चारुदत्त के घर में छिपना तथा अपने आभूषणों को न्यास (धरोहर) के रूप में चारुदत्त के घर में छोड़ना।

द्वितीय अङ्क

- चारुदत्त के पूर्व सेवक संवाहक का द्यूत में ऋणी होकर वसन्तसेना के पास आना तथा वसन्तसेना द्वारा उसे ऋणमुक्त कराना।
- जुआरी संवाहक का बौद्धभिक्षु बन जाना।
- वसन्तसेना के मत्त हाथी का संवाहक पर आक्रमण करना,सेवक द्वारा संवाहक की रक्षा करना तथा पुरस्कार के रूप में चारुदत्त अपनी बहुमूल्य चादर सेवक को देना।

तृतीय अङ्क

- चारुदत्त के घर में सेंध मारकर शर्विलक द्वारा वसन्तसेना के आभूषणों को चुराना।
- चोरी हुए आभूषणों के बदले में चारुदत्त की पत्नी धूता द्वारा अपनी बहुमूल्य 'रत्नमाला' का दिया जाना।

चतुर्थ अङ्क

- शर्विलक द्वारा चोरी के आभूषण से अपनी प्रेयसी मदनिका को वसन्तसेना के घर से मुक्त कराना तथा वधू के रूप में स्वीकार करना।
- शर्विलक द्वारा अपने बन्दी मित्र आर्यक को छुड़ाने के निमित्त जाना।
- रत्नमाला लेकर गये विदूषक द्वारा वसन्तसेना के विशाल भवन का अवलोकन।

पञ्चम अङ्क

- वसन्तसेना का चारुदत्त के घर में रात बिताना।
- वर्षाकाल का भव्य वर्णन।

षष्ठ अङ्क

- चारुदत्त के पुत्र रोहसेन का सोने की गाड़ी के लिए जिद करना जबकि दासी रदनिका मिट्टी की गाड़ी (मृत +शकटिका) देती है।
- इस दृश्य पर वसन्तसेना का मिट्टी की गाड़ी को आभूषणों से भरना।
- वसन्तसेना की गाड़ी भ्रमवश बदल जाना।
- चन्दनक सिपाही द्वारा बन्दी आर्यक को अभयदान।

सप्तम अङ्क

- आर्यक का चारुदत्त के पास पुष्पकरण्डक उद्यान में जाना और चारुदत्त द्वारा आर्यक के बन्धन को कटवाना।

अष्टम अङ्क

- पुष्पकरण्डक उद्यान में शकार द्वारा वसन्तसेना का गला घोंटना।
- वसन्तसेना को मृत समझकर शकार द्वारा चारुदत्त पर झूठा अभियोग चलाने के लिए न्यायालय जाना।
- बौद्धभिक्षु संवाहक द्वारा वसन्तसेना को उपचार हेतु बौद्ध विहार में ले जाना।

नवम अङ्क

- शकार द्वारा अपने पक्ष में निर्णय देने के लिए न्यायाधीश को धमकी।
- वसन्तसेना का चारुदत्त के घर जाने सम्बन्धित वसन्तसेना की माता की गवाही।
- वसन्तसेना का आभूषण विदूषक के पास से मिलना और चारुदत्त को फाँसी की सजा।

दशम अङ्क

- पालक को मारकर आर्यक का राजा बनना।
- चारुदत्त को फाँसी से मुक्ति।
- वसन्तसेना को वधू पद प्राप्त होना।

मृच्छकटिकम् में अलङ्कार एवं छन्द योजना

- मृच्छकटिकम् में स्वाभाविक रूप से अलङ्कारों का प्रयोग है। उपमा,रूपक,उत्प्रेक्षा के साथ-साथ काव्यलिङ्ग,विशेषोक्ति और समासोक्ति अलङ्कारों का विशेष रूप से वर्णन है।
- महाकवि शूद्रक ने पूरे मृच्छकटिक में 21 (इक्कीस) प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया है।
- सर्वाधिक प्रयुक्त छन्दों में वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित और उपजाति मुख्य हैं।

मृच्छकटिकम् के प्रमुख पात्रों का सामान्य परिचय

चारुदत्त

- चारुदत्त मृच्छकटिकम् का नायक है। नायक कोटियों के अनुसार चारुदत्त 'धीरप्रशान्त' कोटि का नायक है।
- दशरूपक के अनुसार धीरप्रशान्त का लक्षण है- **'सामान्यगुणयुक्तस्तु धीरशान्तो द्विजादिकः'**
- चारुदत्त उज्जयिनी का एक उदार, दयालु और परोपकारी ब्राह्मण युवक है।
- उसके पूर्वज व्यापारी थे, चारुदत्त भी व्यापार करके अत्यधिक धन-सम्पत्ति अर्जित किया था, किन्तु अपनी अतिशय उदारता और दानशीलता से अत्यन्त दरिद्र हो जाता है।
- कोई व्यक्ति अथवा सेवक जब प्रशंसनीय कार्य करते हैं, तब चारुदत्त उन्हें कुछ न कुछ पुरस्कार अवश्य देता है। इन्हीं गुणों से वसन्तसेना नामक गणिका उस पर मुग्ध हो जाती है।

- चारुदत्त अपराधी के प्रति भी क्रोध नहीं करता और शरण में आये की रक्षा करता है।
- चारुदत्त को अपनी प्रतिष्ठा और चरित्र की विमलता का भी ध्यान है।
- मृत्युदण्ड पाने पर भी उसे डर नहीं है, डर है तो केवल अपयश का।

'न भीतो मरणादस्मि केवलं दूषितं यशः।'

- चारुदत्त संगीत, कलाप्रेमी तथा धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति है। एक प्रकरण के नायक के सभी गुण उसके चरित्र में विद्यमान हैं।

वसन्तसेना

- वसन्तसेना इस प्रकरण की नायिका है। नायिका प्रकार की दृष्टि से वह साधारण स्त्री/गणिका/वेश्या और प्रगल्भा नायिका है।
- वह भी उज्जयिनी की ही एक वैभवशालिनी गणिका है, उसके भवन कुबेर के समान समृद्धशाली हैं।
- वसन्तसेना उदारहृदया स्त्री है, वह अपरिचित संवाहक को भी अभयदान तथा मदनिका को दासता से मुक्तकर देती है। रोहसेन की गाड़ी के लिए वह अपने आभूषण दे देती है।
- वसन्तसेना एक बुद्धिमती, कला-कुशल तथा विदुषी नारी है। वह चारुदत्त का चित्र बनाकर मदनिका को दिखाती है।
- वसन्तसेना ऐश्वर्यशालिनी होते हुए भी सामाजिक संरचना के ज्ञान से अछूती नहीं है, वह जानती है कि वह एक गणिका है और चारुदत्त के अन्तःपुर में प्रवेश करने का अधिकार नहीं रखती-

''मन्दभागिनी खल्वहं तवाभ्यान्तरस्य।''

- अत्यन्त प्रेम के आवेग से वह वध्यस्थल पर पहुँच जाती है तथा 'कुलवधू' पद को प्राप्त करती है।
- इस प्रकार वसन्तसेना ने अत्यन्त उदार हृदय, अनन्य प्रेम तथा अपूर्व त्याग आदि गुणों से गणिका होने की कालिमा को प्रक्षालित करके एक साध्वी नारी के पद को सुशोभित किया है।

शकार

- 'शकार' महाकविशूद्रक का कल्पनाप्रसूत पात्र है। यह मृच्छकटिकम् का प्रतिनायक है।
- दशरूपक के अनुसार प्रतिनायक लोभी, धीरोद्धत, जड़ प्रकृति वाला,पापी और व्यसनी होता है। शकार भी मूर्खता, प्रवञ्चना, पाप और कायरता आदि दुर्गुणों से परिपूर्ण है।
- शकार किसी रखेली का पुत्र है (काणेलीमातः), राजा पालक की रखेली का भाई, राजा का साला और संस्थानक भी है। वह शकारी प्राकृत बोलता है।
- शकार राजश्यालक होने के कारण अत्यन्त घमण्डी है। वह न्यायालय में धमकी देकर चारुदत्त को दण्ड दिलवाता है।
- उसे पद और धन का भी अभिमान है , इसीलिए वह अपने आपको **'देवपुरुष मनुष्य वासुदेव'** कहता है।
- वह अत्यन्त मूर्ख है और इतिहास विरुद्ध उपमाएं देता है जैसे- **'द्रोणपुत्रो जटायुः'**
- वह दुराग्रही और अस्थिर चित्त वाला है। विट और चेट को कपटपूर्वक हटाकर वह वसन्तसेना का गला घोंट देता है और चारुदत्त पर अभियोग चलाता है।
- शकार के चरित्र में प्रायः सभी दुर्गुणों का पुञ्ज दिखायी देता है।
- वह केवल लम्पट, मूर्ख और धूर्त ही नहीं अपितु मनुष्य रूप में राक्षस ही कहा जा सकता है।

विदूषक

- 'मैत्रेय' मृच्छकटिकम् का विदूषक है।
- दशरूपक के अनुसार वह नायक का सहायक तथा हँसी उत्पन्न करता है- **'हास्यकृच्च विदूषकः'।**
- मैत्रेय, चारुदत्त का सच्चा मित्र है। चारुदत्त की दरिद्रावस्था में भी वह साथ नहीं छोड़ता। इधर-उधर अपनी उदरपूर्ति करते हुए वह चारुदत्त की सहायता करता है।
- वह चारुदत्त को वेश्या-प्रसंग से हटाना चाहता है। अतः वसन्तसेना को भी घृणित निगाह से देखता है।
- चारुदत्त पर मिथ्या आरोप लगाने पर वह न्यायालय में ही शकार से लड़ बैठता है। चारुदत्त के विना वह जीवित नहीं रहना चाहता।
- मैत्रेय, क्रोधी, भीरु तथा साधारण कोटि का समझदार व्यक्ति है। वह चारुदत्त से कहता है कि जब पूजा करने पर भी देवता प्रसन्न नहीं होते तो देवपूजा से क्या लाभ?
- कहीं-कहीं भोजनप्रिय और पेटू के रूप में विदूषक का दर्शन होता है।
- अतः मैत्रेय एक व्यावहारिक मनुष्य है। वह एक सच्चा मित्र है,यद्यपि बुद्धिमान् मित्र नहीं।

शर्विलक

- शर्विलक चौर्यकला में निपुण तथा प्रेमी हृदय वाला ब्राह्मण है।
- वह चोरी को अच्छा नहीं समझता, केवल स्वतन्त्र व्यवसाय मानकर ही उसे ग्रहण करता है-

''स्वाधीना वचनीयताऽपि हि वरं बद्धो न सेवाञ्जलिः।''

- शर्विलक बुद्धिमान् तथा गुणग्राहक है। वह आपत्ति में मित्र का साथ देता है।
- अत्यन्त परिश्रम से प्राप्त हुई भी मदनिका को छोड़कर वह अपने मित्र आर्यक को बचाने जाता है।
- वह षड्यन्त्र करने में भी कुशल है।

मदनिका

- मदनिका, वसन्तसेना की क्रीतदासी तथा शर्विलक की प्रेयसी है।
- वसन्तसेना उस पर अत्यधिक विश्वास करती है, वह भी वसन्तसेना से अधिक प्रेम करती है।
- चारुदत्त के घर चोरी की बात सुनकर वह मूर्च्छित हो जाती है।

वह शर्विलक को सद्गृहिणी की भाँति सत्सम्मति देती रहती है। वसन्तसेना को भी समय-समय पर अच्छे विचार देती है, इसीलिए वसन्तसेना उसकी प्रशंसा करती है-

'साधु मदनिके साधु'

- मदनिका डरती नहीं है, वह शर्विलक जैसे साहसी की पत्नी होने योग्य है।
- उसने दासता से मुक्ति पाकर एक कुशल गृहणी का पद प्राप्त कर लिया है।

धूता

- धूता चारुदत्त की विवाहिता पत्नी है।
- वह एक पतिव्रता नारी तथा पति की अपकीर्ति से डरती है। इसी अपयश से बचाने के लिए वह अपना बहुमूल्य 'रत्नावली' आभूषण, वसन्तसेना के पास भेज देती है।
- धूता अत्यन्त उदार और सरल स्वभाव की है। वह वसन्तसेना से ईर्ष्या नहीं करती और अपने पति के प्रति क्रोध भी नहीं करती।
- पति के अनिष्ट को सुनकर वह अपना प्राण त्याग देना चाहती है।
- वह एक सच्ची पतिव्रता भारतीय नारी है।

संवाहक

- संवाहक पाटलिपुत्र का मूलनिवासी है तथा आजीविका की तलाश में उज्जयिनी आकर चारुदत्त के घर नौकरी करता है।
- चारुदत्त के दरिद्र होने पर वह द्यूतक्रीडा से अपनी आजीविका चलाता है।
- द्यूत में सर्वस्व हार कर वह वसन्तसेना द्वारा मुक्त कराया जाता है।
- इसी लिए संसार से विरक्त होकर वह बौद्धभिक्षु बन जाता है।

विट

- यह सहृदय और बुद्धिमान पात्र है।
- वसन्तसेना की चारुदत्त के प्रति प्रेम देखकर वह वसन्तसेना की प्रशंसा करता है तथा यथासम्भव सहायता भी करता है।
- वह पाप का विरोध करता है और शकार का साथ छोड़कर चला जाता है।

चेट

- इसका नाम स्थावरक है और यह शकार का यानवाहक है।
- चेट को परलोक का भी भय है, सज्जनों के प्रति प्रेम एवं सम्मान है।
- वह स्वयं विपत्ति में पड़कर भी अकार्य नहीं करता तथा चारुदत्त की रक्षा का प्रयास करता है।

अधिकरणिक

- यह 'मृच्छकटिकम्' का न्यायाधीश है।
- अधिकरणिक पवित्र-हृदय वाला एवं न्याय-प्रिय है।
- वह सज्जनता का सम्मान करता है और सच्चाई को ढूँढना चाहता है, किन्तु डरपोक भी है तथा राजश्यालक के दबाव में उचित न्याय नहीं कर पाता।

रोहसेन

- यद्यपि पूरे प्रकरण में रोहसेन की बहुत बड़ी भूमिका नहीं है, फिर भी मृच्छकटिकम् नाम की सार्थकता से रोहसेन का सीधा सम्बन्ध है।
- रोहसेन चारुदत्त और धूता का पुत्र है।
- वह मिट्टी की गाड़ी से नहीं खेलना चाहता और स्वर्ण की गाड़ी के लिए जिद करता है। इसी कारण इस प्रकरण का नाम मृत्+ शकटिकम् = 'मृच्छकटिकम्' पड़ा है।

मृच्छकटिक का नामकरण

मृत्+शकटिका

उपर्युक्त संहिता में तकार के बाद 'श' है, अतः **'स्तोः श्चुना श्चुः'** सूत्र से 'त' के स्थान पर 'च' होगा - मृच्+शकटिका अब **'शश्छोऽटि'** सूत्र से 'श' के स्थान पर 'छ' आदेश हुआ-मृच् + छकटिका = मृच्छकटिका

- इस प्रकार ग्रन्थवाची पद होने के कारण नपुंसकलिङ्ग एकवचन में 'मृच्छकटिकम्' बना। इसका हिन्दी अर्थ होगा- 'मिट्टी की गाड़ी'।
- 'मृदः शकटिका यस्मिन् इति मृच्छकटिकम्'- **बहुव्रीहि समास**
- साहित्यदर्पण के अनुसार प्रकरण का नाम, नायक- नायिका के नाम पर होना चाहिए- **'नायिकानायकाख्यानात् - संज्ञा प्रकरणादिषु।'**
- मृच्छकटिक एक प्रकरण है, अतः इसका नामकरण इसके छठवें अङ्क में वर्णित एक विशेष घटना के आधार पर किया गया है।
- चारुदत्त का पुत्र रोहसेन, पड़ोसी बच्चे की गाड़ी को देखकर मिट्टी की गाड़ी से नहीं खेलता और सोने की गाड़ी माँगता है। रदनिका के बहलाने पर भी नहीं मानता, इस पर वसन्तसेना अपने आभूषण, स्वर्ण शकटिका बनवाने के लिए उसके मिट्टी की गाड़ी पर लाद देती है।
- इसप्रकार पूरे प्रकरण में 'मिट्टी की गाड़ी' सम्बन्धी घटना विशेष महत्त्व रखती है।
- इसलिए 'मृच्छकटिकम्' नाम अत्यन्त ही उपयुक्त है।

पात्र- परिचय

पुरुष-पात्र

1. **सूत्रधार-** प्रधान नट एवं मञ्च का व्यवस्थापक।
2. **चारुदत्त-** नायक, उज्जयिनी का ब्राह्मण व्यापारी।
3. **मैत्रेय-** विदूषक एवं चारुदत्त का परम मित्र।
4. **शकार-** प्रतिनायक, राजा पालक का साला, संस्थानक।
5. **विट-** शकार का सहचर।
6. **चेट-** शकार का सेवक।
7. **माथुर-** सभिक, प्रधान जुआरी
8. **दर्दुरक-** जुआरी

9. **संवाहक-** चारुदत्त का भूतपूर्व नौकर, जुआरी एवं बौद्धभिक्षु।
10. **कर्णपूरक-** वसन्तसेना का सेवक।
11. **शर्विलक-** मदनिका का प्रेमी ब्राह्मण, चोर।
12. **वर्धमानक (चेट)-** चारुदत्त का यानवाहक।
13. **बन्धुल-** बन्धुल, वसन्तसेना का आश्रित।
14. **कुम्भीलक-** वसन्तसेना का दास।
15. **चेट-** वसन्तसेना का दास।
16. **विट-** वसन्तसेना का शृङ्गार-सहचर।
17. **रोहसेन-** चारुदत्त का पुत्र।
18. **आर्यक-** गोपाल-बालक, राजा पालक का कैदी, बाद में राजा।
19. **स्थावरक चेट-** शकार का यानवाहक।
20. **वीरक-** पालक का सेनापति, रक्षक
21. **चन्दनक-** पालक का सेनापति, रक्षक
22. **शोधनक-** न्यायालय का नौकर।
23. **अधिकरणिक-** न्यायाधीश।
24. **श्रेष्ठी-** नगर का प्रतिष्ठित पुरुष, न्याय करने में न्यायाधीश का सहायक।
25. **कायस्थ-** न्यायालय का लेखक (पेशकार)
26. **चाण्डाल-** फाँसी देने वाले जल्लाद

स्त्री-पात्र

1. **नटी-** सूत्रधार की पत्नी।
2. **वसन्तसेना-** नायिका, उज्जयिनी की प्रसिद्ध गणिका।
3. **मदनिका-** वसन्तसेना की क्रीतदासी, शर्विलक की प्रेयसी।
4. **रदनिका-** चारुदत्त की परिचारिका।
5. **धूता-** चारुदत्त की पत्नी।
6. **चेटी-** वसन्तसेना की दासी।
7. **छत्रधारिणी-** वसन्तसेना की सेविका।
8. **चेटी-** चारुदत्त की दासी।
9. **वृद्धा-** वसन्तसेना की माता।

मञ्च पर न आने वाले पात्र

1. **जूर्णवृद्ध-** चारुदत्त का मित्र।
2. **पालक-** अवन्ती का राजा।
3. **रेभिल-** चारुदत्त का मित्र, गायक।
4. **सिद्ध-** आर्यक की राज्य-प्राप्ति का भविष्य वक्ता।

मृच्छकटिक का मङ्गलाचरण

पर्यङ्कग्रन्थिबन्धद्विगुणितभुजगाश्लेषसंवीतजानो
रन्तः प्राणावरोधव्युपरतसकलज्ञानरुद्धेन्द्रियस्य।
आत्मन्यात्मानमेव व्यपगतकरणं पश्यतस्तत्त्वदृष्ट्या
शम्भोर्वः पातु शून्येक्षणघटितलयब्रह्मलग्नः समाधिः॥

(1/1)

भावार्थ- पर्यङ्क नामक योगासन में सन्धि-स्थल पर बाँधने से द्विगुणित सर्प के लपेटने से जिस शिव के घुटने बँधे हुए हैं, योग-बल के द्वारा प्राणवायु को भीतर ही रोक देने से जिसकी समस्त इन्द्रियाँ बाह्य ज्ञान से विरत तथा संयत हो गई हैं, जिसने यथार्थ ज्ञान के द्वारा इन्द्रिय-व्यापार निरोधपूर्वक अपने भीतर आत्मा का दर्शन किया है, उस शिव की समाधि जो निराकार ब्रह्म के दर्शन में होने वाली एकाग्रता के कारण ब्रह्म में लगी हुई है- आप सब सभासदों की रक्षा करें।

पातु वो नीलकण्ठस्य कण्ठः श्यामाम्बुदोपमः।
गौरीभुजलता यत्र विद्युल्लेखेव राजते॥ (1/2)

भावार्थ- शिवजी के काले बादल जैसा कण्ठ, जिसमें पार्वती की गौरवर्ण भुजा रूपी लता विद्युत् पंक्ति के समान शोभित होती है, आप सब की रक्षा करें।

- मृच्छकटिक के मङ्गलाचरण में भगवान् शिव की स्तुति की गयी है।
- रूपक की निर्विघ्न समाप्ति के लिए नाटक के प्रारम्भ, मध्य और अन्त में माङ्गलिक पद्यों के प्रयोग का विधान है।

  'ग्रन्थादौ ग्रन्थमध्ये ग्रन्थान्ते च मङ्गलम् आचरेत्।'
- नाट्य की भाषा में इसी माङ्गलिक पद्य को 'नान्दी' कहते हैं-

  'नन्दन्ति देवता अस्यामिति नान्दी।'
- मृच्छकटिक के मङ्गलाचरण के रूप में दो पद्यों का प्रयोग हुआ है।
- मृच्छकटिक में आशीर्वादात्मक तथा कथावस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण का प्रयोग है।
- द्वितीय श्लोक में समासोक्ति के माध्यम से कथावस्तु का निर्देश है, अतः **'पत्रावली नान्दी'** है।
- मृच्छकटिक में **'अष्टपदा नान्दी'** का प्रयोग हुआ है।
- किसी छन्द के चतुर्थांश/पाद/चरण को एक पद मानने पर- चार पद प्रथम श्लोक में +चार पद द्वितीय श्लोक में। क्योकिं दोनों श्लोकों के माध्यम से स्तुति की गयी है अतः चार+चार = आठ। अर्थात् अष्टपदा नान्दी।
- नान्दी पाठ का कर्त्ता सूत्रधार होता है।
- मृच्छकटिक के प्रथम पद्य में 'स्रग्धरा छन्द' और द्वितीय में पथ्यावक्त्र छन्द है तथा उपमा, रूपक तथा अनुप्रास अलङ्कारों का प्रयोग हुआ है।

मृच्छकटिक का भरतवाक्य

क्षीरिण्यः सन्तु गावो भवतु वसुमती सर्वसम्पन्नसस्या
पर्जन्यः कालवर्षी सकलजनमनोनन्दिनी वास्तु वाताः।
मोदन्तां जन्मभाजः सततमभिमता ब्राह्मणाः सन्तु सन्तः
श्रीमन्तः पान्तु पृथ्वीं प्रशमितरिपवो धर्मनिष्ठाश्च भूपाः॥

(10/61)

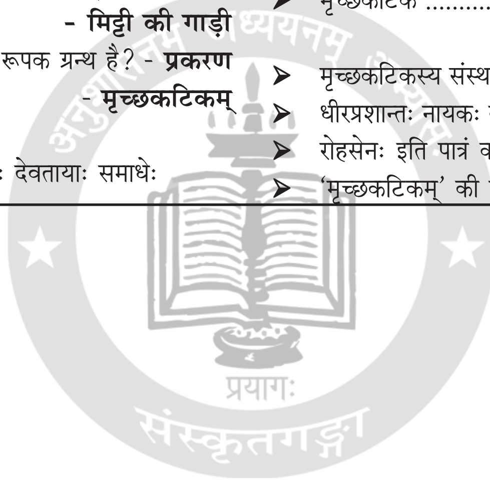
भावार्थ- गौएँ प्रचुर दूध देने वाली हों, पृथ्वी सभी धान्यों से पूर्ण हो, मेघ समय पर बरसने वाला हो, समस्त जनों के मन को आनन्दित करने वाली वायु चले प्राणधारी हमेशा सुखी रहें, पूज्य

ब्राह्मण लोग उत्तम शील वाले हों, समृद्धिशाली, शत्रुओं का नाश करने वाले तथा धर्मनिष्ठ राजा पृथ्वी का पालन करें।

- नाटक के अन्त में प्रशस्ति रूप में वर्णित श्लोक को भरतवाक्य कहते हैं।
- भरतवाक्य में लोक कल्याण की कामना की जाती है।
- नाट्य के जन्मदाता आचार्य भरत के सम्मानार्थ प्रयोग होता है।
- सूत्रधार अथवा सारे पात्र संयुक्त रूप से भरतवाक्य बोलते हैं।
- मृच्छकटिक के भरतवाक्य में 'स्रग्धरा छन्द' एवं 'काव्यलिङ्ग' अलङ्कार प्रयुक्त है।

मृच्छकटिकम् बिन्दुवार अध्ययन

- मृच्छकटिकस्य रचयितुर्नाम - **शूद्रकः**
- शूद्रकस्य का रचना अस्ति - **मृच्छकटिकम्**
- शूद्रकेन मानभूतं प्रकरणनाट्यं निर्मितमासीत् - **मृच्छकटिकम्**
- मृच्छकटिकम् इत्यस्य पदस्य हिन्दीभाषायाम् अर्थोऽस्ति - **मिट्टी की गाड़ी**
- 'मृच्छकटिकम्' किस प्रकार का रूपक ग्रन्थ है? - **प्रकरण**
- प्रकरणस्य उदाहरणं भवति - **मृच्छकटिकम्**
- मृच्छकटिकस्य नान्दीपाठे कस्याः देवतायाः समाधेः माध्यमेन रक्षाकामना कृताऽस्ति? - **शङ्करस्य**
- 'मृच्छकटिकम्' की कथा किसमें समायोजित है?- **अङ्कों में**
- 'मृच्छकटिके' कति अङ्काः सन्ति? - **दश**
- 'मृच्छकटिकम्' का नायक कौन है? - **चारुदत्त**
- 'मृच्छकटिकम्' की नायिका है - **कुलजा/वेश्या दोनों**
- चारुदत्तः कस्मिन् रूपके नायकः - **मृच्छकटिके**
- 'चारुदत्त' किस श्रेणी का नायक है? - **धीरप्रशान्त**
- प्रकरण का नायक होता है - **धीरप्रशान्त**
- शकारी प्राकृत का प्रयोग किस नाटक में है- **मृच्छकटिकम्**
- चारुदत्तस्य परिचारिका का? - **रदनिका**
- चारुदत्तस्य सेवकस्य नाम - **संवाहकः**
- शर्विलकस्य प्रेमिकायाः नाम - **मदनिका**
- मृच्छकटिकप्रकरणस्य षष्ठाङ्कस्य नाम - **प्रवहणविपर्ययः**
- 'मृच्छकटिक' प्रकरण के प्रथम अङ्क का नाम है? -**अलङ्कारन्यासः**
- 'मृच्छकटिके' कियन्तः प्राकृतभेदाः प्रयुक्ताः?- **सात**
- मृच्छकटिके .... नाम 'मदनिका-शर्विलकः' अस्ति? -**चतुर्थाङ्कस्य**
- मृच्छकटिकस्य संस्थानकः? - **शकारः**
- धीरप्रशान्तः नायकः कस्य रूपकस्य वर्तते? -**मृच्छकटिकस्य**
- रोहसेनः इति पात्रं कस्मिन् नाटके वर्तते? - **मृच्छकटिके**
- 'मृच्छकटिकम्' की नायिका कौन है? - **वसन्तसेना**



महाकवि भवभूति का परिचय

- **पितामह** – भट्टगोपाल
- **पिता** – नीलकण्ठ
- **माता** – जतुकर्णी (जातुकर्णी)
- **भवभूति का मूलनाम** – श्रीकण्ठ या भट्टश्रीकण्ठ
- **गुरु** – (i) ज्ञाननिधि (ii) कुमारिलभट्ट
- **भवभूति का दार्शनिक नाम** – उदुम्बर/उम्बिकाचार्य/उम्बेक
- **जन्मस्थान** – दक्षिणभारत में पद्मपुर नगर
- **उपाधि** – (i) पदवाक्यप्रमाणज्ञ, पद = व्याकरण, वाक्य = मीमांसा, प्रमाण = न्याय
  (ii) वश्यवाक्, (iii) परिणतप्रज्ञ, (iv) शिखरिणीकवि
- **वंश/गोत्र** – काश्यप
- **जाति** – कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखापाठी ब्राह्मण
- **आश्रयदाता** – कान्यकुब्जनरेश यशोवर्मा
- **समय**– 650 ई. से 750 ई. के बीच (सातवीं शताब्दी का उत्तरार्ध)
- **रचनायें** – 1. मालतीमाधवम् (प्रकरण)
  2. महावीरचरितम् (नाटक)
  3. उत्तररामचरितम् (नाटक)
- **भवभूति की रीति** – गौडी
  (उत्तररामचरितम् में गौड़ी और वैदर्भी का समन्वय)
- **भवभूति का प्रियरस** – करुण
- **भवभूति के प्रियछन्द** – अनुष्टुप् और शिखरिणी
- **उपासक** – शिव के
- उत्तररामचरितम् में भवभूति अपने आपको **'परिणतप्रज्ञ'** कहते हैं।
- महावीरचरितम् में भवभूति अपने आपको **'वश्यवाक्'** कहते हैं।
- भवभूति के नाटकों में **'अभिधावृत्ति'** मुख्य है।
- भवभूति की कृतियों में **'ओजगुण'** अधिक है।
- **क्षेमेन्द्र ने 'सुवृत्ततिलक'** में भवभूति के शिखरिणी की प्रशंसा में उसे **'निरर्गलतरङ्गिणी'** कहा है –
  भवभूतेः शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी।
  रुचिरा घनसन्दर्भे या मयूरीव नृत्यति।। (सु. 3.33)
- भवभूति के तीनों नाटकों में **विदूषक का सर्वथा अभाव** है।

महाकवि भवभूति विषयक प्रशस्तियाँ

1. कवयः कालिदासाद्याः भवभूतिर्महाकविः।
   – अज्ञात समालोचक
   नाटके भवभूतिर्वा वयं वा वयमेव वा।
2. उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते। **– विक्रमार्क**
3. कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते। **– अज्ञात**
4. बभूव वाल्मीकभवः कविः पुरा ततः प्रपेदे भुवि भर्तृमेण्ठताम्।
   स्थितः पुनर्योभवभूतिरेखया स वर्तते सम्प्रति राजशेखरः।।
   – राजशेखर - बालरामायण
5. भवभूतेर्शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी।
   रुचिरा घनसन्दर्भे या मयूरीव नृत्यति।।
   – क्षेमेन्द्र - सुवृत्ततिलक
6. भवभूतेः सम्बन्धाद्भूधरभूरेव भारती भाति।
   एतत्कृतकारुण्ये किमन्यथा रोदिति ग्रावा।।
   – गोवर्धनाचार्य - आर्यासप्तशती।
7. स्पष्टभावरसा चित्रैः पादन्यासैः प्रवर्तिता।
   नाटकेषु नटस्त्रीव भारती भवभूतिना।।
   – धनपाल - तिलकमञ्जरी
8. सुकविद्वितयं मन्ये निखिलेऽपि महीतले।
   भवभूतिः शुकश्चायं वाल्मीकिस्त्रितयोऽनयोः।।
   – भोज - भोजप्रबन्ध
9. रत्नावली पूर्वकमन्यदास्तामसीमभोगस्य वचोमयस्य।
   पयोधरस्येव हिमाद्रिजायाः परं विभूषा भवभूतिरेव।।
   – जल्हण - सूक्तिमुक्तावली
10. भवभूतिमनादृत्य निर्वाणमतिना मया।
    मुरारिपदचिन्तायामिदमाधीयते मनः।।
    – जल्हण - सूक्तिमुक्तावली।
11. मान्यो जगत्यां भवभूतिरार्या सारस्वते वर्त्मनि सार्थवाहः।
    वाचं पताकामित्रस्य दृष्ट्वा जनः कवीनामनुपृष्ठमेति।।
    – उदयसुन्दरीचम्पू
12. भवभूतिजलधिनिर्गतकाव्यामृतरसकणा इव स्फुरन्ति।
    यस्य विशेषा अद्यापि विकटेषु कथानिवेशेषु।।
    – गौडवहो - वाक्पतिराज
13. जडानामपि चैतन्यं भवभूतेरभूद् गिरा।
    ग्रावाप्यरोदीत् पार्वत्याः हसतः स्म स्तनावपि।। **– अज्ञात**
14. अन्तर्मोदं कमपि भवभूतिर्वितनुते।। **– सदुक्तिकर्णामृत**
15. भव्यां यदि विभूतित्वं तात कामयसे तदा।
    भवभूतिपदे चित्तमविलम्बं निवेशय।। **– अज्ञात।**
16. भवभूतेर्विच्छित्तिव्यभिचारमुचो गिरां गुम्फाः।
    विधिनापि दुर्निवारं तेषां खलु भावभूतत्वम्।।
    – विश्वेश्वर पाण्डेय
17. भवभूतेः कवीन्द्रस्य वाणी कामदुधामता।
    ब्रह्मानन्दसहोदर्या या तनोति मुदं सदा।।**–कपिलदेव द्विवेदी**
18. साऽम्बा पुनातु भवभूतिपवित्रमूर्तिः। **– भवभूति**
19. भवभूतिर्नाम कविर्निसर्गसौहृदेन भरतेषु वर्तमानः।
    – मालतीमाधवस्य प्रस्तावना
20. कविर्वाक्पतिराजश्रीभवभूत्यादिसेवितः।
    जितो ययौ यशोवर्मा तद्गुणस्तुतिवन्दिताम्।।
    – कल्हण राजतरङ्गिणी
21. तपस्वीं कां गतोऽवस्थामिति स्मराननाविव।

मालतीमाधवम्

☆ **लेखक-** भवभूति
☆ **काव्यविधा-** प्रकरण
☆ **विभाजन-** 10 अङ्क
☆ **उपजीव्य-** बृहत्कथा पर आश्रित
☆ **नायक-** (i) माधव (ii) मकरन्द
☆ **नायिका-** (i) मालती (ii) मदयन्तिका
☆ **प्रधानरस/अङ्गीरस-** शृङ्गार
➢ **महत्त्वपूर्ण तथ्य-**
☆ 10 अङ्कों का प्रकरण।
☆ भवभूति का प्रथम नाटक
☆ विदूषक का अभाव
☆ गौड़ी शैली का प्रयोग

मालतीमाधवम् की संक्षिप्त कथावस्तु

➢ इसमें मालती और माधव तथा मकरन्द और मदयन्तिका के प्रणय और परिणय का वर्णन है।
➢ माधव विदर्भराज के मन्त्री देवराज का पुत्र है।
➢ मालती पद्मावती नरेश के मन्त्री भूरिवसु की पुत्री है।
➢ नन्दन जो पद्मावती नरेश का नर्मसचिव है मालती पर आसक्त है।
➢ मदयन्तिका नन्दन की बहिन और मालती की सखी है। तथा वह माधव के मित्र मकरन्द की प्रेमिका है।

महावीरचरितम्

☆ **लेखक-** भवभूति
☆ **काव्यविधा-** नाटक
☆ **विभाजन-** 7 अङ्क
☆ **श्लोक-** 388
☆ **उपजीव्य-** रामायण
☆ **नायक-** रामचन्द्र
☆ **नायिका-** सीता
☆ **प्रधानरस/अङ्गीरस-** वीर
☆ **नायक कोटि-** धीरोदात्त
☆ **शैली-** गौड़ी
☆ **विदूषक का अभाव**

अङ्क	श्लोक संख्या
1	62
2	50
3	48
4	60
5	63
6	63
7	42
कुल 7 अङ्क	388 श्लोक

☆ भवभूति के सभी तीनों नाटकों में विदूषक नही है।

महावीरचरितम् की संक्षिप्त कथावस्तु

➢ रामविवाह से लेकर राम राज्याभिषेक तक रामायण की कथा वर्णित है।
➢ **प्रथम अङ्क** में शिवधनुष तोड़ राम-सीता का विवाह।
➢ **द्वितीय अङ्क-** माल्यवान् द्वारा परशुराम को राम के विरुद्ध उकसाना
➢ **तृतीय अङ्क-** राम परशुराम वाक् युद्ध
➢ **चतुर्थ अङ्क-** परशुराम पराजित, माल्यवान् के षडयन्त्र से शूर्पणखा कैकेयी की दासी मन्थरा रूप में कैकेयी का पत्र राम को देती है जिसमें 14 वर्ष वनवास भरत को राज्य लिखा था।
➢ **पञ्चम अङ्क-** सीता हरण, विभीषण राम मिलन, सुग्रीव मैत्री।
➢ **अङ्क छह-** राम-रावण युद्ध रावण वध।
➢ **अङ्क सात-** सीता की अग्नि परीक्षा, राम राज्याभिषेक।
गिरिजायाः स्तनौवन्दे भवभूतिसिताननौ।। **– भवभूति**

उत्तररामचरितम् का परिचय

➢ **लेखक** – भवभूति
➢ **विधा** – नाटक
➢ **अङ्क** – 7 (सात)
➢ **प्रधानरस** – करुण
➢ **उपजीव्य** (i) वाल्मीकीयरामायण उत्तरकाण्ड (सर्ग 42-97 तक) (ii) पद्मपुराण (पातालखण्ड 1-68 तक)
➢ **विशेषतायें**– (1) सप्तम अङ्क में **गर्भनाटक** की योजना
(2) प्रथम अङ्क में **चित्रवीथी** की योजना
(3) **विदूषक रहित** नाटक
(4) तृतीय अङ्क में **छायाङ्क** की योजना

- **प्रमुखपात्र** – राम (नायक), सीता (नायिका), गोदावरी, भागीरथी, तमसा, मुरला, वासन्ती (वनदेवता), पृथ्वी, आत्रेयी, वशिष्ठ, कौशल्या, मुनिबालक सौधातकि, गुप्तचरदुर्मुख, लव, कुश, चन्द्रकेतु, वाल्मीकि, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, अष्टावक्र, दण्डायन, सुमन्त्र, अरुन्धती, जनक, कञ्चुकी आदि।
- अनुष्टुप् (84 श्लोक), शिखरिणी (30), वसन्ततिलका (26), शार्दूलविक्रीडित (25) आदि।
- उत्तररामचरितम् में भवभूति ने **38 अलङ्कारों का प्रयोग** किया है; और प्रयोग की दृष्टि से उन्हें–उपमा, उत्प्रेक्षा, काव्यलिङ्ग, रूपक, अर्थान्तरन्यास अत्यन्त **प्रिय अलङ्कार** माने जाते हैं।
- इसमें **7 (सात) अङ्कों में** रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा वर्णित है।
- राम के वन-प्रत्यागमन के बाद राजगद्दी पाने से लेकर सीता-मिलन तक की सम्पूर्ण कथाएँ कुछ कल्पना-प्रसूत घटनाओं के साथ दिखाई गई हैं। यह **भवभूति का सर्वश्रेष्ठ नाटक** है।
- सप्तम अंक में **'गर्भाङ्क' की कल्पना** है।
- पद्मपुराण में वर्णित रामकथा से उत्तररामचरित की कथा का अधिक साम्य है।
- उत्तररामचरित में **कुल पात्रों की संख्या 30** है। इनके अतिरिक्त 6 पात्रों का उल्लेख मात्र है।
- भवभूति ने उत्तररामचरित में **19 छन्दों का प्रयोग** किया है।
- उत्तररामचरित में **कुल श्लोकों की संख्या 256** है।
- **अनुष्टुप् के पश्चात् शिखरिणी छन्द** का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है। मङ्गलाचरण में अनुष्टुप् है।
- भवभूति ने उत्तररामचरित में केवल **'शौरसेनी प्राकृत'** का प्रयोग किया है।
- नाटक का आरम्भ **'चित्रदर्शन'** से होता है।
- प्रथम अङ्क में राम के राज्याभिषेक से उत्पन्न प्रतिक्रिया का निरीक्षण करके **'दुर्मुख'** आता है।
- मङ्गलाचरण में प्राचीन कवियों वाल्मीकि आदि को लक्ष्य करके प्रार्थना की गई है।
- 'उत्तररामचरितम्' में **'नमस्कारात्मक' मङ्गलाचरण** किया गया है।
- महाराज **दशरथ की पुत्री शान्ता** के पति ऋष्यशृङ्ग ने बारह वर्ष चलने वाला यज्ञ प्रारम्भ किया है इसकी सूचना प्रथम अङ्क में प्राप्त होती है।
- महर्षि वशिष्ठ का संदेश लेकर **अष्टावक्र** आते हैं। वे 'कहोड़' के पुत्र हैं।
- लक्ष्मण द्वारा सीता के मनोविनोदार्थ लाये गये चित्रवीथी में सीता के अग्निशुद्धि तक की कथा चित्रित है।
- लक्ष्मण की पत्नी का नाम **'उर्मिला'** है।
- चित्रवीथी बनाने वाले **चित्रकार का नाम अर्जुन** है।
- **सौधातकि** और **दण्डायन** वाल्मीकि के दो शिष्य हैं।
- लक्ष्मण के पुत्र का नाम **'चन्द्रकेतु'** है।
- **शम्बूक** एक शूद्र तपस्वी है।
- चन्द्रकेतु के वृद्ध सारथि **'सुमन्त्र'** हैं।
- **वासन्ती** वनदेवता है और सीता की प्रियसखी है।
- **आत्रेयी** एक तपस्विनी ब्रह्मचारिणी है।
- **तमसा** और **मुरला** दो नदी अधिष्ठात्री देवियाँ हैं।
- महर्षि **वशिष्ठ की पत्नी 'अरुन्धती'** हैं तथा **महर्षि अगस्त्य की पत्नी 'लोपामुद्रा'** हैं।
- द्वितीय अङ्क में राम 'शम्बूक वध' करते हैं।
- पञ्चवटी के पास स्थित गोदावरी नदी से राम के जीवन के प्रति सावधान रहने की प्रार्थना 'लोपामुद्रा' द्वारा 'मुरला' के माध्यम से की गई है।
- प्रसवपीड़ा से पीड़ित होकर सीता ने स्वयं को गङ्गा के प्रवाह में डाल दिया और वहीं उनके दोनों पुत्र उत्पन्न हुए।
- देवी गङ्गा ने दोनों बालकों को महर्षि वाल्मीकि को समर्पित किए।
- तृतीय अङ्क में कुश और लव के `12वीं वर्षगाँठ' की चर्चा है।
- 'गङ्गा' ने सीता को आदेश दिया कि वे अपने हाथों से तोड़े गये पुष्पों से अपने पुराण आदिश्वसुर सूर्य की पूजा करें।
- 'गङ्गा' के प्रभाव से सीता को वन देवता भी नहीं देख पाते।
- तृतीय अङ्क के आरम्भ में सीता 'गोदावरी' के जल से निकलती हैं।
- गोदावरी से निकलती सीता करुणा की मूर्ति एवं शरीरधारिणी विरहव्यथा सी प्रतीत होती हैं।
- अदृश्य सीता के साथ तमसा रहती है और वह सीता को देख सकती है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ **'विष्कम्भक'** से होता है।
- 'वासन्ती' सीता-त्याग के लिए राम की भर्त्सना करती है।
- राम तृतीय अङ्क में 'अश्वमेध' यज्ञ की सूचना देते हैं और सीता की स्वर्ण प्रतिमा को उन्होंने पत्नी के स्थान पर रखा है।
- तृतीय अङ्क का आरम्भ तमसा-मुरला नामक दो नदियों के वार्तालाप से होता है।
- उत्तररामचरित में **`38 अलङ्कारों'** का प्रयोग है सर्वाधिक प्रयोग **'उपमा' (74 बार)** का है।
- चतुर्थ अङ्क का आरम्भ दण्डायन और सौधातकि के वार्तालाप से होता है।
- तृतीय अङ्क में श्लोकों की संख्या **`48'** है।
- चतुर्थ अङ्क में कौशल्या के पूछने पर 'लव' अपने को वाल्मीकि का पुत्र बताता है।
- 'रामकथा' के अभिनय के लिए वाल्मीकि ने इस कथा को कुश के संरक्षण में भरतमुनि के पास भेजा।
- चतुर्थ अङ्क में लव यज्ञ का घोड़ा पकड़ता है।
- पञ्चम अङ्क में लव **'जृम्भक अस्त्र'** का प्रयोग करता है।

➢ लव राम के शौर्य को कुछ नहीं समझता और उन पर आक्षेप करता है।
➢ षष्ठ अङ्क में **लव और चन्द्रकेतु में** दिव्य अस्त्रों से **घोर युद्ध** होता है।
➢ चन्द्रकेतु के 'आग्नेय अस्त्र' की प्रतिकार स्वरूप लव 'वारुण' अस्त्र छोड़ता है।
➢ सप्तम अङ्क में वाल्मीकि की कृति का 'अप्सराओं' द्वारा अभिनय किया गया है।
➢ 'उत्तररामचरितम्' का **भरतवाक्य शार्दूलविक्रीडित छन्द** में है।
➢ उत्तररामचरितम् में **करुणरस प्रधान** है।इसमें वैदर्भी एवं गौडीरीति का प्रयोग है।
➢ 'उत्तररामचरितम्' सुखान्त नाटक है।
➢ तृतीय अङ्क में सीता द्वारा पाले गये हाथी, मयूर और कदम्ब की चर्चा आती है।
➢ मयूर 'कदम्ब' के वृक्ष पर बैठकर मधुर स्वर करता है।
➢ प्रथम अङ्क में राम ने लोकानुरञ्जन के लिए सीता तक को त्याग देने की बात कही है।

''स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा॥''(1/ 12)

➢ प्रथम अङ्क में राम अष्टावक्र से यह प्रसिद्ध श्लोक कहते हैं।

''लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।
ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति॥'' (1/10)

➢ तृतीय अङ्क का आरम्भ राम के करुण रस के उद्घोष के साथ होता है। जिसे मुरला कहती है–

अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः॥ (3/1)

➢ तृतीय अङ्क में सर्वाधिक **अनुष्टुप् (11) छन्द** का प्रयोग हुआ है। **7 'वसन्ततिलका'** वृत्त प्रयुक्त है।
➢ तृतीय अङ्क का अन्त भी करुण रस के उद्घोष से होता है जिसे तमसा कहती है –

'एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्। (वसन्ततिलका) (3/47)

➢ लवणासुर के वध के लिए **'शत्रुघ्न'** जाते हैं।
➢ मूल कथा में अश्वमेधीय अश्व का रक्षक **भरतपुत्र 'पुष्कल'** है, उत्तररामचरित में **लक्ष्मण पुत्र चन्द्रकेतु** है।
➢ सप्तम अङ्क में गङ्गा और पृथ्वी सीता के चरित्र की पवित्रता की घोषणा करती हैं।
➢ कवियों ने **'कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते'** कहकर भवभूति का यशोगान किया है।
➢ भवभूति ने चौथे अङ्क में समांस या अमांस मधुपर्क का प्रसंग उठाया है।
➢ पञ्चवटी में राम का **'शयन-शिलातल'** कदली वन के मध्य में विद्यमान था।
➢ वासन्ती केवल लक्ष्मण का कुशलक्षेम पूछती है।
➢ वासन्ती राम को जटायु द्वारा तोड़ा गया काले लोहे का बना रावण का रथ दिखाती है।

उत्तररामचरितम् का मङ्गलाचरण

इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे।
विन्देम देवतां वाचममृतामात्मनः कलाम्॥ 1/1 ॥

भावार्थ- हम अपने पुरातन (वाल्मीकि आदि) कवियों को प्रणाम कर ''ब्रह्मा की अंशभूत सनातनी देवी वाणी (सरस्वती) को प्राप्त करें'', यह कामना करते हैं।
(अर्थात् पहले के वाल्मीकि आदि कवियों को प्रणाम कर हम यह कामना करते हैं कि ब्रह्मा की अंशभूत सनातनी सरस्वती को प्राप्त करें।)

☆ उपर्युक्त मङ्गलाचरण में वाणी देवी को नमस्कार किया गया है।
☆ नमस्कारात्मक नान्दी प्रयुक्त है।
☆ प्रस्तुत श्लोक में 12 पद हैं। अतः द्वादशपदा नान्दी है।
☆ अनुप्रास एवं श्लेष अलङ्कार है तथा अनुष्टुप् (पत्थ्यावक्त्र) छन्द का प्रयोग है।
☆ शुद्ध नान्दी का प्रयोग हुआ है।

उत्तररामचरितम् का भरतवाक्य

पाप्मभ्यश्च पुनाति वर्धयति च श्रेयांसि सेयं कथा
मङ्गल्या च मनोहरा च जगतो मातेव गङ्गेव च।
तामेतां परिभावयन्त्वभिनयैर्विन्यस्तरूपां बुधाः
शब्दब्रह्मविदः कवेः परिणतां प्राज्ञस्य वाणीमिमाम्॥ 7/21॥

भावार्थ- संसार की माता और गङ्गा की तरह कल्याण करने वाली तथा मनोहर प्रसिद्ध यह रामायण की कथा पापों से पवित्र करती है और कल्याण को बढ़ाती है। विद्वान् लोग अभिनय के द्वारा शब्दब्रह्म को चाहने वाले इस बुद्धिमान् कवि की नाटक के रूप में परिणत ऐसी ही उत्तररामचरितस्वरूप वाणी का विचार करें।

☆ इस माङ्गलिक पद्य में संसार के कल्याण के लिए नाटकीय पात्रों की ओर से शुभकामना है।
☆ यहाँ उपमा के चारों भेद होने से पूर्णोपमा अलङ्कार है।
☆ 'प्रशस्ति' नामक निर्वहण सन्धि का अङ्ग है।
☆ शार्दूलविक्रीडित छन्द का प्रयोग हुआ है।

'उत्तररामचरित' नाम की सार्थकता

रामस्य चरितम् इति रामचरितम् **(षष्ठी तत्पुरुष)**
1. उत्तरं च तत् रामचरितम् इति उत्तररामचरितम् **(कर्मधारय समास)**
उत्तररामचरित अधिकृत्य कृतं नाटकं इति उत्तररामचरितम्।

'अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' सूत्र से अण् प्रत्यय हुआ-
उत्तरामचरित+अण् (अ)
'लुबाख्यायिभ्यो बहुलम्' वार्तिक से 'अ' का लोप होकर 'उत्तररामचरिम्' बना।
अर्थात् जिसमें राम के जीवन के उत्तरार्द्ध की घटनाओं का वर्णन है, ऐसा नाटक।
2. उत्तरं रामचरितं यस्मिन् तत् **(बहुव्रीहि समास)**
अर्थात् जिसमें उत्तरकालीन रामचरित का वर्णन है।

उत्तररामचरितम्- बिन्दुवार अध्ययन

- 'उत्तररामचरितम्' के रचयिता हैं? **- भवभूति**
- उत्तररामचरितम् में अङ्क की गिनती है **- 7**
- 'करुणरस' प्रधान नाटक है **- उत्तररामचरितम्**
- 'उत्तररामचरितम्' में पात्रों की संख्या है **- 30 (तीस)**
- गर्भाङ्क इस नाटक में है **- उत्तररामचरितम्**
- 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में कुल कितने श्लोक हैं? **- 48**
- विदूषक रहित रचना है? **- उत्तररामचरितम्**
- भवभूति का सम्बन्ध है? **- उत्तररामचरितम् से**
- भवभूति का उत्कर्ष किस नाटक में है?**-उत्तररामचरितम् में**
- छाया अङ्क का सम्बन्ध किस नाटक से है- **उत्तररामचरिते**
- उत्तररामचरितम् नाटक रामायण के- **उत्तरार्द्ध पर आधारित है।**
- उत्तररामचरितम् नाटक का मुख्य रस है **- करुणः**
- भवभूति की मुख्यनाट्यकृति है **- उत्तररामचरितम्**
- महाकवि भवभूति किस रस के प्रयोग में सिद्धहस्त हैं? **- करुण रस**
- 'उत्तररामचरितम्' में किस पात्र की भूमिका नगण्य है? **- विदूषक की**
- उत्तररामचरिते 'पदवाक्यप्रमाणज्ञो भवभूतिर्नाम जतुकर्णीपुत्रः' इति केनोक्तम्? **- सूत्रधारेण**
- उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में कवि की मौलिक कल्पना है? **- छाया-सीता व राम का दण्डकारण्य में पुनरागमन**
- छाया-सीता के साथ दण्डकारण्य में आए राम का दर्शन करने वाला दूसरा पात्र है **- तमसा**
- अस्मिन्नाटके अन्तर्नाटकं विद्यते? **- उत्तररामचरिते**
- गर्भाङ्कस्य योजना केन नाटककारेण कृता? **- भवभूतिना**
- उत्तररामचरितं .... प्रयुक्तं भवतीति सूत्रधारो विज्ञापयति **- कालप्रियानाथस्य यात्रायाम्**
- उत्तररामचरितस्य प्रथमाङ्कः उच्यते? **- चित्रदर्शनम्**
- 'चित्रदर्शनम्' इत्याख्यः अङ्कः कस्मिन् नाटके वर्तते? **- उत्तररामचरिते**
- 'उत्तररामचरितम्' में लवकुश के जन्म की किस वर्षगाँठ का वर्णन है? **- बारहवीं**
- 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क का प्रारम्भ किससे होता है? **- विष्कम्भक**
- 'उत्तररामचरितम्' नाटक का मङ्गलाचरण किस छन्द में है? **- अनुष्टुप्**
- 'उत्तररामचरितम्' के मङ्गलाचरण में किसकी वन्दना की गयी है? **- कवि तथा वाणी**
- 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में राम किससे अपनी व्यथा का वर्णन करते हैं? **- वासन्ती से**
- दुबारा दण्डकारण्य मे आये हुये राम के साथ किस पात्र को भवभूति ने तृतीय अङ्क में वर्णित किया है? **- वासन्ती को**
- 'उत्तररामचरितम्' में वर्णित तमसा और मुरला हैं? **- दो नदियाँ**
- उत्तररामचरितम् की कथावस्तु प्रारम्भ होती है? **- राम द्वारा सीता के निर्वासन से**
- 'छायाङ्क' उत्तररामचरितम् का कौन-सा अङ्क है? - **तृतीयः**
- 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में दो पात्रों के परस्पर संवाद में नाटकीय तत्त्वों का परिचय मिलता है–ये दो पात्र हैं **-तमसा और मुरला**
- कालप्रियानाथस्य यात्रायामभिनीतम् **- उत्तररामचरितम्**
- उत्तररामचरिते कः रसः **- करुणविप्रलम्भशृङ्गारः**
- सीता राम को कितने वर्षों के अन्तराल पर देखती हैं?**-बारह वर्ष**
- 'उत्तररामचरित' के तृतीय अङ्क में घटनास्थल है? - **पञ्चवटी**
- 'उत्तररामचरितम्' में सीता की सखी है? **- वासन्ती**
- ऋषि अगस्त्य की पत्नी है? **- लोपामुद्रा**
- रामचन्द्र 'छायासीता' को क्यों नहीं देख पाते? **- सीता को दिये गये भागीरथी के आशीर्वाद की वजह से।**
- 'छायाङ्क' का मुख्य कथानक है **- राम-सीता पुनर्मिलन**
- दण्डकारण्य मे राम कितने वर्ष बाद दुबारा आए थे? **- बारह वर्ष बाद**
- 'उत्तररामचरितम्' के तृतीयाङ्क में किस नदी का उल्लेख है? - **गोदावरी**
- रामचन्द्र जी दुबारा दण्डकारण्य किसलिए गये थे? **- तपस्या करते हुए शम्बूक को दण्ड देने के लिए**
- मूर्च्छित राम को चेतना कैसे मिली? **- सीता के कर स्पर्श से**
- कौन-सा रस विवर्त प्राप्त कर लेता है? **- करुण**
- 'उत्तररामचरितम्' नाटक में वर्णित वासन्ती है? **- सीता की सखी**
- 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क को छायाङ्क कहते हैं? क्योंकि **- मञ्च पर उपस्थित सीता राम को नहीं दिखाई देती।**
- 'उत्तररामचरितम्' में किससे कुश एवं लव के जन्म का रहस्योद्घाटन होता है? **- विष्कम्भक द्वारा**
- 'प्रत्युप्तस्येव दयिते तृष्णादीर्घस्य चक्षुषः। मर्मच्छेदोपमैर्यत्नैः सन्निकर्षो निरुध्यते।।' इस श्लोक के 'प्रत्युप्तस्येव' इस पद में अलङ्कार है? **- उत्प्रेक्षा**

- ''आश्च्योतनं नु हरिचन्दनपल्लवानाम्'' में 'नु' किस अलङ्कार का वाचक है? **- सन्देह**
- अगस्त्याश्रम में राम के रहने के लिए पर्णकुटी का निर्माण किसने किया था? **- लक्ष्मण**
- 'उत्तररामचरितम्' में राम किस कोटि के नायक हैं? **- धीरोदात्त**
- सीता परित्याग के बाद पुनः राम और सीता का मिलन वर्णित है **- उत्तररामचरितम् में**
- 'उत्तररामचरितम्' में किस काल के समाज एवं संस्कृति का वर्णन है? **- रामायणकालीन**
- 'आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा' इत्यस्ति? **- उत्तररामचरिते**
- ''भवभूतिमहाकवेरिमां निरर्गलतरङ्गिणी'' इति वदन्ति **- शिखरिणी**
- ''वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि'' इत्यत्र किं छन्दः? **- अनुष्टुप्**
- 'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि' इति केनोक्तम्? **- भवभूतिना**
- छाया-सीता इसमें आती है? **- उत्तररामचरितम्**
- छायाङ्क .... में है? **- उत्तररामचरितम्**
- अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात्।
  आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते।।
  इस श्लोक में किसका महत्त्व प्रतिपादित है?**- पुत्र का महत्त्व**
- तमसा और मुरला दोनों नदियाँ किस काव्य की पात्र हैं? **- उत्तररामचरितम्**
- उत्तररामचरिते भवभूतिना कस्मिन् अङ्के भरतस्य उल्लेखः कृतः? **- चतुर्थे**
- उत्तररामचरिते शम्बूकमुनिः कतमं लोकं प्राप्नोति **- वैराजम्**
- उत्तररामचरितस्य उपजीव्यो ग्रन्थः कः अस्ति?**-वाल्मीकिरामायणम्**
- उत्तररामचरिते कतमः अङ्कः 'गर्भाङ्कः' इति नाम्ना प्रसिद्धः **- सप्तमोऽङ्कः**
- 'दिष्ट्याऽपरिहीनधर्मः खलु स राजा' संवादेन भवभूतिः परिचाययति **- श्रीरामम्**
- भागीरथी 'उत्तररामचरितम्' में किसकी पूजा करने के बहाने सीता को लाती है? **- सूर्य**
- 'उत्तररामचरितम्' में अदृश्यरूप में सीता किसके साथ पञ्चवटी में आती हैं? **- गंगा**
- करुण के रस-राजत्व की प्रतिष्ठापना किस ग्रन्थ द्वारा की गई? **- उत्तररामचरितम्**
- 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क का सम्बन्ध किससे है? **- पञ्चवटी से**
- शान्ता थी **- दशरथ की पुत्री**
- 'सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति' का अर्थ है - **सज्जनों का सज्जनों के साथ मिलन बड़े पुण्य से होता है।**
- ''प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति'' यह उक्ति किससे सम्बन्धित है? **- उत्तररामचरितम्**
- ''गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः'' सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है? **- उत्तररामचरितम्**
- ''वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे'' इत्युक्तिः कस्मिन् नाटके आयाति? **- उत्तररामचरिते**
- ''एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्'' इयमुक्तिः कुत्रोपलभ्यते **- उत्तररामचरितम्**
- ''तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः'' यह उक्ति किसे लक्ष्य करके कही गयी है **- सीता**
- ''दिष्ट्या अपरिहीनधर्मः खलु स राजा'' उक्तिरियम् उत्तररामचरिते वर्तते **- सीतायाः**
- 'एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्' उक्तिरियम् उत्तररामचरितेऽस्ति? **- तमसायाः**
- 'ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति''– यह सूक्ति किस कवि की है? **- भवभूतेः**
- ''अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः'', **- भवभूति ने राम के करुण** यह किस कवि ने और किस सन्दर्भ में कहा है?**-रस वर्णन में**
- ''स्नपयति हृदयेशं स्नेहनिष्यन्दिनी ते, धवलमधुरमुग्धा दुग्धकुल्येव दृष्टिः'' उपर्युक्त पद्यांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है? - **उत्तररामचरितम् से**
- 'तोयस्येवाप्रतिहतरयः सैकतं सेतुमोघः'' श्लोकांश है? **- उत्तररामचरितम् से**
- ''करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी'' यह कथन किसका है? **- तमसा का**
- 'ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः'' यह कथन है **- मुरला का**
- ''अविदितगतयामा रात्रिरेव व्यरंसीत्'' उत्तररामचरित में यह किसकी उक्ति है? **- राम की**
- ''ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति'' यह वाक्यांश कहाँ से उद्धृत है? **-उत्तररामचरित से**
- 'शुचिः बिम्बग्राहे मणिः न मृदादयः' उत्तररामचरितस्य वाक्यमिदं किं सूचयति?**- प्राज्ञजडक्षत्रप्रभेदम्**
- 'भवभूतिर्विशिष्यते'' यह उक्ति किस नाटक के बारे में है?- **उत्तररामचरितम्**
- 'करुणस्य मूर्तिरथवा' यह उक्ति किसके बारे में है? **- सीता**
- ''किसलयमिव मुग्धं बन्धनाद् विप्रलूनं हृदयकमलशोषी दारुणो दीर्घशोकः'' प्रस्तुत श्लोक किससे उद्धृत है **- उत्तररामचरितम्**
- ''शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते'' उक्ति है **- उत्तररामचरितम्**
- ''अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम्'' कथन किसका है **- वासन्ती का**
- ''सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति'' यह किस नाट्यग्रन्थ से सम्बद्ध है **- उत्तररामचरितम्**
- ''अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्'' इसका सम्बन्ध है **- उत्तररामचरितम् से**

- ''करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी'' इदं वर्णनं कस्मिन् काव्येऽस्ति? - **उत्तररामचरितम्**
- ''रहस्यं साधूनामनुपधि विशुद्धं विजयते'' जिस कवि की उक्ति है, वह हैं - **भवभूति**
- ''एको रसः करुण एव'' यह कथन है - **भवभूति**
- ''वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे'' उत्तररामचरिते कस्य संवादोऽस्ति? - **आत्रेय्याः**
- ''वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि'' पद्यांशोऽयं कस्मिन् नाटके आयाति? - **उत्तररामचरिते**
- 'पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः' उत्तररामचरिते उक्तिरियं भवति? - **मुरलायाः**
- ''एको रसः करुण एव'' यह उक्ति उत्तररामचरितम् के किस अङ्क से सम्बन्धित है- **तृतीय**
- 'पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः'' किस कवि से सम्बद्ध है? - **भवभूति**
- ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति'' के वक्ता हैं - **राम**
- 'पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया' में 'पूरोत्पीडे' शब्द का अर्थ है - **जलवृद्धि**
- ''अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात् आनन्दग्रन्थि रेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते''–यहाँ 'अपत्यम्' शब्द का अर्थ है? - **सन्तान**
- 'पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया' से क्या तात्पर्य है - **तालाब के अधिक भर जाने पर जल को बाहर बहाना ही एकमात्र संरक्षण उपाय होता है।**
- 'लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति'–इति कस्मिन्नाटके वर्ण्यते - **उत्तररामचरिते**
- प्रियप्रायावृत्तिर्विनयमधुरो वाचि नियमः ... उक्तिः? -**तापस्याः**
- 'विपाक' शब्द का अर्थ है? - **दुरवस्था**
- 'अमरसिन्धु' है? - **गङ्गा**
- 'पौलस्त्यस्य जटायुषा विघटितः' श्लोक में 'पौलस्त्यस्य' से तात्पर्य है? - **रावण से**
- 'पुटपाक' का अभिप्राय है? - **औषधि पकाने का एक विशिष्ट ढंग**
- 'प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य' यहाँ 'प्रसवः' शब्द का अर्थ है? - **सन्तान**
- 'त्वं जीवितम्' का अर्थ है? - **तुम जीवन हो**
- 'नीरन्ध्रबालकदली' में 'नीरन्ध्र' पद का अर्थ है - **सघन**
- 'वधूद्वितीय' का अर्थ है - **प्रिया के साथ**
- 'कल्याणि! सञ्जीवय जगत्पतिम्' इस पद्यांश में 'जगत्पतिम्' की व्यञ्जना है? - **राम के लिए**
- 'रात्रिरेव व्यरंसीत्'। कस्मिन् नाटके इदं दृश्यते -**उत्तररामचरिते**
- 'सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति' – इदं कथनम् उत्तररामचरिते नाटकेऽस्ति - **वनदेवतायाः**
- उत्तररामचरितम् में तमसा और मुरला हैं - **नदी विशेषाधिष्ठात्री देविया**

वस्तुनिष्ठप्रश्नाः

1. ''एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्'' यह कथन किसका है–
(A) भास का (B) भारवि का
(C) भवभूति का (D) भर्तृहरि का

2. ''स च कुलपतिराद्यश्छन्दसां यः प्रयोक्ता'' में 'कुलपति' पद से किसका निर्देश किया गया है–
(A) भवभूति का (B) वशिष्ठ का
(C) अगस्त्य का (D) वाल्मीकि का

3. उत्तररामचरितम् में कुल श्लोक संख्या मानी जाती है–
(A) 244 (B) 266
(C) 256 (D) 334

4. अनुष्टुप् के बाद भवभूति का प्रिय छन्द है–
(A) शिखरिणी (B) मन्दाक्रान्ता
(C) शार्दूलविक्रीडितम् (D) मालिनी

5. वशिष्ठ की पत्नी है–
(A) लोपामुद्रा (B) सुनयना
(C) भागीरथी (D) अरुन्धती

6. 'अमरसिन्धुः' पद का क्या अर्थ है–
(A) अमृतसमुद्रः (B) भागीरथी
(C) यमुना (D) पृथिवी

7. उत्तररामचरितम् का छाया अङ्क है–
(A) प्रथम अङ्क (B) सप्तम अङ्क
(C) चतुर्थ अङ्क (D) तृतीय अङ्क

8. 'यथा कार्यहानिर्न भवति तथा कार्यम्' यह कथन किसका है–
(A) आत्रेयी (B) तमसा
(C) मुरला (D) वासन्ती

9. 'हरिणीदृशः' पद में विभक्ति/वचन है–
(A) प्रथमा एक. (B) द्वितीया द्विव.
(C) षष्ठी एक. (D) चतुर्थी एक.

10. ''अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम्'' में छन्द है–
(A) उपजाति (B) द्रुतविलम्बित
(C) इन्द्रवज्रा (D) वंशस्थ

11. पञ्चवटी के कदम्बवृक्ष को किसने रोपित किया था–
(A) वासन्ती ने (B) सीता ने
(C) राम ने (D) तमसा ने

12. अपनी प्रिया को मनाने के लिए नलिनीपत्ररूपी छाते को किसने लगाया–
(A) मयूर ने (B) राम ने
(C) गज ने (D) भवभूति ने

13. उत्तररामचरिते 'वारणानां विजेता' कः अस्ति–
(A) रामः (B) गजः
(C) जटायुः (D) रावणः

14. राम का 'करुणरस' है–
(A) पुटपाकवत् (B) हर्षशोकवत्
(C) स्नेहवत् (D) चञ्चलवत्

15. भवभूति के पिता का नाम है–
(A) भट्टगोपाल (B) श्रीकण्ठ
(C) नीलकण्ठ (D) ज्ञाननिधि

16. भवभूति के आश्रयदाता हैं–
(A) यशोवर्मा (B) राजवर्मा
(C) हर्षवर्धन (D) मित्रवर्मा

17. भवभूति के कितने नाटक उपलब्ध हैं–
(A) चार (B) तीन
(C) दो (D) तेरह

18. भवभूति का एक प्रसिद्ध दार्शनिक नाम है–
(A) उम्बेक (B) ज्ञाननिधि
(C) भट्टगोपाल (D) यशोवर्मा

19. भवभूति का गोत्र है–
(A) वत्स (B) काश्यप
(C) गौतम (D) भारद्वाज

20. लोपामुद्रा पत्नी है–
(A) वशिष्ठ की (B) अगस्त्य की
(C) ऋष्यश्रृङ्ग की (D) वाल्मीकि की

21. उत्तररामचरितम् में नदी के रूप में वर्णन नहीं है–
(A) तमसा का (B) मुरला का
(C) वासन्ती का (D) भागीरथी का

22. ''पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः'' यह कथन है–
(A) तमसा का (B) मुरला का
(C) वासन्ती का (D) सीता का

23. लव और कुश किसके आश्रम में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं–
(A) वशिष्ठ के (B) अगस्त्य के
(C) विश्वामित्र के (D) वाल्मीकि के

24. सीता को अदृश्य रहने का वरदान किसने दिया–
(A) भागीरथी ने (B) तमसा ने
(C) लोपामुद्रा ने (D) इनमें से सभी ने

25. ''करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी'' किसने किसके लिए कहा–
(A) मुरला ने सीता के लिए
(B) तमसा ने जानकी के लिए
(C) वासन्ती ने वैदेही के लिए
(D) सीता ने तमसा के लिए

26. राम दण्डकारण्य में क्यों आए हैं–
(A) शम्बूक के वध हेतु (B) सीता से मिलने हेतु
(C) अगस्त्य के दर्शन हेतु (D) पञ्चवटी में घूमने हेतु

27. कुश और लव की कौन सी वर्षगाँठ मनायी जा रही है–
(A) दसवीं वर्षगाँठ (B) बारहवीं वर्षगाँठ
(C) छठवीं वर्षगाँठ (D) नौवीं वर्षगाँठ

28. ''स्पर्शः पुरा परिचितो नियतं स एव'' कथन है–
(A) राम का (B) सीता का
(C) वासन्ती का (D) तमसा का

29. ''तटस्थं नैराश्यादपि च कलुषं विप्रियवशात्'' इसमें छन्द है–
(A) मन्दाक्रान्ता (B) शिखरिणी
(C) हरिणी (D) शार्दूलविक्रीडितम्

30. 'उल्लापाः' पद का अर्थ है–
(A) उल्लास (B) मदमस्त गज
(C) विलाप (D) मयूर

31. पञ्चवटी में राम के साथ साक्षात् वार्तालाप करती है–
(A) तमसा (B) वनदेवी वासन्ती
(C) प्रिया सीता (D) मुरला

32. लोपामुद्रा गोदावरी से अपना संदेश कहने को किसे भेजती हैं-
(A) मुरला को (B) तमसा को
(C) भागीरथी को (D) वासन्ती को

33. सीता के कर्णमूल से लवलीलता के पत्ते को कौन खींचता था–
(A) करिशावक (B) मयूर
(C) मृग (D) इनमें से कोई नहीं।

34. व्याकृष्टः में प्रकृति-प्रत्यय है–
(A) व्या+कृष्+क्त (B) वि+आङ्+कृष्+क्त
(C) वि+आङ्+कृ+क्त (D) वि+या+कृ+क्त

35. 'आतपत्र' पद का अर्थ है–
(A) नलिनी का पत्र (B) छाता
(C) केले का पत्ता (D) आधा पत्ता

36. 'अनराल' पद का शब्दार्थ है–
(A) सीधा (B) टेढ़ा
(C) कमल (D) नलिनीनाल

37. 'ईदृश्यस्मि' पद का सन्धिविच्छेद होगा–
(A) ईदृश्+अस्मि (B) ईदृशी+अस्मि
(C) ईदृश+अस्मि (D) ईदृश्+यस्मि

38. 'तावपि' पद का सन्धिविच्छेद होगा–
(A) तो+अपि (B) ताव+अपि
(C) तौ+अपि (D) ताव्+अपि

39. 'पति-पत्नी' के अर्थ में अशुद्ध पद है–
(A) दम्पती (B) जम्पती
(C) जायापती (D) इनमें से कोई नहीं।

40. ''प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य'' किसने, किससे कहा–
(A) सीता ने तमसा से (B) तमसा ने सीता से
(C) वासन्ती ने राम से (D) तमसा ने मुरला से

41. सीता द्वारा पालित मोर अपनी पत्नी के साथ कहाँ बैठा है–
(A) कदम्ब में (B) पहाड़ में
(C) गोदावरी जल में (D) लताकुञ्ज में

42. 'नीरन्ध्र' पद का अर्थ है–
(A) काला (B) घना
(C) जल (D) बादल

43. 'अदात्' में धातु एवं लकार का सही विकल्प है–
(A) दा+लङ्०+प्र०पु० एक.
(B) दा+लुङ्+प्र०पु० बहु.
(C) अद्+लट्+प्र०पु० एक.
(D) दा+लुङ्+प्र०पु० एक.

44. ''स्नपयति हृदयेशं स्नेहनिष्यन्दिनी ते'' यहाँ 'हृदयेश' पद से निर्देश है–
(A) सीता का (B) राम का
(C) हृदय का (D) चित्त का

45. ''ददतु तरवः पुष्पैरर्घ्यं फलैश्च मधुश्च्युतः'' यहाँ कौन किसका स्वागत करना चाह रहा है–
(A) राम, वासन्ती का (B) तमसा, राम का
(C) वासन्ती, राम का (D) अगस्त्य, वाल्मीकि का

46. 'शकुनि' पद का अर्थ है–
(A) शगुन (शुभसमय) (B) पक्षी
(C) मृग (D) वृक्ष

47. 'समाश्वसिहि' पद की व्याकरणात्मक प्रकृति है–
(A) सम+आ+श्वास+लोट् मु०पु०एक.
(B) समा+श्वस्+लोट्+म०पु० द्विव.
(C) सम्+आङ्+श्वस्+लोट् म०पु० एक.
(D) सम+आ+श्वास+लट् म०पु० एक.

48. सीता के परित्याग रूपी वनवास को कितने दिन बीत गए हैं–
(A) 12 माह (B) 14 वर्ष
(C) 12 वर्ष (D) 16 वर्ष

49. ''किमभवद् विपिने हरिणीदृशः'' यहाँ 'हरिणीदृशः' पद से किसका निर्देश है–
(A) सीता का (B) हरिणी का
(C) कमललता का (D) नेत्रों का

50. 'उपालम्भः' पद का अर्थ नही है–
(A) ताना मारना (B) शिकायत करना
(C) उलाहना देना (D) उधार देना

51. 'कुरङ्ग' पद का अर्थ है–
(A) मृग (B) पक्षी
(C) वनदेवी (D) वृक्ष

52. भवभूति की अन्तिम तथा सर्वश्रेष्ठ रचना मानी जाती है–
(A) महावीरचरितम् (B) उत्तररामचरितम्
(C) मालतीमाधवम् (D) लवकुशचरितम्

53. उत्तररामचरितम् का प्रधान रस है–
(A) वीररस (B) हास्यरस
(C) करुणरस (D) रौद्ररस

54. ''भवभूतेः शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी'' यह कथन किसका है–
(A) क्षेमेन्द्र का (B) कालिदास का
(C) बाण का (D) भवभूति का

55. सीता का ज्येष्ठ पुत्र है–
(A) लव (B) कुश
(C) जटायु (D) कुरङ्ग

56. उत्तररामचरितम् में राम की बहन के रूप में उल्लेख है–
(A) मुरला का (B) आत्रेयी का
(C) वासन्ती का (D) शान्ता का

57. ''त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम्'' इस पंक्ति में अलङ्कार है–
(A) रूपक (B) उपमा
(C) उत्प्रेक्षा (D) दीपक

58. ''प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति'' में अलङ्कार है–
(A) उत्प्रेक्षा (B) उपमा
(C) रूपक (D) विभावना

59. 'सोढः' में प्रकृति/प्रत्यय है–
(A) सूङ्+णञ् (B) सह्+क्त
(C) श्रु+ऊढः (D) सृज+क्त

60. 'रयः' पद का अर्थ है–
(A) वेग (B) रेत
(C) भूमि (D) मोर

61. 'काकली' पद का अर्थ है–
(A) तोता (B) तोतली बोली
(C) मयूर (D) घुँघराले बाल

62. 'प्रवान्तु' में धातु एवं लकार है–
(A) प्र+√वा धातु+लोट्+प्र0पु0 एक.
(B) प्र+√वा धातु+लोट् प्र0पु0 बहु.
(C) √प्रवा धातु + लोट् म0पु0 एक.
(D) प्र+√वह् + लोट् + प्र0पु0 बहु.

63. 'पुष्' धातु का लङ्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन में रूप बनेगा–
(A) अपोष्यत् (B) अपूष्यत्
(C) अपुष्यत् (D) अपोष्यति

64. ''शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते'' इसमें किस वाच्य का प्रयोग है–
(A) कर्मवाच्य (B) कर्तृवाच्य
(C) भाववाच्य (D) इनमें से कोई नहीं

65. 'वीक्ष्य' पद में प्रत्यय है–
(A) क्तवतु (B) ल्यप्
(C) यत् (D) ष्यञ्

66. 'कुड्मल' पद का शब्दार्थ है–
(A) कमल (B) कली
(C) समान (D) सुन्दर

67. ''विष्वङ्मोहः स्थगयति कथम्'' में 'विष्वक्' पद का अर्थ है–
(A) विशेष (B) विश्वास
(C) चारों ओर से (D) हृदय

68. ''आलिम्पन्नमृतमयैरिव प्रलेपैः'' में 'अमृतमय' पद में प्रत्यय है–
(A) मयट् (B) म्युट्
(C) यक् (D) मुक्

69. ''करान्मम स्विद्यतः स्विद्यन्'' के 'स्विद्यतः' पद में विभक्ति है–
(A) षष्ठी (B) द्वितीया
(C) प्रथमा (D) पञ्चमी

70. ''कदम्बयष्टिः स्फुटकोरकेव'' में अलङ्कार है–
(A) विभावना (B) विशेषोक्ति
(C) उपमा (D) उत्प्रेक्षा

71. ''द्यामभ्युदस्थादरिः'' यहाँ 'अभ्युदस्थात्' पद में लकार है–
(A) लुङ् (B) लङ्
(D) विधिलिङ् (D) लोट्

72. 'पत्रिणाम्' पद का अर्थ है–
(A) पत्राणाम् (B) खगानाम्
(C) शराणाम् (D) पिशाचानाम्

73. ''अहो ! उत्खातितमिदानी मे परित्यागशल्यम्'' यह कथन किसका है–
(A) सीता का (B) वासन्ती का
(C) तमसा का (D) भागीरथी का

74. 'वर्षर्द्धिः' पद में सन्धि है–
(A) दीर्घ (B) व्यञ्जन
(C) यण् (D) गुण

75. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में कुल श्लोक हैं–
(A) 45 (B) 46
(C) 48 (D) 49

76. भवभूति का निवासस्थान माना जाता है–
(A) पद्मपुर (B) धारानगरी
(C) जतुकर्णीनगर (D) अचलपुर

77. ''पदवाक्यप्रमाणज्ञः'' कहा जाता है–
(A) भट्टि को (B) भारवि को
(C) भवभूति को (D) भर्तृहरि को

78. भवभूति के गुरु का नाम है–
(A) ध्याननिधि (B) ज्ञाननिधि
(C) भट्टगोपाल (D) नीलकण्ठ

79. 'जतुकर्णी' नाम है–
(A) श्रीकण्ठ की माता का (B) भवभूति की माँ का
(C) नीलकण्ठ की पत्नी का (D) उपर्युक्त सभी

80. कुमारिलभट्ट के शिष्य और मीमांसादर्शन के विद्वान् माने जाते हैं–
(A) भवभूति (B) भर्तृहरि
(C) भारवि (D) भास

81. उत्तररामचरितम् के टीकाकार घनश्याम, महाकवि भवभूति को मानते हैं–
(A) तमिल (B) द्राविड
(C) उत्तरभारतीय (D) महाराष्ट्रियन

82. उत्तररामचरितम् में प्रयुक्त 'कालप्रियानाथ' पद का अर्थ है–
(A) काल (यमराज) (B) समय के पाबंद
(C) शिव (D) महाकवि

83. भवभूति का अनुमानित समय माना जाता है–
(A) 650 ई0 से 750 ई0 तक
(B) 750 ई0 से 850 ई0 तक
(C) 650 ई0 पू0 से 750 ई0 तक
(D) 850 ई0 से 950 ई0 तक

84. उत्तररामचरितम् में अङ्क हैं–
(A) 6 (B) 7
(C) 8 (D) 5

85. उत्तररामचरितम् का मूल आधार है–
(A) वाल्मीकीयरामायण (B) तुलसीरामायण
(C) भावार्थरामायण (D) महाभारतम्

86. भवभूति मूलतः किस रीति के कवि माने जाते हैं–
(A) वैदर्भीरीति (B) पाञ्चालीरीति
(C) गौडीरीति (D) उपर्युक्त सभी

87. उत्तररामचरितम् की सम्पूर्ण घटना कितने वर्षों की है–
(A) 14 वर्ष (B) 18 वर्ष
(C) 7 वर्ष (D) 12 वर्ष

88. उत्तररामचरितम् के किस अङ्क में राम-सीता का मिलन होता है–
(A) तृतीय अङ्क में (B) चतुर्थ अङ्क में
(C) षष्ठ अङ्क में (D) सप्तम अङ्क में

89. 'गर्भनाटक' की योजना उत्तररामचरितम् के किस अङ्क में है–
(A) सप्तम अङ्क में (B) प्रथम अङ्क में
(C) तृतीय अङ्क में (D) चतुर्थ अङ्क में

90. विदूषक रहित रचना मानी जाती है–
(A) शाकुन्तलम् (B) स्वप्नवासवदत्तम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) इनमें से कोई नहीं

91. उत्तररामचरितम् का पात्र है–
(A) सौधातकि (B) दण्डायन
(C) दुर्मुख (D) उपर्युक्त सभी

92. करुणरस का सर्वोत्तम कवि माना जाता है–
(A) भास को (B) भवभूति को
(C) कालिदास को (D) माघ को

93. चन्द्रकेतु किसका पुत्र है–
(A) लक्ष्मण का (B) राम का
(C) वशिष्ठ का (D) ऋष्यशृङ्ग का

94. राम ने स्वर्णमयी सीता के साथ कौन सा यज्ञ किया–
(A) वाजपेययज्ञ (B) अश्वमेधयज्ञ
(C) पञ्चमहायज्ञ (D) दशपौर्णमासयज्ञ

95. उत्तररामचरितम् के नायक और नायिका हैं–
(A) राम-वासन्ती (B) लव-आत्रेयी
(C) राम-सीता (D) चन्द्रकेतु-तमसा

96. ''ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति'' किसकी उक्ति है–
(A) राम की (B) सीता की
(C) तमसा की (D) वाल्मीकि की

97. सीताविषयक लोकापवाद राम से किसने बताया–
(A) वाल्मीकि ने (B) वशिष्ठ ने
(C) अष्टावक्र ने (D) दुर्मुख ने

98. ''गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः'' यह सूक्ति किस नाटक से सम्बन्धित है–
(A) उत्तरसीताचरितम् (B) जानकीजीवनम्
(C) उत्तररामचरितम् (D) सीताचरितम्

99. उत्तररामचरितम् के प्रथम अङ्क का नाम है–
(A) छाया अङ्क (B) चित्रदर्शन अङ्क
(C) गर्भाङ्क (D) पञ्चवटीप्रवेश अङ्क

100. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क का प्रारम्भ होता है–
(A) तमसा और मुरला के वार्तालाप से
(B) तमसा और सीता के वार्तालाप से
(C) राम और वासन्ती के मिलने से
(D) गोदावरी और भागीरथी के वार्तालाप से

उत्तरमाला

1. (C)	2. (D)	3. (C)	4. (A)	5. (D)	6. (B)	7. (D)	8. (D)	9. (C)	10. (B)	11. (B)	12. (C)
13. (B)	14. (A)	15. (C)	16. (A)	17. (B)	18. (A)	19. (B)	20. (B)	21. (C)	22. (B)	23. (D)	24. (A)
25. (B)	26. (A)	27. (B)	28. (A)	29. (B)	30. (C)	31. (B)	32. (A)	33. (A)	34. (B)	35. (B)	36. (A)
37. (B)	38. (C)	39. (D)	40. (B)	41. (A)	42. (B)	43. (D)	44. (B)	45. (C)	46. (B)	47. (C)	48. (C)
49. (A)	50. (D)	51. (A)	52. (B)	53. (C)	54. (A)	55. (B)	56. (D)	57. (A)	58. (B)	59. (B)	60. (A)
61. (B)	62. (B)	63. (C)	64. (A)	65. (B)	66. (B)	67. (C)	68. (A)	69. (D)	70. (C)	71. (A)	72. (C)
73. (A)	74. (D)	75. (C)	76. (A)	77. (C)	78. (B)	79. (D)	80. (A)	81. (B)	82. (C)	83. (A)	84. (B)
85. (A)	86. (C)	87. (D)	88. (D)	89. (A)	90. (C)	91. (D)	92. (B)	93. (A)	94. (B)	95. (C)	96. (A)
97. (D)	98. (C)	99. (B)	100. (A)								